केरल ज्योति

मई 2026

ISSN 2320-9976
Reference Resource Journal

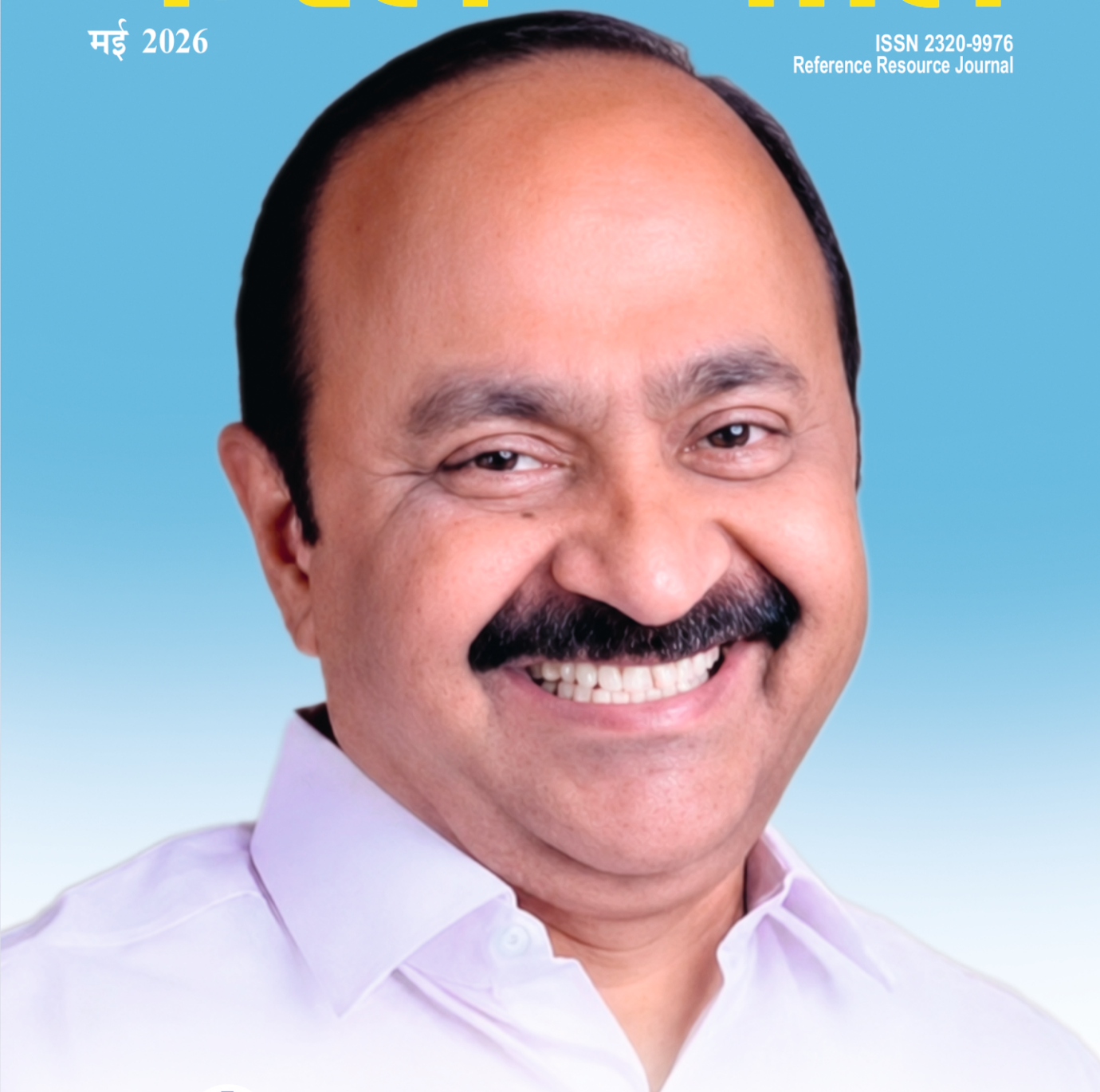

ISO 9001: 2015

केरल हिंदी प्रचार सभा

केरल राज्य के मुख्यमंत्री श्री.वी.डी.सतीशन को
हार्दिक बधाईयाँ

श्रीनारायण गुरु मुक्त विश्वविद्यालय के अध्येता सहायक केंद्र केरल हिंदी प्रचार सभा में आयोजित इंडक्शन कार्यक्रम का उद्घाटन तिरुवनन्तपुरम निगम के मेयर श्री.वी.वी.राजेश कर रहे हैं। साथ में दर्शित हैं सभा के मंत्री अधिवक्ता डॉ.मधु बी, अध्यक्ष श्री गोपकुमार एस आदि।

विविध दृश्य

केरलज्योति
केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

केरल हिंदी प्रचार सभा के संस्थापक
स्व. के वासुदेवन पिल्लै
पूर्व समीक्षा समिति
प्रो (डॉ) एन रवींद्रनाथ
डॉ के एम मालती
प्रो(डॉ) आर जयचन्द्रन
प्रो (डॉ) जयश्री एस आर
परामर्श मंडल
डॉ तंकमणि अम्मा एस
डॉ लता पी
डॉ रामचन्द्रन नायर जे
प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)
मुख्य संपादक
डॉ एम एस विनयचंद्रन
संपादक
डॉ रंजीत रविशैलम
संपादकीय मंडल
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)
सदानन्दन जी
मुरलीधरन पी पी
प्रो रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
डॉ नेलसन डी
प्रकाशन संयोजिका
अर्चना एस

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 63 दल : 2 अंक: **मई 2026**

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

एम.के.वेलायुधन नायर – स्मृति समारोह – **अधिवक्ता (डॉ) बी मधु** 6

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य – **प्रो.डी.तंकप्पन नायर (स्वः)** 7

दर्शन माला – **डॉ नेलसन डी** 9

महागुरु चट्टंबी स्वामिकळ् -
मूल : **डॉ (प्रोफ़) ए एम उण्णिकृष्णन,** अनुवाद : **डॉ प्रिया राणी पी एस** 11

पारिस्थितिक स्त्रीवाद का सशक्त दस्तावेज : सुगतकुमारी और
अनामिका की कविताएँ – **कृष्णवेणी आर** 13

'जुलूस' नाट्यरूपांतर की प्रासंगिकता : समकालीन संदर्भ में–**वीणा एस कुमार** 18

ट्रांसजेंडर–जीवन का खुला दस्तावेज़ :
'मैं पायल' और 'किन्नर कथा' उपन्यासों में – **पद्मकुमार पी के** 20

धूमिल की जनतांत्रिक दृष्टि – **डॉ भावना मल्होत्रा** 23

भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत – **डॉ अजय कुमार शर्मा** 27

आतंकवाद का बदलता चेहरा : अश्विनीकुमार दुबे की कहानी '
आतंकवादी के परिप्रेक्ष्य में – **बिन्सी बालचंद्रन** 33

'हिड़िंब' में अभिव्यक्त पर्यावरण और दलित चेतना
डॉ तेरेसा टिनसी टी जी 36

हिंदी की स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता का संघर्ष – **शिल्पा सुरेश पुल्लाट्टू** 39

प्यार (कविता) 42
मूल : शशी माविनमूड, अनुवाद : डॉ एम एस विनयचंद्रन

समकालीन मलयालम कहानियों में पर्यावरण चिंतन – **डॉ सुगता ए आर** 43

नीले गगन के राही (कविता) – **वैष्णवी ए** 47

मानस कैलास - **मूलः मंजु वेल्लायणि**
अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर , डॉ.रंजीत रविशैलम 48

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 50

साप्ताहिक अवकाश (लघुकथा) – **राजेंद्र परदेशी** 51

ज़िंदगी : एक लोलक
मूल : श्रीकुमारन तंपी, अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार 52

प्रश्नोत्तरी – **डॉ. रंजीत रविशैलम** 54

लेखकों से निवेदनः

• हिंदी और इतर भारतीय भाषाएँ, साहित्य, संस्कृति आदि पर लिखी गई उच्च स्तरीय मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ आमंत्रित हैं। • भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि पर आयोजित समारोहों, चर्चाओं, संगोष्ठियों के समाचारों का भी स्वागत है। इन समाचारों को प्रस्तुत करने वाले का नाम और पूरा पता भी लिख भेजें। • भारतीय भाषाओं से अनूदित कविता, कहानी भी भेजें। उनके साथ मूल लेखक से प्राप्त अधिकार पत्र भी प्रेषित करें। • प्राकाशनार्थ रचनाएँ **डी.टी.पी.** करके भेजें। कृपया कार्बन प्रति न भेजें। • स्वीकृत रचनाएँ यथासमय पत्रिका में प्रकाशित की जाएँगी। • आप ई-मेल द्वारा भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं। ई-मेल में Microsoft Word or Pagemaker फाइल में भेजिए। ई-मेल आईडी :khpsabha12@gmail.com • अपनी रचना के साथ पूरा पता (जिला, राज्य और पिनकोड सहित), लघु परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक, 'केरल ज्योति', केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम-695 014

सभा का मुख्यालय और उसकी गतिविधियाँ

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के वषुतक्काड में सभा का मुख्यालय स्थित है। सभा के मुख्य परिसर में सभा के संस्थापक मंत्री की पावन स्मृति में श्री वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिंदी ग्रंथालय, स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केंद्र, साहित्याचार्य महाविद्यालय, केंद्रीय हिंदी महाविद्यालय, टंकण और आशुलिपि संस्थान, परीक्षा भवन, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, राष्ट्रज्योति पब्लिशेर्स के प्रकाशन अधिकारी का कार्यालय, हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.एड) और केरल विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त शोध केंद्र हैं।

विज्ञापन दर (साधारण अंक)

	मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4 (रंगीन)	रु.2500.00	25,000.00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 (रंगीन)	रु.2000.00	20,000.00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.1000.00	10,000.00
साधारण पृष्ठ 1/2	रु.600.00	6,000.00
साधारण पृष्ठ 1/4	रु.350.00	3,500.00

एक प्रति का मूल्य रु. 40/- आजीवन चंदा : रु. 4000/- वार्षिक चंदा : रु. 400/-

A /c No. 57022786007 IFS Code : SBIN0070033
State Bank of India, Vazhuthacaud Branch

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, वषुतक्काडु, तिरुवनन्तपुरम-695 014.
दूरभाष:0471-2321378, 2329200, 2329459. फैक्स:0471-2329200 ई-मेल : khpsabha12@gmail.com

दूरभाष : 0471-2321378, 2329200, 2329459
फैक्स : 0471-2329459
मोबाईल: संपादक : 7898515222/ 9447657301

khpsabha12@gmail.com
www.keralahindipracharsabha.in

केरलज्योति
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
मई 2026

संपादकीय

केरलम में 'युनैइटट डेमोक्रेटिक फ्रन्ड' (यूडीएफ़) की विस्मयकारी जीत.....

केरलम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, असम आदि राज्यों और पोंडिचेरी (केन्द्र शासन प्रदेश) में चुनाव की फ़सल काटी गई; अपने-अपने हिस्से लेकर प्रत्येक दल के कार्यकर्ता लौट चले। भारत के चार प्रान्तों और एक केन्द्र शासित प्रदेश में जो चुनाव हुआ है, उसके परिणामों से यह विचार प्रबल निकल उठता है – 'मतदान के ज़रिए जिसकी कुर्सी खींचनी है, जनता खींच लेती है"।

जनतांत्रिक शासन व्यव्सथा में चुनाव का महत्व सर्वोपरि है। जनता जिसे सबक सिखाना चाहती है, उसे मतदान द्वारा सबक सिखाती है। चुनाव स्वेच्छाचारी राजनेताओं पर आम-जनता का एकमात्र हथियार है।

केरल में हर पाँच साल सत्ता बदलती रहती थी। लेकिन गत दस साल से वामपंथी सरकार चल रही थी। मौजूदा सरकार ही तीसरी बार भी सत्ता में लौट आएगी - यही उनका पूरा भरोसा रहा था। पिछली बार के ट्रेंड को एवं अपनी सकारात्मक विकास योजनाओं को ध्यान में रखकर ही ऐसा माना गया। हाट्रिक जीत की प्रतीक्षा रही उन्हें। गंगन चुंबी मोह का पाताल चुंबी पतन ही हुआ। वाम लोकतांत्रिक फ्रेंड के नेताओं के लिए यह चुनाव और अप्रत्याशित परिणाम, आत्मचिंतन एवं सुधारात्मक बदलाव का महत्वपूर्ण अवसर देकर गया है।

कॉग्रेज की अगुवाई में युनैइटेट डेमोक्रेटिक फ्रेन्ड ने लेफट डेमोक्रेटिक फ्रन्ड को असाधरण बहुमत से हरा दिया। वामपंथीय गंठबंधन का दयनीय अवसान तो हुआ। काँग्रेज़ - मुस्लीम लीग और अन्य लघु दल के सुसंगत गठबंधन ने वामपंथी सरकार का सफ़ाया किया। भारतीय जनता पार्टी के तीन विधायकों को केरल विधान सभा में पहुँचा देना, एक 'भावी असर' का दिशा संकेत है। 'भाजपा' के विधान सभा में पदार्पण ने केरल के चुनावी इतिहास में नया अध्याय लिख दिया है।

जनता की आशाओं, आशंकाओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति करने का प्रयास करना प्रत्येक चुने हुए जन-प्रतिनिधि का सहज दायित्व है। जनता उन्हें दायित्व के साथ चुनकर विधान सभा भेजती है। विपक्षियों को यह न भूलना चाहिए कि सरकार को चलाने में सत्ता-पक्ष की भाँति विपक्ष की अहं भूमिका है।

गत सरकार ने विकास और जन-क्षेम को जिस मुकाम पर छोड़ रखा है, उन्हें नई सरकार को आगे बढ़ाना है और उनकी सफ़ल पूर्ति करनी है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा की हार्दिक कामना है कि नई सरकार के सभी कार्यक्रम सुचारु रूप से चलें और जनता को उनका पूरा-पूरा लाभ मिलें।

हार्दिक अभिननंदन....।

डॉ. एम एस विनयचंद्रन
(मुख्य संपादक)

एम.के.वेलायुधन नायर स्मृति-समारोह.....

केरल हिंदी प्रचार सभा के पूर्व मंत्री एवं कर्मठ हिंदी सेवी स्वर्गीय एम.के.वेलायुधन नायर के 24वाँ स्मृति दिवस 14 अप्रैल 2026 को समुचित मनाया गया।

सभा के अध्यक्ष श्री.एस.गोपकुमार के सभापतित्व में एम.के.वेलायुधन नायर सभागार में समायोजित अनुस्मरण सम्मेलन का उद्घाटन नामी सामाजिक, साँस्कृतिक व राजनैतिक कार्यकर्ता **श्री.सी.पी.जोण** ने (पूर्व सदस्य, राज्य योजना समिति) किया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि केरल के हिंदी प्रचार-प्रसार कार्यक्षेत्र में वेलायुधन नायर की सेवाएँ अतुलनीय ज़रूर रहेगी। नायर जी ने अपनी खास कार्य शैली और कठिन प्रयत्न से केरल हिंदी प्रचार सभा को भारत भर की हिंदी प्रचार संस्थाओं की श्रेणी में एक अनुठा स्थान दिला दिया। वैज्ञानिक समूह में, सूचना-प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी भाषा की बहुत बड़ी लोकप्रियता विश्वव्यापी बनती जा रही है। ऑनलाईन शैक्षिक प्रणालियों के द्वारा केरल हिंदी प्रचार सभा में भी हिंदी भाषा पढ़न-पाठन की सुविधाएँ उपलब्ध कराने का सुझाव भी उन्होंने दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत त्रिभाषा पद्धति के कार्यान्वयन संबंधी ठोस विचार भी प्रकट किये गये।

सभा के मंत्री अधिवक्ता(डॉ)मधु.बी ने अपने भाषण में केरल हिंदी प्रचार सभा की ऐतिहासिक विकास यात्रा में स्व.एम.के.वेलायुधन नायर की देन पर संक्षिप्त भूमिका बता दी। सभा के छह मंजिले शानदार मकान का निर्माण कार्य, निजी ऑफसेट प्रेस की स्थापना एवं वर्तमान लोकप्रियता का मूल श्रेय स्वर्गीय नायर जी को ही है। नायर साहब कुशल संगठक और प्रभावी वक्ता रहे थे। हिंदी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद के 42वें अधिवेशन के राष्ट्रभाषा परिषद में अध्यक्ष रह चुके। वर्तमान एवं भविष्य की हिंदी सेवियों के लिए नायरजी की तपोनिष्ठ हिंदी सेवा मार्गदर्शक सिद्ध हो जाएगी।

श्री.एस.गोपकुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि हिंदी अध्ययन-अध्यापन का स्तर बढाने के लिए समय-समय पर पाठ्यक्रम नवीकरण, प्रचारक प्रशिक्षण कार्यशालाएँ, राज्य स्तरीय हिंदी युवजनोत्सव, साहित्यिक प्रतियोगिताएँ, 'केरल ज्योति' मुख-मासिक पत्रिका का प्रकाशन कार्य, हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन आदि स्व.वेलायुधन नायर साहब की सूझबूझ के ही परिणाम कहे जा सकते हैं। आपके सरल व्यक्तित्व की एक खास खूबी तो उनकी 'अतिथि-सत्कार-प्रियता' रही थी।

सभा के कोषाध्यक्ष श्री.जी.सदानंदन, आचार्य (बी.एड्) प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ.मधुबाला जयचंद्रन और केरल ज्योति के मुख्य संपादक डॉ. एम.एस. विनयचंद्रन ने भी अनुस्मरण भाषण प्रस्तुत कर स्मृति-सुमन अर्पित किए।

अधिवक्ता (डॉ) बी मधु
मंत्री, केरल हिंदी प्रचार सभा

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य

प्रो.डी.तंकप्पन नायर (स्वर्गीय)

दसवाँ सर्ग

दांपत्य

1. सन् अठारह सौ छासठ में रविवर्मा ने पूरी कर दी
अठारह साल की उम्र और उनका विवाह तय हुआ था मामा
राजराज वर्मा और अन्य परिवारवालों से सलाह मशविरा करके
और उसी साल में हुआ था विवाह धूमधाम से विधिवत् ।

2. मावेलिक्करा राजघराने की पूरुरुट्टाति रानी वधू बनी और
विवाह के अनन्तर रविवर्मा वधूगृह स्थित मावेलिक्करा और
तिरुवनन्तपुरम में रहते थे बारी-बारी से और सजीव थे चित्ररचना में
भी और स्वाभाविक था उनका कला जीवन थोड़ा -सा मंद होना।

3. रविवर्मा की संतत सहचारिणी थी तूलिका एवं विविध रंग थे
उनके मित्रमंडल और मावेलिक्करा के महल में सदा दीखते
थे उन्हें तूलिका के साथ विशाल वर्ण जगत को निहारते
और पत्नी से भी अधिक प्रियंकर थी उन्हें चित्रकलादेवी।

4. सुनने को मिला परिवारवालों से बाद में कि पति
की विचित्र रीतियों से सामंजस्य स्थापित करने में और
पारिवारिक जीवन में पति को सही समझने में और
पारिवारिक जीवन में ताल-मेल बिठाने में समय लगा रानी को।

ग्यारहवाँ सर्ग

थियोडर जॉन्सन और बकिंगहाम प्रभु

1. पहुँचे वाइसरॉय की चिट्ठी लेकर अठारह सौ अड़सठ में
थियोडोर जॉन्सन नामक डच चित्रकार तिरुवितांकूर के राजमहल में
और उन्होंने स्वीकार किया आतिथ्य तिरुवितांकूर के महाराज
का और उन्हें सौंपा गया महाराज का चित्र रचने का काम।

2. उस समय भारत आते थे प्रशस्त और अप्रशस्त चित्रकार
और राजाओं एवं धनाढ्यों के तैलचित्र रचकर पारिश्रमिक के
रूप में पाते थे बड़ी रकम और तब प्रचलित थी रीति
विदेशी चित्रकारों का निमंत्रण करके चित्र बनाने की ।

3. थियोडोर जॉन्सन तिरुवितांकूर आये थे राजाओं के तैल चित्र
खींचने के उद्देश्य से ही और उनको सौंपा था आयिल्यम तिरुनाळ ने
तैल चित्र खींचने और रविवर्मा को तैलचित्र रचना में
अधिक प्रशिक्षण देने का काम और बसाया उन्हें महल में ही।

4. महाराज ने दिखाये जॉन्सन को रविवर्मा से खींचे कुछ चित्र
जिनको देखा जॉन्सन ने अद्भुत भरे नेत्रों से यह समझकर कि
रविवर्मा प्रतिभा संपन्न कलाकार हैं तैयार हुए अपनी चित्र रचना
देखकर पढ़ने का अवसर और यह जानकर महाराज हुए प्रसन्न।

5. जॉन्सन तिरुवितांकूर में थे तीन साल तक और उन्होंने खींचकर
दिये राजमहल केलिए कुछ चित्र और महाराज को रविवर्मा
और जॉन्सन के चित्रों को देखने पर विश्वास बढ़ गया रविवर्मा पर
और लगा कि रविवर्मा के चित्र जॉन्सन के चित्रों से थे बेहतर।

6. उस समय मद्रास के राज्यपाल थे बकिंगहाम प्रभु और आये थे वे
तिरुवितांकूर में और पहुँचे चित्रशाला में रविवर्मा के चित्र देखने
और उस दिन रविवर्मा ने उनका जो स्केच बनाया उसी का तैल चित्र
खींचकर दिया था और अनाच्छादन हुआ उसका एक भव्य समारोह में।

7. भाग लिया था चित्र के अनाच्छादन के दिन अनेक पाश्चात्य
चित्रकार व कलास्वादक पत्रकार और प्रमुख नागरिक आदि ने
और मत था उनका कि विदेशी चित्रकारों की तुलना में अधिक
श्रेष्ठ है भारतीय रविवर्मा का चित्र और प्रशंसा की सब लोगों ने।

8. बकिंगहाम प्रभु ने स्वयं कहा अपने चित्र के बारे में कि स्वदेश
और विदोशों में बैठा था मैं मॉडल बनकर अनेक चित्रकारों के सामने
फिर भी नहीं मिली अभी तक पूर्ण तृप्ति और उन चित्रकारों के
चित्रों में नहीं थी रविवर्मा चित्र की स्वाभाविकता व सुन्दरता।

9. रविवर्मा द्वारा खिंचे रूपचित्र को भी स्थान मिला अनेक
पाश्चात्य चित्रकारों के चित्रों से अलंकृत मद्रास सरकार के भवन में
और इसी रूपचित्र के खींचने के कुछ दिन पहले बकिंगहाम प्रभु
तिरुवितांकूर जाते समय चित्रशाला गये थे चित्र देखने रविवर्मा के। (क्रमशः)

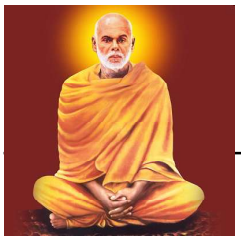

दर्शन माला

डॉ नेलसन डी

अपध्यारोप दर्शन

(केरल के महान संत, ऋषि-कवि, समाज सुधारक श्रीनारायणगुरु द्वारा संस्कृत में रची गई वेदांत-संबंधी रचना है 'दर्शनमाला।' दस-दस श्लोकों के दस भाग इसमें समाहित हैं। मुनि नारायण प्रसाद की मलयालम-व्याख्या का हिंदी भाषांतरण डॉ नेलसन डी ने तैयार किया है। - संपादक)

2

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

पिशाच से सब डरते हैं। पिशाच को कब देखना है? दिन में नहीं दिखाई देता। केवल रात में दिखाई देगा। रात में रोशनी नहीं है। प्रकाश न होते समय अन्धेरे में लगेगा कि पिशाच खड़ा होता है। इसी प्रकार ज्ञानरूपी रोशनी के अभाव में भी होता है। अन्धेरा तो अविद्या है। अविद्या की व्याख्या यहाँ नहीं की जा रही। वह चौथे अध्याय में की जाएगी। यहाँ अविद्या केवल आत्म-ज्ञान रहित अवस्था कही जाती है। आत्म-ज्ञान क्या है? आत्मा के बारे में, अपने बारे में होने वाला ज्ञान है आत्म-ज्ञान।

आत्म-ज्ञान वही है कि हर-एक का ऐसा ज्ञान होता है कि 'मैं कौन हूँ'। अब तक यही कहा गया है कि अपने को ही अपनी प्रकृति से ईश्वर ने जिस प्रकार विस्तार किया वही समस्त प्रपंच हुआ। हम सब उसके एक-एक अंश हैं। सबको जानना चाहिए कि मैं विस्तृत ईश्वर का एक छोटा सा अंश हूँ। उस समय पता चलेगा कि ईश्वर की वास्तविकता और अपनी वास्तविकता अलग-अलग नहीं है।

कोई भी अपने से डरता नहीं। लेकिन किसी दूसरे से डरता है। भय उत्पन्न करने वाला वह दूसरा भी वास्तव में ईश्वर का स्वयं विस्तृत होने का अंश ही है। मतलब यह है कि सब ईश्वर के अंश ही हैं। इतनी जानकारी होते समय ऐसा अनुभव होगा कि भय दौड़कर कहीं ओझल हो गया है। जिसने भय को दूर किया वह आत्मविद्या ही है, ईश्वरांश ही है, अपने में ईश्वर होने का ज्ञान है।

हर-एक ईश्वरांश का एक-एक खास रूप होता है। अतः सर्वस्व में ईश्वरांश होने पर भी इसका ज्ञान सबको नहीं मिलता। रूप देखते समय उसे सत्य मानता है। एक रूप दूसरे रूप से भिन्न है। इस प्रकार ईश्वर के अनगिनत रूप हैं। इसलिए इन रूपों को कुल मिलाकर इस प्रपंच की गणना करते हैं। हमारी कल्पनाओं में होने वाले रूपों को अलग-अलग जानने के लिए तथा विदित को दूसरे से कहने के लिए भी हम कई नाम बनाते हैं। नाम केवल भाषा-प्रतीक है। फिर भी नाम और उनसे मन में होने वाली प्रतिभाओं के बिना मनुष्य इस संसार को देख नहीं सकता। इसका निर्णय भी नहीं कर सकता कि मनुष्य का देखा हुआ संसार कल्पना

में देखने वाले रूपों का समाहार है या बाह्य रूप से दिखाई देने वाले रूपों का समाहार है। ऐसी दशा है कि इन दोनों के होते ही मनुष्य को लोकानुभव होता है। यही माना जाता है कि कल्पना में देखने वाले और प्रत्यक्ष में देखने वाले दोनों में परस्पर एक प्रतिसमता होती है। फिर भी इसका कोई प्रमाण नहीं है। यह केवल विश्वास की बात है। संक्षेप में हमारा लोकानुभव यह है कि नाम और रूप अनिर्वचनीय ढंग से परस्पर मिले-जुले होते हैं। इस प्रकार का संसार भय उत्पन्न करता है।

हमने देखा कि सभी दृश्य-रूप केवल ईश्वर की विस्तृति हैं। इस प्रकार मनुष्य का मन, उसकी कल्पनाएं उनके दिए हुए नाम और हम भी ईश्वर की विस्तृति का ही अंश हैं। तब हम भी ईश्वरांश हैं। संक्षेप में नाम और रूप ईश्वरांश ही हैं। किन्तु इस सत्य की जानकारी न होने के कारण नामरूपात्मक संसार हमको भय देने वाला हो जाता है। यदि सब ईश्वर की ही विस्तृति है तो हमारा भय भी उसका भाग ही है। अर्थात् भय की सृष्टि भी ईश्वर ही करता है। ईश्वर ने किसके लिए इस प्रकार एक संसार का निर्माण किया? यही अगले श्लोक का विचार-विषय है।

8 भयङ्करमिदं शून्यं वेतालनगरं यथा।
तथैव विश्वमखिलं व्यकरोदद्भुतं विभुः।।

इदम् - यह दृश्यलोक; यथा वेतालनगरम् - वेताल के नगर की तरह; भयंकरं शून्यम् -भय पैदा करने वाला और शून्य भी है; विभुः - ईश्वर; अखिलं विश्वम् - सम्पूर्ण संसार को; तथा एव - उसी प्रकार ही; अद्भुतम् - अतिशय की तरह; व्यकरोत - किया ।

यह दृश्यलोक वेतालनगर की तरह भय पैदा करने वाला और शून्य भी है। यह अद्भुत ही है कि सर्वव्यापी ईश्वर ने इस सम्पूर्ण संसार की इस प्रकार सृष्टि की।

वास्तव में हम सोचते हैं कि इस सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि प्रभु ईश्वर ने की। विभुरूपी विशेषण, सूचना देता है कि ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वशक्त और अनादि है। ऐसे ईश्वर ने ही इस विश्व का विस्तार किया। अर्थात् सभी में भरी हुई सत्ता ईश्वर की है। इसलिए हर-एक अपने में भरे हुए तथ्य के रूप में ईश्वर को देखे। ऐसा न देखने की अवस्था है आत्मविद्यारहित अथवा आत्मविद्या संकोच। ऐसी अवस्था में यह विश्व पिशाच की तरह भय पैदा करता है। यह सब हम देख चुके हैं। उस समय ऐसा एक प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने अपने में ही सृष्टि करते हुए इस विश्व को क्यों आत्मविद्या संकोच के रूप में छोड़ दिया? इसके जीवजालों को, खासकर मनुष्य को क्यों इतना भयभीत करते हैं? ईश्वर ने क्यों एक ऐसे विश्व की सृष्टि की?

संसार के लगभग सभी धर्मों में विशेषकर प्रवाचक धर्मों में बिना उत्तर का एक प्रश्न बाकी रहता है कि भलाई से पूर्णरूपी ईश्वर द्वारा निर्मित इस विश्व में बुराई कैसे हुई? इसका उत्तर कई तरह से कहने के लिए दैवशास्त्र-वैज्ञानिकों ने परिश्रम किया है, तो भी इसका एक अन्तिम उत्तर किसी ने नहीं कहा है। ऐसा एक उत्तर है ही नहीं।

महागुरु चट्टंबी स्वामिकळ्

अनुवाद : डॉ प्रिया राणी पी एस

मूल : डॉ (प्रोफ़) ए एम उण्णिकृष्णन

(डॉ ए एम उण्णिकृष्णन मलयालम साहित्य के शीर्षस्थ आलोचक एवं भाषाविद हैं। आप केरल विश्वविद्यालय के मलयालम विभाग के दूरस्थ शिक्षा विभाग में प्रोफेसर व डीन के पद से सेव निवृत्त हो माँ भारती की सेवा में संलग्न हैं। अब केरल अध्ययन विभाग में एमिरेट्स-प्रोफसर के पद पर विराजमान हैं।)

4. षण्मुखदास

विश्व की भलाई के उद्देश्य से पृथ्वी पर ईश्वर जन्म लेने को अवतार कहते हैं। महाविष्णु के दशावतार का आधार यही है। हालांकि, ऐसा कहा जाता है कि समय के साथ धर्म के प्रदर्शन के लिए भगवान की शक्तिमनुष्यों में भी काम करती है। मनुष्य द्वारा किए गए अनेक महान कार्य इसी का परिणाम है। आधुनिक केरल में चट्टम्पिस्वामीजी की महान सेवाओं को इसी आधार पर समझा जाना चाहिए।

स्वामीजी का मायका मच्चेल नामक प्रदेश का वेनियतु वीड है जो मलयिनकीष़ के निकट है। इस परिवार में अनेक प्रतिष्ठित एंव महान व्यक्ति जीवित थे। लेकिन समय के बीतने के साथ साथ कुल की प्रतिष्ठा और वैभव नष्ट होने लगा। परिणाम स्वरूप, परिवार गरीबी की चपेट में आ गया। फिर भी वेनियत परिवार ने दान - धर्म जैसे सतकर्म ज़ारी रखा था।

चट्टम्पिस्वामीजी के पूर्वज सिद्ध और महान लोग होते थे। ईश्वरपिल्लै, नारायणमौनी जैसे पूर्वजों के बारे में आज भी लोग पूर्ण सम्मान के साथ स्मरण करते हैं। ईश्वरपिल्लै स्वामीजी की पूर्व पीढी के एक चाचा थे। वे एक महायोगी और जीवन मुक्त व्यक्तिथे। भविष्यवाणी करते दिन ही उनकी समाधि हो गयी। वे असाधारण व्यक्तिथे। उनकी ही तरह नारायणमौनी भी महाज्ञानी और योगी थे। उम्मिनि पिल्लै महाराजा स्वातितिरुन्नाल के समकालीन महान योगी थे। ब्रह्मज्ञ होने के कारण अनेक असाधारण कार्य किए हैं। उनमें से एक बात स्वाति तिरुन्नाल के दरबार में हुई थी । उनके द्वारा संस्कृत के एक श्लोक की सात तरह से व्याख्या करते हुए सुनकर राजाओं में संगीतज्ञ और संगीतज्ञों में राजा श्री स्वातितिरुन्नाल चकित रह गये। 'चट्टम्पिस्वामीजी' को यह हुनर विरासत में मिला और उन्हीं के माध्यम से केरल को भी मिला था।

एक दिन उन्होंने शास्ता मंदिर के उत्तर -पश्चिम की गुफा में एक आदमी को खडा देखा था। जब उनके निकट गये तो उन्हें मालूम हुआ कि 'भगवा वस्त्र धारण करनेवाले एक तेजस्वी संन्यासी थे। वहाँ एक शिवलिंग और नाग प्रतिष्ठाएँ भी थीं। वह बालक उस दिव्य पुरुष पर मोहित हो गया था। तपस्वी ने लड़के को पास आने का इशारा किया। उस योगीश्वर ने ध्यान से अपने सामने खडे बच्चे की चौडी आँखों में पूर्वजन्म सुकृत के महान खजाने और भविष्य के चमत्कारों के संकेतों को देखा। वह एक क्षण ध्यानमग्न हुआ था फिर अपने दाहिने हाथ की तर्जनी से बच्चे के माथे को छुआ था। बच्चे ने तुरंत अपने एडी - चोटी तक एक ऊर्जा का उछाल महसूस किया। योगी ने लडके के दाहिने कान में एक दिव्य मंत्र सुनाया। एक बार फिर योगी की दिव्य कृपा लड़के के माथे पर छू गयी। कुञ्जन उनके पैरों पर गिरा और भरी आँखों से कुञ्जन ने संन्यासी को देखा, तब तक वे गायब हो चुके थे। कुञ्जन मंत्र जप करने लगा। वह बालासुब्रह्मण्यम मंत्र था। यहीं से सुब्रह्मण्योपासक कुञ्जन, षणमुखदास के नाम से जाना जाने लगा। बाद में चट्टम्पिस्वामीजी ने यह मंत्र श्री नारायण गुरु, नीलकंठ तीर्थपाद स्वामीजी और तीर्थपाद परमहंस स्वामीजी जैसे तपस्वी शिष्यों और श्री नारायण तीर्थपादर जैसे कुछ गृहस्थ शिष्यों को सिखाया।

5 विद्याधिराजन

'विद्याधिराजन' - चट्टम्पिस्वामीजी के अतुलनीय ज्ञान शक्ति के कारण दिया गया विशेषण पद है। लेकिन आश्चर्य यह है कि स्वामीजी ने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। तिरुवनंतपुरम के कण्णम्मूला उल्लूरकोट्टु भवन के कुञ्जन को स्कूल में दाखिला नहीं मिला क्योंकि वह फीस का भुगतान नहीं कर सकते थे। हालांकि, ज्ञान के प्यासे और सत्य के साधक, सर्वज्ञ और पूर्ण चट्टम्पिस्वामीजी कलानिधि बन गए ।

स्वामीजी की माँ नंगम्मा पिल्लै कोल्लूर मठ में नौकरी करती थीं। वहाँ के शास्त्री जी ने स्वामीजी की विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित होकर उनको मलयालम और संस्कृत में प्राथमिक शिक्षा प्रदान की। परन्तु यह अधिक समय तक नहीं रहा। क्योंकि कोल्लूर मठ का काम छोड़कर शास्त्रीजी वापस चले गये थे।

फिर भी स्वामीजी ज्ञानार्जन के लिए प्रयास करते रहे। अगला कदम पेट्टा में रामनपिल्लै आशान द्वारा संचालित स्कूल में शामिल होना और अध्ययन करना था।

यह कार्य दो -तीन वर्षों तक चलता रहा। अन्य अनेक महान व्यक्तियों के संपर्क के कारण कुञ्जन का ज्ञान बढ़ रहा था। इसके साथ स्वयं के प्रयास भी सफल रहे। कल्लडक्कुरीच्ची के महाकुलपति सुब्बाजटापाठी जी नवरात्री उत्सव के लिए जब तिरुवनंतपुरम आए तब कुञ्जन को अपने गुरुकुल में ले गया। तमिल प्रांत के चार साल के लंबा अध्ययन और दक्षिण भारत की यात्रा के बाद ऐसा कुछ भी विद्या नहीं थी जो वे नहीं जानते थे। बचपन में उन्हें एक अज्ञात साधु ने बालासुब्रह्मण्य मंत्र सिखाया था। उस साधु से लेकर साक्षात् परमशिव से प्राप्त तत्त्वमसी महावाक्यानुभव के प्रभाव से वे बहुमुखी प्रतिभावान एवं परम ज्ञानी बन गये।

स्वामीजी ने अपनी सत्ताईस साल की उम्र में महासिद्ध की उपाधि प्राप्त कर तिरु वनंतपुरम लौट आए। थोड़ी ही देर बाद उन्होंने कूपक्करा मठ का दौरा किया। कूपक्करा मठ ब्राह्मण सदनों में से एक है जो श्री पद्मनाभ स्वामीजी मंदिर का प्रशासनिक अधिकार रखता है। स्वामीजी जी का वहाँ जाने का उद्देश्य मठ के अमूल्य और अद्वितीय ताम्रपत्रों को देखना और ज्ञान प्राप्त करना था। कूपक्करा मठ के पुजारी महापंडित और ज्ञानी थे , जिन्होंने चट्टम्पिस्वामीजी का विभिन्न तरीकों से परीक्षण किया। स्वामीजी के ज्ञान में संतुष्ट होकर उन्होंने स्वामीजी को ताम्रपत्रों की तहखाना खोलकर दिया।

स्वामीजी जी उस अक्षय गृह में डूब गये। तीन दिन और रात मौन में बीत गए। उस महायोगी ने निर्वाण होकर, उपवास कर दीपक को साक्षी मानकर ज्ञान साधना में लीन हो गये। वे जो जानना चाहते थे वह सब कुछ जानने के बाद स्वामीजी जी बाहरी दुनिया में वापस आये। वे पसीने से लथपथ होते थे। स्वामीजी के सोने की मूर्ति के समान उज्ज्वल शरीर और चेहरे पर दया की कोमल मुस्कान और परम सत्य को ग्रहण करनेवाली आँखों की शांति को देखकर वे ब्राह्मण चकित हो गये। लेकिन उन्होंने एक बार फिर स्वामीजी को परखने का फैसला लिया। वे उन ग्रंथों में निहित अत्यधिक निगूढ ज्ञान के संबन्ध में प्रश्न जारी करते रहे। अगले ही पल, स्वामीजी ने प्रत्येक को स्पष्ट और अच्छी तरह से प्रमाणित उत्तर सुनकर ज्ञानी ब्राह्मण चकित हो गये। उस श्रेष्ठ ब्राह्मण ने ज्ञान के अवतार मूर्ति के सामने स्वयं दीन बना लिया।

स्वामीजी के सामने पुस्तकों का जितना व्यापक संग्रह था वह अभूतपूर्व था। उनमें जो कुछ है वह कहीं नहीं मिल सकता। बड़े महान तांत्रिकों को भी ध्यान पूर्वक उन ग्रंथों के सार को आत्मसात करने केलिए कई वर्ष की आवश्यकता होती है। उस ब्राहमण श्रेष्ठ को उसपर इतना गर्व और शान था। लेकिन उस युवा योगी ने महज कुछ घंटो में ही सारा ज्ञान सहजता से हासिल कर लिया है। ब्राह्मण ने बिना पलकें झपकाए उस ज्ञान स्वरूप योगी को देखा। उनके मन में एक बिजली की झटके से एक सवाल उभर आया - 'आप कौन हैं? साक्षात् विद्याधिराज?' तब स्वामीजी जी ने जवाब दिया कि 'हमारे लिए विद्या का अर्जन, विस्मृति को दूर करने के लिए है। इस घटना के बाद वे लोगों में विद्याधिराज नाम से अभिहित हुए।

(क्रमशः)

पारिस्थितिक स्त्रीवाद का सशक्त दस्तावेज : सुगतकुमारी और अनामिका की कविताएँ

कृष्णवेणी आर

शोध सार : भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांत को मानती है। प्रकृति के साथ मनुष्य का अटूट संबंध चिरकाल से रहा है। लेकिन आज के उपभोगवादी मानसिकता से ग्रस्त मानव प्रकृति पर अत्याचार करके उसे वश में लाने की कोशिश करता है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप पारिस्थितिक असंतुलन की स्थिति पैदा हुई। इस पारिस्थितिक असंतुलन से जूझनेवाले पर्यावरण को बचाना स्त्री अपना दायित्व मानती है। नारी स्वयं प्रकृति है, वह सृजन करती है और अपने द्वारा सृजित संसार का संरक्षण भी। स्त्रियाँ प्रकृति में अंतर्निहित और अंतःस्थापित हैं। जिस प्रकार प्रकृति का शोषण हो रहा है, उसी रूप में स्त्रियों का भी शोषण हो रहा है। पारिस्थितिक स्त्रीवाद जैविक संबंधों, स्त्रियों की स्थिति और मूल्यों की अन्योन्याश्रयता सुनिश्चित करने का एक प्रयास है। पारिस्थितिक स्त्रीवाद उन समूहों की आवाज़ बन गई है जो आज के युगीन विकास योजना में अपनी विशिष्टता और पहचान खो रही है। अपनी कविताओं के माध्यम से पारिस्थितिक स्त्रीवाद के विभिन्न स्तरों को मार्मिकता एवं व्यक्तता के साथ प्रस्तुत करनेवाली समकालीन कवयित्रियाँ हैं :- सुगतकुमारी और अनामिका। इस शोध आलेख में इन कवयित्रियों द्वारा लिखित पारिस्थितिक स्त्रीवाद के विभिन्न पक्षों को देखने, समझने व तुलना करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : पारिस्थितिक स्त्रीवाद, पितृसत्ता, पूँजीवाद, अस्मिता, प्रतिरोध

मूल आलेख : पारिस्थितिक स्त्रीवाद, नारीवाद की एक शाखा है जो लिंग और पर्यावरण के बीच संबंधों के गंभीर विश्लेषण और समझ से संबंधित है। नारीवाद की अन्य शाखाओं की तरह, पारिस्थितिक स्त्रीवाद का लक्ष्य यह है कि समाज में सभी लिंगों के बीच समानता हो। इसके अतिरिक्त पारिस्थितिक स्त्रीवाद, लिंग और पर्यावरण के बीच संबंधों की आलोचनात्मक जाँच और विश्लेषण करता है। पारिस्थितिक स्त्रीवाद का प्रतिरोधी स्वर यह है कि स्त्री और प्रकृति का समान रूप से शोषण हो रहा है। स्त्री की मुक्ति इस पृथ्वी की मुक्ति है।

समकालीन हिंदी साहित्य में पारिस्थितिक स्त्रीवाद का सशक्त रूप समकालीन कविता में देखा जा सकता है। समकालीन हिंदी कविता के दौर में ऐसे अनेक रचनाकार हुए हैं जिन्होंने पारिस्थितिक स्त्रीवाद के कई पहलुओं को उतारकर प्रकृति और स्त्री के शोषण के प्रति हमें अवगत कराने की ज़िम्मेदारी उठायी है। हिंदी में ज्ञानेंद्रपति, राजेश जोशी, अरुण कमल, केदारनाथ सिंह, चंद्रकांत देवताले, लीलाधर जगूड़ी, लीलाधर मंडलोई, मंगलेश डबराल, मदन कश्यप, कात्यायनी, सविता सिंह, विवेक कुमार मिश्र, अनामिका, निर्मला पुतुल, रणेन्द्र आदि की कविताएँ इसके ज्वलंत उदहारण हैं। सिर्फ हिंदी साहित्य में ही नहीं बल्कि मलयालम साहित्य में पारिस्थितिक स्त्रीवाद से संबंधित कई कविताओं में स्त्री और प्रकृति के समानधर्मी मुद्दे उभरकर आते हैं। समकालीन मलयालम कविताओं में अयप्पपणिक्कर, ओ. एन. वी. कुरुप्प, कड्म्मनिट्टा रामकृष्णन, के सच्चिदानंदन, डी विनयचंद्रन, मधुसूदनन नायर, विष्णु नारायण नंबूतिरि, के.जी शंकरपिल्लै, सुगतकुमारी, टी.पी.राजीवन, एस.जोसफ, पवित्रन तीकुनी, विजयलक्ष्मी, उदयभानू आदि की कविताएँ पारिस्थितिक स्त्रीवाद के विविध आयामों को दर्शाती हैं।

समकालीन हिंदी और मलयालम की चर्चित कवयित्रियों में अनामिका और सुगतकुमारी की अपनी अलग पहचान है। मलयालम साहित्य की एक प्रतिष्ठित लेखिका है सुगतकुमारी। केरल की पर्यावरणविद् और समाजिक कार्यकर्ता के रूप में वे अहम भूमिका निभानेवाली हैं। तो हिन्दी साहित्य की महान लेखिका सामाजिक कार्यकर्ता एवं

उपन्यासकार के रूप में विख्यात है 'अनामिका'। इन दोनों रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों, सामाजिक न्याय और अन्यायों के खिलाफ बुलन्द आवाज़ उठयी है। दोनों का अनुभव संसार विविधतापूर्ण है जहाँ इनके भावुक अंतरमन की कविताएँ प्रस्फुटित होती है। उनके पास सृजन और समझ का एक विस्तृत फलक है। सुगतकुमारी और अनामिका ने अपनी कविताओं और लेखों के माध्यम से जनता में आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और साहसिकता के साथ विचारों और भावनाओं को चुनकर अभिव्यक्त किया है। 'गलत पत्ते की चिट्ठी', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप', 'समय के शहर में', 'खुरदुरी हथेलियाँ', 'दूब धान' आदि अनामिका के महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है तो 'पावम मानवहृदयम', 'मुत्तुचिप्पी', 'अम्पलमणि', 'इरुलचिराकुकल', 'स्वप्नभूमि', 'पूवषी मरुवषी', 'कृष्ण कवितकल' आदि सुगतकुमारी की महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

इन कवयित्रियों की कविताओं में पारिस्थितिक स्त्रीवाद के विभिन्न मुद्दे नज़र आते हैं -

1. स्त्री और प्रकृति की समानधर्मिता: स्त्री और प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। स्त्री के बिना प्रकृति और प्रकृति के बिना स्त्री अधूरी है। स्त्री और प्रकृति दोनों ही प्रजनन और पोषण के प्रतीक हैं। ये दोनों चक्रियता और परिवर्तन के मुख्य हिस्सा , शक्ति, सौन्दर्य, आकर्षण और सामर्थ्य के प्रतीक भी हैं। साथ ही दोनों पितृसत्तात्मक समाज द्वारा शोषण के शिकार भी बन रही हैं।

प्राचीन एवं सार्वभौमिक अवधारणा के अनुसार, प्रकृति को एक मातृ शक्तिके रूप में देखा जाता है, जो जीवन को जन्म देती है, पोषण करती है और संरक्षण करती है। जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चों को भोजन, पानी और अन्य आवश्यक चीजें प्रदान करती है , उसी प्रकार प्रकृति भी हमारी रक्षा करती है। सुगतकुमारी की कविता 'चूड' (गर्मी) में प्रकृति को माँ समान चित्रित किया है। जैसे :- "कोडुम्चुडाले, वट्टून्नू/किणरुम नोट्टा कणकलुम/किडाविनाय् चुरत्तेनण्डा/ नेन्जुम ताराट्ठ कोंजल्लुम"[1]

(अर्थात- तेज़ गर्मी है, उस गर्मी की वजह से कुएँ और प्यार भरी आँखें भी सूख गई है। गर्मी उतनी बढ़ गयी है कि अपने बछडे को पिलाने के लिए गाय के पास दूध भी नही है) जिस प्रकार गाय अपने बछडे को दूध पिलाकर उसका पालन पोषण करती है, ठीक उसी प्रकार माँ अपनी संतान का पालन पोषण करती है। लेकिन जब दूध खत्म हो जाता है यानी गर्मी की वजह से जल निकायों में पानी सूख जाती है तो हमारी माँ समान प्रकृति हमारा पालन पोषण करने में निस्सहाय हो जाती है।

'गनीमत' कविता में प्रकृति के हरे -भरे वृक्षों की माँ के स्तन का प्रतीक मानकर अनामिका कहती है :- "पेड़ हरे स्तन हैं माँ के"[2]

पेड़-पौधे प्रकृति की अमानत है। इन पेड़-पौधे से प्रकृति की शोभा बढ़ जाती है। इसलिए इसे सुरक्षित रखने की आवश्यकता पर हमें चेतावनी देती है अनामिका।

प्रकृति और स्त्री के बीच का संबंध न केवल प्राकृतिक और शारीरिक है, बल्कि यह आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक भी है। इन दोनों के बीच दोस्ती या लगाव भी देखा जा सकता है। अनामिका की कविताओं में प्रकृति और स्त्री के बीच का रिश्ता गहरा है, जो एक दूसरे के पूरक हैं। अनामिका की कविता 'पेड़ों की बात' प्रकृति और स्त्री के बीच की दोस्ती का दस्तावेज़ हैं। जैसे :- "पेड़ों की बात सुनने के लिए/मैं खड़ी हूँ इस जंगल में/जहाँ पेड़ मेरी बात सुनते हैं और मैं उनकी बात सुनती हूँ।"[3]

यहाँ प्रकृति के प्रति लगाव एवं प्रकृति को सुरक्षित देखने की जिजीविषा स्पष्ट है। प्रकृति और स्त्री दोनों एक दूसरे को दोस्त मानकर अपने दिल का दर्द, दुख और पीड़ा साझा कर रही हैं। सुगतकुमारी की एक कविता है 'पविषमल्लियुडे मरणम'। इस कविता में वे अपने आँगन में खिलते हुए मूँग धनिया के पौधे के बारे में कहती है। उसे घरवालों ने अपने दोस्त के समान माना था। उस पौधे की मृत्यु के अवसर पर लेखिका यों लिखती है- "अषिवातिलिलूडे परुड़ी वरिल्लिनी/पविषमल्लिपूविन प्रेमम्/मुरियिल अकायिल विलीक्ककेट्ट, ञङ्ङल/इविडे तलरन्निरिक्कुन्नू/इवल तोषी, मुट्टतु मणमार्न्नू निन्नू पू-/मषा वारिवारि चोरीज़ोल"[4]

(अर्थात-आज के बाद खिड़की से पविष़मल्ली या मूँग धनिया के पौधे का प्यार नही मिलेगा। कमरे में दीप बुझ गया है सारे लोग इधर-उधर थके बैठे है।आँगन में उसकी खुशबू से महकानेवाली मूँग धनिया का पौधा अब नहीं रहा) कवयित्री की बड़ी बहन उसे बहुत पसंद करती थी। अचानक उसकी मृत्यु के बाद वह पौधा सूख गया। इससे यह ज़ाहिर होता है कि सिर्फ घरवाले ही नहीं वह पौधा भी बदले में उन्हें प्यार करता था। इसलिए सदस्य की मृत्यु उस पौधे को बर्दाश्त नहीं किया जा सका। स्त्री और प्रकृति के बीच में अद्‌भुत साम्य है। स्त्री प्रकृति का सूक्ष्म रूप है और बड़े दुख की बात है कि जबसे मानवता विकसित हुई है, पुरुष ने इन दोनों को ही बुरी तरह से तहस नहस किया है। स्त्री और प्रकृति दोनों समान रूप से पुरुष के शोषण के शिकार हैं। अतः पारिस्थितिक स्त्रीवाद में मानवता की भलाई के लिए दोनों की गायब होती अस्मिता को बचाने का उत्तरदायित्व स्त्री के ऊपर है।

2 . गायब होती अस्मिता के शिकार : प्रकृति और स्त्री: स्त्री और प्रकृति दोनों ही मानव जाति के लिए बहुत ज़रूरी हैं, लेकिन इन दोनों का शोषण और दमन हो रहा है। पूंजीवादी या पितृसत्तात्मक समाज के शोषण के फलस्वरूप इन दोनों का अस्तित्व गायब होता जा रहा है। प्रकृति और स्त्री की अस्मिता की तलाश आज के लोकतांत्रिक समाज में महत्वपूर्ण एवं एक जटिल समस्या बन गयी है। स्त्री का अस्तित्व प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंधों में निहित है। क्योंकि स्त्री और प्रकृति एक साथ जुड़कर रहने वाले दो पूरक हैं। आज के इस पितृसत्तात्मक समाज में दोनों अपने अस्तित्व को ढूँढने के लिए मजबूर बना रहे है।

अनामिका की कविताएँ अक्सर प्रकृति और स्त्री के बीच के संबंध को दर्शाती हैं। उन्होंने वनस्पति और जीव-जन्तुओं का विनाश, लिंग भेदभाव और आर्थिक और सामाजिक शोषण जैसे प्रतीकों के ज़रिए गायब होती स्त्री और प्रकृति के अस्तित्व को चित्रित किया है। 'बेजगह' नामक कविता में नष्ट होते अस्तिव का यों चित्रित किया गया है :- "और मेरा?"/'ओ पगली, लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं/ उनका कोई घर नहीं होता।/ जिनका कोई घर नहीं होता -/ उनकी होती है भला कौन-सी जगह?/ कौन-सी जगह होती है ऐसी/ जो छूट जाने पर औरत हो जाती है।"[5]

जिस घर में उसका जन्म होता है, उस घर में भी उसकी कोई जगह नहीं होती। वे हवा, धूप और मिट्टी होती हैं। पितृ सत्तात्मक समाज उसे प्रकृति की तरह देखती है जैसे चाहें उसका उपयोग करे। इसका कोई अस्तित्व नही है।

पर्यावरण प्रदूषण तथा पूंजीवादी शोषण के कारण नष्ट होती प्रकृति के अस्तित्व को व्यक्त करने के साथ पितृसत्तात्मक समाज की स्वार्थता की वजह से नष्ट होती स्त्री अस्मिता को भी सुगतकुमारी ने अपनी रचनाओं के जरिए दर्शाया है। अस्तित्व विहीन स्त्री और प्रकृति को एक साथ लाने में वे सफल हुई। 'निर्भया' नामक कविता में यों ज़िक्र किया है :- "मलयडिच्चुवरुन्न यन्त्रत्तिन्डे/वषि़यिल निलकुन्नु कोच्चुतुम्बचेडि;/वषि़यिल निलप्पू चमञ्ञु तुम्बचेडि"[6]

(अर्थात - पहाड़ को ध्वंस करने के लिए आनेवाले मशीन के रास्ते में एक छोटा तुम्बा पौधा सज - धज कर खड़ा है) इस कविता में तुम्बचेडि (तुम्बा का पौधा) को स्त्री का प्रतीक मानती है। उसे हानी पहुँचाने के लिए जो मशीन आता है उसे पूंजीवादी पुरुष सत्ता का प्रतीक माना गया है। इस प्रतीक के ज़रिए स्त्री और प्रकृति के नष्ट होते अस्तित्व को एक साथ चित्रित किया है। स्त्री और प्रकृति एक साथ शोषण का शिकार बनती है साथ ही वे अपने अस्तित्व को खोजती हैं।

3. शोषण और दोहन के खिलाफ प्रतिरोधी स्वर : स्त्री और प्रकृति के बिना सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। फिर भी स्त्री का शोषण और प्रकृति का दोहन बदस्तूर जारी हैं। दोनों के संरक्षण के लिए तरह-तरह के कानून बने हैं, फिर भी समाज में दोनों के प्रति उपेक्षा का भाव बरकरार है। भारतीय समाज में स्त्रियाँ तथा प्रकृति के साथ हो रहे असमानता एवं भेदभाव का मूल कारण पितृसत्ता ही है, जोकि भारतीय समाज में सदियों से अपनी जड़ें जमा रही हैं। इस प्रकार की असमानता एवं भेदभाव इनकी कविताओं में दिखाई पडती हैं। सुगतकुमारी की

कविता ' चूड़ ' में प्रकृति रूपी स्त्री को केवल भोग वस्तु के रूप में मानकर उसका शोषण करनेवाले पितृसत्तात्मक पूंजीवादी समाज का चित्र देख सकते है। जैसे :-"अम्बा, निन्डे मुलपाल/इवर ऊट्टुन्नु नित्यवुम/निन्डे रक्तम, निन्डे मांसवुम,/नी ञङ्ङल्क्कोरु पेण्णिरा !'[7]

(अर्थत - हे..अम्बा, तुम्हारे स्तन बंजर हो गये हैं, हर दिन रक्तऔर मांस युक्त तुम हमारे लिए सिर्फ एक भोग वस्तु हो) पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्री को भोग वास्तु के रूप में मानकर उनकी स्वतंत्रता और अधिकारों को छीनकर उनकी भावनाओं, इच्छाओं एवं स्वत्व को नजरअंदाज कर दिया है। स्त्रियों को शोषण से मुक्त करके इस सोच के खिलाफ लड़ने के लिए, समान अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करने की आवश्यकता है। स्त्रियों को वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत और स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में देखने की आवश्यकता है। इसकेलिए ही कवयित्री अपनी कविता रूपी तलवार को लेकर इस पुरुषमेधा समाज से लड़ती है। अनामिका की कविताओं में भी स्त्री संघर्ष, शोषण तथा प्रतिरोध के विविध पक्ष नज़र आते हैं। वे पुरुष वर्ग का विद्रोह नहीं करती बल्कि पितृसत्तात्मक सोच को नकारती हैं। जैसे :- "नमक दुख है धरती का और उसका स्वाद भी !/पृथ्वी का तीन भाग नमकीन पानी है/और आदमी का दिल नमक का पहाड़/जिनके चेहरे पर नमक है/पूछिए उन औरतों से'[8]

'नमक' एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली कविता है, जो स्त्री की स्थिति और उसके अनुभवों को दर्शाती है। इस कविता में अनामिका ने नमक को एक प्राकृतिक बिंब के रूप में दर्शाया है । कविता में नमक को शोषण या दोहन के प्रतीक के रूप में प्रयुक्तकिया है । प्रकृति का दुख यह है कि अपना एक तिहायी भाग नमक से भरा है। इसी प्रकार नमक को एक प्राकृतिक बिंब के रूप में चित्रित करते हुए प्रकृति और मनुष्य को जोड़ने में अनामिका सफल हुई है। साथ ही कवयित्री यह बताना चाहती है कि स्त्री की यातनाओं का प्रमुख कारण यही पितृसत्तात्मक सोच वाली नमक है जो आदमी के मन में भरा हुआ है। कविता में अनामिका ने स्त्री की स्थिति का कारण नमक रूपी शोषण या दोहन को मानती है जो खाने में स्वाद बढ़ाता है, लेकिन खुद को खो देता है। स्त्री के अनुभवों को व्यक्त करने के साथ वह अपनी पहचान, अपने अधिकारों के लिए जो लड़ाई लड़ती है उसे भी दर्शाया है।

4. प्रतिरोधी हरित भाषा : हरित भाषा का मतलब है, पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री। प्रतिरोधी हरित भाषा एक ऐसी भाषा है जो प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रतिरोध की आवाज़ उठाती है। यह भाषा पर्यावरणविदों द्वारा उपयोग की जाती है जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने और इसके संरक्षण के लिए काम करती हैं। अनामिका और सुगतकुमारी की कविताओं में प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रतिरोध की आवाज़ उठाई गई है। संस्कृति का सम्मान, प्रकृति के साथ सामंजस्य, पूंजीवादी सत्ता के खिलाफ प्रतिरोध आदि उनकी कविताओं की मुख मुद्राएँ हैं। सुगतकुमारी अपनी कविताओं में प्रतिरोधी हरित भाषा का प्रयोग करती हैं। 'चूड़' में आक्रोश जताती है :- "मणलचालिल वीणु पिडयक्कुन्न/चावुम पुष़कले, दाह -/नीरिनाय काडिऱ्ङ्ङुम/पावम सह्यन्डे मक्कले,/पालक्काडिन मरुच्चूडिल/तनिये निन्नू कत्तीडूम/नीलपनकले, निङ्ङल/एल्लाम इतिनू साक्षिकल'[9]

(अर्थात - रेत में गिरते तड़पने वाली मृत नदियों तथा प्यास बुझाने के लिए जंगल छोड़कर चलने वाले सह्य पर्वत की संतानों, पालक्काड़ की गर्मी में झुलसते पेडों, सूनो आप सभी इसके गवाह हैं!) इस कविता में नष्ट होती प्रकृति की हालत का सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है ,जैसे सह्यन्डे मक्कल (सह्य पर्वत की संतान), नीलपनकल (नीले ताड़ के पेड़) आदि। इस तरह के कई प्रतीकात्मक बिम्बों के सहारे ही सुगतकुमारी अपने प्रतिरोध को ज़ाहिर करने के साथ प्रकृति, संस्कृति और सभ्यता आदि के नष्ट होने की भयानकता दर्शाती है। सरल भाषा में गंभीर भाव को प्रकट करने की अनामिका की कला अतुलनीय है।

"बहू-बहूटी वगैरह को नहीं शोभती वीरताएँ, /पर मिट्टी पर यानी खुले आसमान के नीचे/एक अकेली औरत का/ऐसे सो पाना/एक पराक्रम है पूरा !"[10]

'पूरे चाँद की रात' नामक कविता में कवयित्री ने पुरुषसत्तात्मक समाज में एक अकेली औरत के प्रतिरोध को दर्शाया है। स्त्री पुरुषमेधा समाज को ललकारती हुई

समाज में अपनी जगह खोजती है। समाज ने स्त्री को बहुटी यानि अबला मानती है। लेकिन कवयित्री कहती है कि स्त्री में भी पराक्रम, शक्ति बहादूरी और आक्रोश शामिल हैं। वह सारे बन्धनों को तोड़कर इस समाज में शांति से सोने के लिए एक जगह ढूँढती है। अनामिका की कविताओं की खासियत यह है कि सरल शब्दों में छिपे हुए अर्थों को गंभीर विद्रोहात्मक ध्वनि में वे बदल देती हैं।

निष्कर्ष : सुगतकुमारी और अनामिका की कविताएँ पारिस्थितिक स्त्रीवाद की बुलंद आवाज़ बनकर खड़ी हुई हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफ लड़कर अपनी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए निरंतर प्रयत्नरत स्त्री और प्रकृति आपसी पूरक हैं। वे हमारी संस्कृति के धरोहर हैं। इनके नष्ट होने से संपूर्ण मानवराशी का पतन सुनिश्चित है। इसे बचाने का कर्तव्य इन कवयित्रियों ने उठाया है। पारिस्थितिक सजगता, अवबोध एवं पारिस्थितिक संरक्षण की आवश्यकता को दर्शाने के साथ नष्ट होती प्रकृति और स्त्री की अस्मिता और उनके प्रतिरोध को हरित भाषा के माध्यम से चित्रित करने में सुगतकुमारी और अनामिका सफल हुई हैं।

संदर्भ

(1) सुगतकुमारी - पुवष़ी मरु वष़ी, डी . सी बुक्स, कोट्टयम, 2016, कविता - चूड - पृष्ठ संख्या - 31

(2) अनामिका - दूब - धान, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2008, कविता - गनीमत - पृष्ठ संख्या - 36

(3) अनामिका-कविता- पेडों की बात

(4) सुगतकुमारी-पुवष़ी मरु वष़ी, डी. सी बुक्स, कोट्टयम, 2016, कविता - पविष़मल्लियुडे मरणम -पृष्ठ संख्या - 49

(5) अनामिका - कविता - बेजगह - https://www.hindwi.org/poets/anamika/kavita

(6) सुगतकुमारी - पुवष़ी मरु वष़ी, डी. सी बुक्स, कोट्टयम, 2016, कविता - निर्भया - पृष्ठ संख्या - 29

(7) सुगतकुमारी - पुवष़ी मरु वष़ी, डी . सी बुक्स, कोट्टयम, 2016, कविता -चूड - पृष्ठ संख्या - 32

(8) अनामिका - कविता नमक - https://www.hindwi.org/poets/anamika/kavita

(9) सुगतकुमारी - पुवष़ी मरु वष़ी, डी. सी बुक्स, कोट्टयम, 2016, कविता -चूड - पृष्ठ संख्या - 32

(10) अनामिका - दूब - धान, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2008, कविता- पूरे चाँद की रात - पृष्ठ संख्या - 31, 32

(11) के. वनजा - इको - फेमिनिज़म - वाणी प्रकाशन 2013

(12) डॉ. मीना शर्म - हिंदी साहित्य और पर्यावरणीय संवेदना - नमन प्रकाशन 2014

(13) दिशा पारीख - नारी विमर्श - संकल्प प्रकाशन 2014

(14) डॉ. के. वनजा - हरित भाषा वैज्ञानिक विमर्श - वाणी प्रकाशन 2015

(15) कथयुम परिस्थितियुम-जी. मधुसूदनन-करंन्ट बुक्स 2000

(16) आधुनिक मलयालम कवितयिले स्त्रीपक्ष समीपनङ्ङल - गीता - लिपी पब्लिकेषन -2002

(17) फेमिनिज़्म 1&2-डॉ. जानसी जेइम्स - केरल भाषा परिषद - 2000

(18) पारिस्थिति संगठनकलुम, परिस्थिति प्रवर्तकरुम - एन . अजित कुमार - विनायक बुक हाउस -2013

शोध निर्देशक : **डॉ ए के बिंदु,**
सह आचार्य, हिंदी विभाग

शोधछात्रा, हिंदी विभाग
कुसाट, कोचिन

श्रद्धांजलि

प्रोफ. के.एस. पार्वती

(22.06.1936-12.04.2026)

सेवानिवृत्त आचार्या, हिंदी विभाग
सरकारी वनिता महाविद्यालय,
वषुतक्काड्, तिरुवनंतपुरम

'जुलूस' नाट्यरूपांतर की प्रासंगिकता : समकालीन संदर्भ में

वीणा एस कुमार

शोध सार : 'जुलूस' स्वतंत्रता आंदोलन से संबन्धित एक रचना है। जब अंग्रेज़ लोग भारत में आकर शासन कर रहे थे तब सारे देशवासियों का जीवन संघर्षमय था। स्वाधीनता न होने से साधारण जनता को अनेक मानसिक संघर्ष झेलने पड़े। अंग्रेज़ी कानूनों को एक गुलामी के जैसे अनुगम करने में वे मज़बूर थे। आजीवन झेलनेवाले सारे मानसिक संघर्षों से मुक्ति पाने के उद्देश्य से ही वे लोग जुलूस निकालते थे। इस संघर्षमय जन -जीवन का सच्चा चित्र 'जुलूस' द्वारा प्रस्तुत करना ही रचनाकार का लक्ष्य रहा है।

बीज शब्द : स्वाधीनता, गुलामी, संघर्षमय जीवन,जुलूस।

मूल आलेख : 'जुलूस' नाट्यरूपांतर के पात्र बीरबलसिंह अपने राज्य के प्रति प्रेम रखते हैं फिर भी उसे अपने राज्य एवं देशवासियों के विरुद्ध काम करना पडता है। राज्य के प्रति बीरबलसिंह के इस हिंसापरक व्यवहार पर हर लोग शिकायत करते हैं और उनकी पत्नी भी उन लोगों का साथ देती है। वे दोनों के बीच जुलूस के प्रति बातचीत होने पर बीरबलसिंह कहते हैं - "मैं क्या करता उस वक्त मिट्ठुन? पीछे डी.एस.पी. खड़ा हुआ था। जुलूस को रास्ता दे देता तो अपनी जान मुसीबत फँसती!"[1] उक्त वक्तव्यों से बीरबलसिंह के मानसिक द्वन्द्व व्यक्त हैं। वहाँ डी.एस.पी. साहब होने पर ही उसे देशवासियों पर अत्याचार करना पड़ा था। क्योंकि वह अपने उँची अफ्सर का आदेश का पालन करने में मज़बूर थे। इसके सिवा जुलूस के भागीदारी नेता इब्राहिम अली के दारुणांन्त का भी कारण बन जाने से वह बहुत व्याकुल और दुखित भी थे। इसलिए ही वह अपनी पत्नी से अपनी मानसिक व्यथा इस तरह व्यक्त करते हैं - 'बुद्धिमान न सही, पर इतना ज़रूर जानता हूँ कि ये लोग देश और जाति का उद्धार करने के लिए लड़ रहे हैं। यह भी जानता हूँ कि सरकार इस ख्याल को कुचल डालना चाहती है। (निश्वास भरकर) ऐसा गधा नहीं हूँ, मिट्ठु गुलामी की ज़िन्दगी पर गर्व करूँ! मगर परिस्थिति से मज़बूर हूँ, लाओ मेरी वर्दी दो....।"[2] परिस्थितिवश उसे जिन प्रवृत्तियों को करना पड़ा उन सारी प्रतिक्रियाओं को देखकर अपना मन विचलित होते हैं। उनकी मानसिक व्यथा चरमोन्नति पर आ पहुँचने पर इब्राहिम अली की पत्नी से यह कह देते हैं "जानता हूँ, मैंने अक्षम्य अपराध किया है। मगर, अब मेरी आँखें खुल गई हैं। अब मैं यह पुलिस की नौकरी नहीं करूँगा, उसके लिए चाहे मुझे जो भी कीमत चुकानी पड़े ....।"[3] इन वाक्यों से पूर्ण रूप से यह साबित हो जाता है कि उनके द्वारा झेले गए मानसिक संघर्ष जितना कठोर एवं व्यापक था। मिट्ठुन बाई एक देशस्नेही होने से अपने पति को भी उसी के साथ देना वह बहुत चाहती थी। लेकिन इसके उल्टा घटित होने पर वह भी संघर्ष से जुड़ जाती है। उन दोनों के बीच के दाम्पत्य सम्बन्ध भी टूट जाते हैं। जब बीरबलसिंह इब्राहिम अली की पत्नी से मिलकर क्षमा माँगते हैं तभी मिट्ठुन बाई यह कहती है "आज मेरे जन्म जन्मान्तर के क्लेश मिट गए ....।"[4] वह अपने पति से राज्य के प्रति हो गये घोर व्यवहारों का संघर्ष आजीवन झेलकर जी रही थी। अब इसकी समाप्ति हो गई है। अपने द्वारा भोगे गए मानसिक संघर्ष को प्रेमचन्द ने यथावित इसमें दर्शाया है। आपने स्वयं स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। इसलिए ही निजी अनुभवों की झलक इसमें व्यक्त है।

'जुलूस' के दारोगा बीरबलसिंह इसका एक नमूना रहा है। उसे अपने देशवासियों के विरुद्ध काम

करना पड़ता है। यही असफलता ही बीरबलसिंह द्वारा दिखाई पड़ता है। बीरबलसिंह अंग्रेज़ी कानूनों में फँस गया था। उसके पास और कोई उपाय नहीं था। इसलिए ही वह इन अंग्रेज़ी कानूनों के जाल से रक्षा पाने के बजाय काम को छोड़ देता है। काम पर रहते वक्त उसे अपने अस्तित्व एवं मन को अंग्रेज़ों के निकट पूरी तरह समर्पित करना पड़ा। यहाँ दारोगा बीरबलसिंह के द्वारा गुलामी जीवन की विवशता का स्पष्ट चित्रण व्यक्तहुआ है। इसके नारी पात्र मिट्ठन बाई तो एक देशस्नेही एवं जुलूस के अनुकूली रही है। इसलिए ही उसे समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान है। लेकिन इस सामाजिक प्रतिष्ठा में रुकावट पैदा करने का व्यवहार अपने पति द्वारा होता है। जुलूस के सामने होनेवाले अपने पति के बुरा व्यवहार उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में शिथिलता पैदा करती है।

'जुलूस' में स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान होनेवाली हलचलों की कहानी है। इसमें कुछ लोग भाग लेने में असहमत हैं। इसका कारण यह रहा था कि उस दिन के भूख मिटाने को उन लोगों को काम पर चलना अनिवार्य रहा। समकालीन संदर्भ में तीन साल पहले कुछ अध्यापक गण अपने वेतन की कमी होने से उसे बढ़ाने का आह्वान करते हुए 'सेक्रेटेरियेट' में एक जुलूस चलायी थी। लेकिन सरकार तो इसके विरुद्ध ऐसा एक नियम लाया कि सभी अध्यापक गण को विद्यालय पर पूरा हाज़िर होना अनिवार्य है, अगर नहीं तो उनके वेतन पूर्ण रूप से कट जाएगी। इसलिए सारे अध्यापकगण जुलूस समाप्त करके काम पर चलने में विवश हो गये।

ब्रिटिश शासन काल में हर एक भारतीय को उन लोगों के गुलाम बनकर रहना पड़ा था। ब्रिटिश के गुलाम बनकर उनके आदेशों की पूर्ति करने की दुरवस्था को प्रेमचंद ने यहाँ दर्शाया है। भारत में अब यह हालत नहीं हैं- फिर भी अन्य कुछ देश में यह दुरवस्था अब भी चल रही है। 'जुलूस' के पुलिस दारोगा बीरबलसिंह भी अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए ही ऊँचे अफ्सर के आदेशों को अपना मन न चाहते हुए भी उसका पालन करने को विवश होना पड़ता था। क्योंकि वह अपनी नौकरी में आगे बढ़ना चाहता था। इसलिए ही वह सही या गलत का फरक समझे बिना अपने कामों में अटल रहने की कोशिश की। इस तरह हमारे समाज में भी 'प्रतिष्ठा' से सम्बंधित समस्याएँ खूब प्रचलित हैं।

'जुलूस' के पुलिस दारोगा बीरबलसिंह एवं उसकी पत्नी मिट्ठन बाई भी द्वन्द में पड़ जाते हैं। मन के विरुद्ध काम करने से बीरबल सिंह एवं अपने पति की इस प्रवृत्ति से दुःखित मिट्ठन में द्वंद्व पैदा हो जाती है। सरकारी नौकरों को अपने जीवन में यही हालत है कि उसे अपने ऊँचे अफसरों के आदेश सुनकर ही काम करना पड़ता है। अपने मनोविचार को वहाँ स्थान भी न मिलता है।

अस्सी साल पहले प्रेमचंद जिन समस्याओं से जूझते रहे वे समस्याएँ किसी न किसी रूप में अपने मूर्त रूप में हमारे सामने हैं। यही इस नाट्यरूपांतर को नव जीवन प्रदान करता है। इससे यह पूर्ण रूप से साबित हो जाता है कि जुलूस नाट्यरूपांतर अब भी प्रासंगिक है।

संदर्भ संकेत

1. सद्गति तथा अन्य नाटक, चित्रा मुद्गल, पृ. सं : 27
2. वही, पृ. सं : 29
3. वही, पृ. सं : 33
4. वही, पृ. सं : 33

शोध निदेशक - **डॉ.सी.एस.सुचित्त**
सह आचार्य
केरल विश्वविद्यालय

शोध छात्रा
केरल विश्वविद्यालय
कार्यवट्टम कैंपस, तिरुवनंतपुरम

ट्रांसजेंडर जीवन का खुला दस्तावेज़ : 'मैं पायल' और 'किन्नर कथा' उपन्यासों में

पद्मकुमार पी के

विमर्शों के चंगुल में फँसे आज के समाज का एक प्रश्न चिह्न है किन्नर माने ट्रांसजेंडर। वास्तव में ये कौन हैं? सोच की बात है; क्योंकि इनको हमारे समाज का हाशिएकृत वर्ग माना जाता है। पर ये मानव समाज का अंग होते हुए भी मनुष्य की सामान्य अवधारणा से ही वंचित हैं। किन्नरों की जो दुनिया हमारी नज़र के सामने है वह हज़ारों वर्षों की घृणा और उपेक्षा का परिणाम है। अचरज की बात है कि जननांग का विकलांग मनुष्य को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। जन्मजात इसी खामयाज उस शिशु को भुगतना पड़ता है, जो किन्नर के रूप में जन्म लेता है। अपनी माँ के अलावा अन्य कोई इसे एक आम आदमी के रूप नहीं मानते। कई संघर्षों से गुजरनेवाले ये बेचारे समाज के कई हकों से वंचित हैं। प्रगतिशील कहनेवाले आज का सुसभ्य समाज ट्रांसजेंडरों को मनुष्य का दर्जा न दे सका। ट्रांसजेंडर अभी भी समाज की मुख्यधारा में शामिल होने से कोसों दूर है।

हिन्दी साहित्य जगत में भी किन्नर उपेक्षित वर्ग की गणना में थे। परंतु कालचक्र के मोड से नए रचनाकार अपनी तूलिकाओं का प्रयोग इस हाशिएकृत वर्ग पर पड़े तो समाज में इसके प्रति संवेदना जाग उठी। मन की व्यथा साहित्य में प्रस्फुटित करने पर ट्रांसजेंडरों के रोज़मर्रा जीवन,उनकी विसंगतियों-विडंबनाओं का चित्र आम जनता की नज़र में आ गया।

समकालीन हिन्दी साहित्यकार अपनी तूलिका से सामाजिक गतिविधियों का संस्पर्श करते हैं। प्रदीप सौरभ, नीरजा माधव, डॉ अनुसूइया त्यागी, महेंद्र भीष्म, निर्मला भुराडिया, चित्रा मुद्गल जैसे समकालीन शानदार कथाकार अपनी कृतियों द्वारा ट्रांसजेंडर वर्ग का नग्न चित्र समाज के आगे प्रस्तुत करते हैं। उपन्यासकारों ने थर्ड जेडर समुदाय की जैविक, सामाजिक, राजनीतिक पक्षों को बहुत ही गहनता से प्रस्तुत किया है। इस परंपरा में आनेवाले प्रतिभा संपन्न, संवेदनशील, समाजसेवी साहित्यकार है श्री महेंद्र भीष्म।

महेंद्र भीष्म के उपन्यास 'मैं पायल' और 'किन्नर कथा' में ट्रांसजेंडर जीवन के यथार्थ तथ्यों का उद्घाटन करते हैं। एक ओर दोनों उपन्यासों में ट्रांसजेंडर जीवन का साम्य दिखाई पड़ते हैं तो दूसरी ओर वैषम्य भी। सामाजिक सरोकार का साकार रूप है 'मैं पायल' व 'किन्नर कथा'। मिलजुलकर रहनेवाले बहत्तर किन्नर समाज का विवरण 'मैं पायल' में है। 'गुरु माई के डेरे में लगभग दो दर्जन' ट्रांसजेंडर थीं। ढोलक बजानेवालों से लेकर स्ट्रेन स्वभाव वाले तीन-चार लोग हमेशा गुरु माई की सेवा में लगे रहते थे। किन्नरों में दो-एक छोड़कर सब स्वछंद यौन संबंधों में लिप्त थीं।"[1] टाँसजेंडर लोग डेरे में बसते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में रिया और तब्बसुम गुरु माई के चेले हैं जो किन्नरों की एजंट है। ये दोनों गुरु माई के लिए सारा का सारा काम करती है।

'मैं पायल' और 'किन्नर कथा' महेंद्र भीष्म के ऐसे उपन्यास हैं जो किन्नरों, लौंडबाजों, लेसबियन, उभयलिंगी समाज की दास्तां और उनके जीवन के दुख दर्द का खुलकर बयान करते हैं। इन दोनों उपन्यास अप्राकृतिक यौन संबंधों का विवरण देते हैं जिसका सजीव चित्र खींचने का प्रयास उपन्यासकर ने किया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से 'ट्रांसजेंडर' जीवन के प्रत्यक्ष तथ्यों को साहित्य की भाषा में उपन्यासकार ने यहाँ प्रस्तुत किया है। किन्नर जीवन के हरेक पहलुओं का

आंखों देखा चित्र कथाकार प्रस्तुत उपन्यासों द्वारा समाज के सामने रखते हैं।

पुरुष सत्तात्मक भारतीय समाज की मानसिकता का परिणाम है किन्नरों के प्रति भेदभाव या घृणा। एक माँ को अपनी हर संतान प्रिय होती है, चाहे वह लड़का हो, लड़की हो या फिर हिजड़ा। पर पुरुष अपनी झूठी मान-मर्यादा और पुरुषत्व से जोड़कर देखता है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में राजा जगत सिंह की पत्नी को हिजड़ा बच्चा पैदा होने पर वह भय से दाई निरंजना से कहती है -"काकी ! अब हमाई सबकी लाज तुमाए हाथन है। तुम तो दायजु के सुभाव जानती तो, कितेक गुसैल हैं वे, जा खबर तो वे बर्दाश्वानकर पेहें , तूमे जो रुपय्या पैसा चाउने हो, मैं तो मागी करो पर तूमे हे बात हां एकदम गुप्त रखने"[2] सोना की हिजड़ा होने की बात जब चार वर्ष बाद राजा जगत सिंह को पता चलता है तो सोना को मारना का आदेश देते हैं। इसका कारण है वही झूठी-मान मर्यादा।

झूठी शान और मान मर्यादा के कारण अपनी ही हिजड़ा संतान सोना की हत्या का विचार केवल राजा जगत सिंह का नहीं पूरी पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता को उजागर करता है, बल्कि भारतीय समाज की किन्नरों के प्रति घृणा एवं उपेक्षा को भी सामने लाता है। 'मैं पायल' उपन्यास के जुगुनी के पिता भी इस सोच के शिकार है "ये जुगुनी! हम क्षत्रिय वंश के कलंक पैदा हुई है , साली हिजड़ा है......।"[3] इतना ही नहीं लड़की की तरह वेश भूषा और मानसिक स्थिति वाली जुगनी को उसके पिता अपने पुरुषत्व को संतुष्ट करने और समाज के सवालों से बचने के लिए एक लड़के में रूपांतरित कर देते हैं "अब यह पैंट-शर्ट पहनेगी, लड़का बनकर रहेगी और उसका नाम जुगनू होगा। कोई भी इसे जुगनी नहीं बोलेगा .....अब यह मेरा बेटा है।"[4]

उपन्यासकार महेंद्र भीष्म अपने उपन्यासों के माध्यम से तथाकथित प्रगतिशील समाज का कुत्सित रूप उद्घाटित करते हैं। 'मैं पायल' के प्रौढ़ व्यक्ति मुच्छ्ड़ सिपाही और चौकीदार प्रमोद, तथा 'किन्नर कथा' के साहब सिंह राजपूत जैसे तमाम लोग हैं जो लड़कियों और स्त्रियों का शारीरिक शोषण करने के लिए हर गली 'चौराहों पर तैयार बैठे हैं। ऐसे लोगों से बचने का उपाय जुगनी नामक पात्र निकालती है' लड़के का रूप धरते ही मैं ने देखा कि मेरी ओर कोई भी नहीं देख रहा था। इतना बड़ा परिवर्तन! जो लड़की की ओर घूरते हैं वे लड़के की ओर ध्यान भी नहीं देते। ये युक्ति आगे के दिनों में बहुत काम आनेवाली थीं।"[5]

ट्रांसजेंडर के मानसिक संघर्ष का एक कारण है विस्थापन जो यत्र-तत्र 'किन्नर कथा' व 'मैं पायल' उपन्यासों में महेंद्र भीष्म विरचित करते हैं। घर में पहली बार जुगनी को विस्थापन का दर्द झेलना पड़ता है यही विस्थापन दर्द के शिकार हैं, किन्नर कथा के तारा और सोना। घर से निकलते समय सोना अबोध थी जिससे विस्थापन का दर्द छू न पाते। पर चौदह वर्ष की अवस्था में तारा परिवार द्वारा हिजड़ों को सौंप दी गयी थीं। उसे विस्थापन का दर्द ज़्यादा महसूस होता है।

ट्रांसजेंडरों के रहन-सहन में विभिन्नता दिखाई पड़ती है। ट्रांसजेंडर लोग अपने गुरु के साथ गुरु के डेरे में रहते हैं। गुरु माई किन्नरों के लिए आखिरी बात है। 'मैं पायल' के अंतिम भाग में इसका परामर्श है- "देर शाम गुरु माई के सामने हम सभी की पेशी हुई। मुझे देखते ही गुरु माई ने मुझे पास बुलाकर मेरा माथा चूमा और हाथ में सौ का नोट पकडाते हुए कहा, ले रख सगुन के हैं , तेरी पहली कमाई। मेरी मुट्ठी उपर करते हुए वह बोली, कितनी सोढ़ी लग रही है पायल।"[6] इससे पता चलता है कि ट्रांसजेंडर हमेशा अपने गुरु का गुलाम है। उपन्यास के यत्र-तत्र ट्रांसजेंडरों की बधाई टोली का परामर्श हुआ है। वे स्वयं दुख भोगकर दूसरों को सुखी व बधाई बना लेते हैं।

आजीविका कमाने के लिए हम नौकरी करते हैं। अधिकतर किन्नर सेक्स बिज़नस में लगे हैं। 'मैं

पायल' उपन्यास में इसका प्रमाण है 'बधाई टोली से जो रुपया' पैसा जेवर मिलता है वह गुरु माई के सुपुर्द कर दिया जाता। गुरु माई उसीमें कुछ इनाम स्वरूप हम लोगों को बाँट देती और एक बड़ा हिस्सा अपने पास रख लेती।"[7] इससे हमें मालूम हो जाता है कि इस उपन्यास के किन्नरों का मुख्य काम-धंधा बधाई टोली चलाना है।

किन्नर सामान्य मनुष्य के रूप में जीना चाहता है, परिस्थितियाँ उसे अलग रास्ते पर ले जाता है। डेरे का जीवन उसके दृष्टिकोण को बदल देता है। जुगनी या पायल इससे निकलने में सफल होती है। वह समाज के कटी हुई किन्नरों की दुनिया में नहीं रहना चाहती, जहाँ का जीवन कुत्सित है और लोग भी घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

किन्तु 'किन्नर कथा' उपन्यास में उपन्यासकार ने किन्नरों को अलग रूप में पेश किया है। असली और नकली हिजड़ों के माध्यम से कथाकार हिजड़ों के जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्फुटित करते हैं। हिजड़ों के जीवन की कुरूपताएँ -विसंगतियाँ इस उपन्यास में उल्लेखित करते हैं। तारा का डेरा इसका अपवाद है। उस डेरे में रहनेवाले हिजड़े अपनी पसंद की ज़िंदगी व्यतीत करते हैं। तारा ने अपने डेरे के दो हिजड़ों का लिंग परिवर्तन करता, उन्हें स्त्री रूप प्रदान कर उनका विवाह भी करा दिया था। कुल हिजड़ों में तीस प्रतिशत हिजड़े ऐसे हैं, जिन्हें ऑपरेशन द्वारा स्त्री या पुरुष बनाया जाता है। तारा ने चंदा के लिए भी यही स्वप्न सँजो रखता था। उसका ऑपरेशन कर वह उसे सम्पूर्ण स्त्री के रूप में देखना चाहती थी। तारा चंदा के लिए वर देखकर उसका विवाह करा देने के लिए दृढ़ संकल्पित थी"[8] इतनी ही नहीं तारा हिजड़ों के अधिकारों के लिए संघर्ष भी करती है।

'मैं पायल' उपन्यास के ज़रिए महेंद्र भीष्म ने जुगनी के माध्यम से नए हस्ताक्षर किए, वह ट्रांसजेंडर जीवन को हाशिए से मुख्य धारा में आने के मील का पत्थर जैसा है। ट्रांसजेंडरों को भी सामान्य जीवन जीने का मौका मिलना चाहिए। इसकी शुरुआत किन्नर शिशु के परिवार से ही हो सकती है।

महेंद्र भीष्म अपने दोनों उपन्यासों के माध्यम से ट्रांसजेंडर जीवन के दो पहलुओं का चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। 'किन्नर कथा' में सोना और सोना जैसी किन्नर ऑपरेशन से सामान्य स्त्री का जीवन व्यतीत करती है और विवाह माध्यम से वे हाशिए से समाज के मुख्य धारा का अंग बन जाती है। 'मैं पायल' में जुगनी आरक्स्ट्रा, आकाशवाणी और दूरदर्शन के माध्यम से सामान्य जीवन को अपनाने का प्रयास करती है। भले ही बाद में वह किन्नरों के हितों के लिए किन्नर गुरु बनती है। यहाँ उपन्यासकार ने संवेदनशीलता के साथ ट्रांसजेंडरों को समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया है क्योंकि ट्रांसजेंडर आज भी ऐसा जीवन व्यतीत करता है जिसके प्रति मानव की दृष्टि न पड़ी। इसके लिए एक ही उत्तर ही है मनोभाव या दृष्टिकोण। यदि हमारा मनोभाव बदले तो ज़रूर ट्रांसजेंडर आम आदमी जैसे बनेंगे। यदि हम उनके प्रति सहानुभूति दें, संवेदनशीलता दिखाएँ, अवसर प्रदान करें तो ज़रूर ट्रांसजेंडर भी सामान्य मनुष्य जैसा जीवन यापन करेंगे और समाज की मुख्य धारा में शामिल होकर समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक बन जाएँगे।

संदर्भ ग्रंथ :

1. महेंद्र भीष्म -मैं पायल पृ सं 99
2. महेंद्र भीष्म -किन्नर कथा पृ सं16
3. महेंद्र भीष्म -मैं पायल पृ सं26
4. वही पृ सं 32
5. वही पृ सं 54
6. वही पृ सं 98
7. वही पृ सं 98
8. महेंद्र भीष्म - किन्नर कथा - पृ सं60

शोधार्थी

यूनिवेर्सिटी कॉलेज , तिरुवनन्तपुरम

धूमिल की जनतांत्रिक दृष्टि

डॉ भावना मल्होत्रा

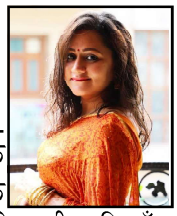

शोध सार : सुदामा पांडेय 'धूमिल' हिंदी कविता के उन विरले कवियों में हैं जिन्होंने कविता को जनतंत्र और आम आदमी की जिजीविषा से जोड़ा। उनकी रचनाएँ सत्ता, राजनीति और समाज की विसंगतियों पर गहरी चोट करती हैं। धूमिल की कविताओं में भाषा केवल सहजता और सौंदर्य का नहीं, बल्कि प्रश्नों और प्रतिरोध का माध्यम है। उनकी जनतांत्रिक दृष्टि इस तथ्य पर आधारित है कि लोकतंत्र तभी सार्थक है जब उसमें शोषित, उपेक्षित और हाशिए पर खड़े वर्ग की आवाज़ को स्थान मिले।

इस शोधपत्र का उद्देश्य धूमिल की कविताओं में जनतांत्रिक चेतना के विभिन्न आयामों को उजागर करना है जैसे लोकतंत्र की विडंबनाएँ, राजनीतिक भ्रष्टाचार की आलोचना और जनता की अपेक्षाओं तथा आकांक्षाओं की अभिव्यक्तियह स्पष्ट करता है कि धूमिल का काव्य न केवल व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाता है, बल्कि जनसामान्य की ओर से बोलते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनः स्थापना की मांग करता है।

बीज शब्द : जनतंत्र, आस्था, मोहभंग, मानवीयता, आत्मसंघर्ष, अंतर्द्वंद्व, लोकतांत्रिक मूल्य

आलेख : हिन्दी कविता में स्वतंत्रता से लेकर आज तक 'जनतंत्र' को अनेक कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाया है। जनतंत्र सीधे तौर पर भारतीय 'जन' के जीवन को प्रभावित करने वाला कारक है। जन सामान्य के जीवन को प्रत्यक्षतः प्रभावित करने वाली इस शासन व्यवस्था पर कवियों की पैनी दृष्टि रही है और समय व परिस्थिति में आए परिवर्तनों के अनुसार कवियों की अभिव्यंजना में भी परिवर्तन आता रहा है। प्रकारांतर में 'जनतंत्र' को लेकर कवियों की अभिव्यक्तिऔर तेवर में जो परिवर्तन परिलक्षित होता है उससे देश के साधारण जन की स्थितियों का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। 'धूमिल' भी इस संबंध में अपवाद नहीं है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के प्रखर कवि धूमिल की कविताओं में जन सामान्य के केवल सुख-दुख ही नहीं, उनकी नियति से भी सरोकार मिलता है। जनतांत्रिक व्यवस्था वाले भारत देश में जनता की स्थिति का जायज़ा वह लेते हैं। वह पाते हैं कि लंबे संघर्ष के बाद मिली आज़ादी और जनतांत्रिक व्यवस्था स्थापित होने के बावजूद इस देश की अधिकाँश जनता वंचित है और शोषित है। जनता की, जनता द्वारा व जनता के लिए होने वाली शासन प्रणाली के बावजूद 'जनता' ही जीवन की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी असमर्थ है। यह स्थिति उस भारत देश की है जिसका संविधान बिना किसी भेदभाव के सभी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, लिंग के लोगों को समान अधिकार व अवसर प्रदान करना सुनिश्चित करता है। फिर भी, वह पाते हैं कि ग़रीब और ग़रीब हो रहा है। जिसके पास पूँजी है, शक्तिहै वह निरंतर विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है किन्तु ज़रूरतमंद अवसर की तलाश में भटक रहा है और उसकी तकलीफ़ें दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं।

तत्कालीन सामाजिक स्थितियों का गहन प्रभाव उनकी कविताओं पर दृष्टिगत होता है। युगीन परिस्थितियों की उथल-पुथल के प्रभावस्वरूप उनकी कविताओं में हलचल देखी जा सकती है। उनकी काव्यदृष्टि का आधार व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी। सामाजिक स्थितियों की विडंबनाओं के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने मनुष्य को देखा और उनकी समस्याओं को समझा है। उनके काव्य का परिवेश और समय वह है जिसमें आम व्यक्ति की आकांक्षाएँ टूट रही थीं, आज़ादी से जुड़े स्वप्न, स्वप्न के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गए थे, राजनीति अपने मूल्यों और प्रतिबद्धताओं से विलग हो रही थी। कुर्सी की जोड़-तोड़ में आम-आदमी का जीवन प्रभावित हो रहा था। साधन हीनता बढ़ रही थी। विविध राजनीतिक-सामाजिक घटनाओं से देश और देशवासियों को लाभान्वित करने वाली योजनाएँ विफल हो रही थीं, निर्धनता, बेरोज़गारी जैसी समस्याओं का कोई ठोस समाधान नहीं मिल रहा था ।

'धूमिल' ने सातवें दशक में होने वाले राजनीतिक मूल्यों के विघटन और जनता के मोहभंग को अपनी कविता का विषय बनाया और राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक विसंगतियों को अभिव्यक्तिदी। देश के राजनैतिक-सामाजिक यथार्थ को उसके वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया। अपने समय के राजनीतिक चरित्र को उजागर किया

और इस क्रम में जनता, जनतंत्र, संसद, चुनाव, योजनाएँ, रोज़गार जैसे शब्द उनकी कविताओं में बारंबार प्रयुक्त हुए। इन शब्दों की पुनर्प्रयुक्ति उनकी उस मानसिकता का परिणाम है जो आज़ाद भारत देश के कई लोगों की कठिनाइयों, शोषण और दयनीय दशा को देखकर व व्यक्तिगत जीवन के कटु अनुभव से बनी। सत्ता में स्थापित लोगों की कुर्सीप्रियता, भाषणबाजी, खोखले नारे, आम-आदमी की उपेक्षित स्थिति का सीधा साक्षात्कार उन्होंने अपनी कविताओं में किया। आज़ादी के लगभग 15-20 वर्षों बाद भी हर ओर से निराश आम-आदमी की समस्याओं को समझा और कटु शब्दों में उसकी आलोचना की। संसदीय अव्यवस्था के लिए ज़िम्मेदार लोगों पर प्रहार करते हुए उन्होंने अनेक कविताएँ लिखी। आज़ादी के वास्तविक मायने क्या हैं? जनतंत्र का अर्थ क्या है? जनतंत्र में जनता की स्थिति क्या है? इन प्रश्नों ने उनकी कविताओं में बारंबार स्थान पाया है :- 'क्या आज़ादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है/जिन्हें एक पहिया ढोता है/या इसका कोई खास मतलब होता है।[1] या जनता क्या है?/एक भेड़ है / जो दूसरों की ठण्ड के लिए/अपनी पीठ पर उनकी फ़सल ढोती है।[2]

जनता, आम-आदमी धूमिल की कविता का केन्द्रीय चरित्र है। यह वह आदमी है जिसका कोई विशेष वर्ग, वर्ण, धर्म, संप्रदाय, जाति नहीं है। वह बस 'आदमी' है। वह आदमी जिसकी इच्छा आज़ाद भारत में चैन से जीने की है, जो भूखे पेट सोना नहीं चाहता, जो एक सुरक्षित छत चाहता है। यह वह आदमी है जो मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरंतर संघर्ष करता है, यातनाएँ सहता है, हड्डियाँ घिस कर मेहनत करता है और अंततः उसकी स्थिति उस भेड़ की सी हो जाती है जिसकी उन दूसरों को उष्मा पहुँचाने के काम आती है। उनकी कविताओं में आज़ादी, जनतंत्र, संसद, जनता जैसे शब्दों की पुनरावृत्ति इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उनकी काव्यदृष्टि का मूलाधार 'संसद' और 'सड़क' से निर्मित है।

अपनी कविताओं के माध्यम से धूमिल ने आज़ाद देश के उत्साहित नागरिकों की आशाओं का गहराई से साक्षात्कार किया है। जनता के जीवन से जुड़ी विवशताओं की सही पहचान कर उसे नग्न रूप में प्रस्तुत किया है। जनता की पक्षधरता उनकी कविताओं के मूल में है। स्वातंत्रयोत्तर भारत में राजनीतिक विसंगतियों पर उनकी पैनी दृष्टि रही है। देश के तमाम युवाओं की तरह 'धूमिल' की भी दृष्टि 'जनतांत्रिक व्यवस्था' को सर्वोत्तम व्यवस्था के रूप में देखती है। इसीलिए जनतंत्र में जनता के हितार्थ जब कुछ फलीभूत होता नहीं दीखता तो वह विरोध करते हैं। उनकी कविता जन-विरोधी नीतियों पर प्रहार करती है। 'जनतंत्र' के नाम पर नेताओं की दिखावटी प्रवृत्ति के प्रति तीक्ष्ण आक्रोश वहाँ दिखाई देता है। युगीन यंत्रणा व पाशविकता से परिचित होते हुए भी धूमिल निराश नहीं होते। अपना ध्यान उन मुद्दों व समस्याओं पर केन्द्रित करते हैं जो जनतंत्र में जनता की दुर्दशा के लिए ज़िम्मेदार हैं। इस क्रम में वह 'संसद' व 'सड़क' के बीच की दूरी का साक्षात्कार करते हैं और जानने का प्रयास करते हैं कि 'जनतंत्र' वास्तव में किसका है सत्ता का या जनता का? इस प्रक्रिया में उनकी राजनीतिक चेतना महती भूमिका निभाती है।

अपनी राजनीतिक समझ के आधार पर जनतंत्र के नाम पर होते छलावे को समझ आम-आदमी को वह सचेत करना चाहते हैं। अतः राजनीतिक स्थितियों को नए कलेवर में प्रस्तुत करते हैं। वह देखते हैं कि राजनीति में, समाज में सभी का विवेक चुक रहा है। राजनेता कुर्सी व सत्ता के लोभ में जनता को भुला रहे हैं और जनता छोटी-छोटी सुविधाओं के लिए विवश होकर चापलूसी करने को विवश है। अपनी भूख से लड़ते-लड़ते मूल साधन जुटाते-जुटाते इतनी थक गई है कि अब समझौता करने को मजबूर है। पेट में भूख के कारण मची क्रान्ति को शान्त करने हेतु रोज़गार की तलाश में दर-दर भटकते हुए और किसी क्रान्ति की बात सोच भी नहीं सकती है। सम्पूर्ण व्यवस्था का दारोमदार सत्ता के हाथ में है और सत्ता जनता को विकास, परिवर्तन का लोभ देकर कठपुतली की तरह नचा रही है।

'धूमिल' यह पाते हैं कि व्यक्ति और व्यवस्था के बीच रिक्तता आ गई है। 'संसद' को 'सड़क' से कुछ ख़ास सरोकार नहीं है। सत्ता में स्थापित लोग संपन्न, विपन्न सभी को एक ही दृष्टि से देखते हैं। फलतः जन साधारण की, ज़रूरतमंदों की जीवनशैली में कोई परिवर्तन नहीं आता। वह अनुभव करते हैं कि संसद और सड़क के बीच गहरी खाई है और जनतंत्र जनता की नहीं सत्ता की बपौती बनकर रह गई है। राजनैतिक वर्ग की मूल्यहीनता, कुर्सीप्रियता, चरित्रहीनता, संवेदनशून्यता जनतंत्र को एक हथियार की तरह प्रयुक्त करती है। जनतंत्र के नाम पर आम-आदमी को बरगलाने का प्रयास सामान्य हो गया है।

'जनतंत्र' की रोज़ सैंकड़ों बार हत्या होती है और फिर भी यह व्यवस्था बाहर से सजी-धजी स्वस्थ तैयार मिलती है :- "और हवा में एक चमकदार गोल शब्द/फेंक दिया है 'जनतंत्र'/जिसकी रोज़ सैंकड़ों बार हत्या होती है /और हर बार/वह भेड़ियों की ज़ुबान पर ज़िन्दा है।"[3]

जनतांत्रिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए बने केंद्र 'संसद' में सत्तासीन लोगों को जब धूमिल स्वार्थ भावनाओं से पूरित देखते हैं तो जनतांत्रिक देश में विकास के तथाकथित कर्णधारों की भूमिका पर प्रहार करते हैं। उनका स्वर उन लोगों के चेहरों को बेनकाब करता है जो जनतंत्र को सत्ता तक सीमित करने के लिए हर संभव कुटिल प्रयास करते हैं। जो 'जनतंत्र' में जनता की हिस्सेदारी को 'मतदान' तक सीमित करने के पश्चात् उन्हें पूर्णतः नज़रंदाज़ करते हैं और इस प्रकार जनतंत्र जनता का नहीं सत्ता का होकर रह जाता है। 'जनतंत्र' जन सामान्य से ही अलग हो जाता है और देश की जनता 'निरर्थक' शब्द के अतिरिक्तकुछ और नहीं रह जाती :- "और यह मेरे देश की जनता है/जनता क्या है?/एक शब्द/सिर्फ एक शब्द है/कुहरा और कीचड़ और काँच से/बना हुआ।"[4]

जनता के जनतंत्र वाले देश में जनता की कीचड़ व कुहरे सदृश स्थिति उस प्रश्न के उत्तर के रूप में सामने आती है कि जनतंत्र सत्ता का है या जनता का। क्योंकि जन समुदाय की जीवन स्थिति उस कटु सत्य का प्रमाण है जिसमें कुछेक लोग 'सड़क' को रौंदते चले जा रहे हैं और जनता मात्र नए षड्यंत्रों का शिकार हो रही है। यहाँ जनता का कोई तंत्र नहीं है, जनतांत्रिक व्यवस्था कवि धूमिल की दृष्टि में देश के लोगों को फुसलाने का एक बहाना मात्र है। इस व्यवस्था से धूमिल का चोटिल व क्रोधित होना उस मोहभंग या स्वप्नों के टूटने का परिणाम है जिन्हें हथियार बनाकर हर बार जनता को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए प्रयोग किया जाता है। जनता सामाजिक व्यवस्था और व्यक्तिगत जीवन में सुधार की अपेक्षा करके सत्ता में रहने वाले लोगों पर विश्वास करती है और उम्मीद करती है कि आज़ादी के बाद, जनतंत्र आने के पश्चात् उसकी जीवन स्थितियों में बेहतरी आएगी। लोगों को रहने के लिए घर, खाने को रोटी और शिक्षा जैसी सुविधाएँ प्राप्त होंगी। किन्तु उनके हाथ निराशा लगती है और जनतंत्र का खोखलापन सामने उपस्थित हो जाता है :- "मैंने इंतज़ार किया-/अब कोई बच्चा/भूखा रहकर स्कूल नहीं जाएगा।/अब कोई छत/बारिश में नहीं टपकेगी।/मैं इंतज़ार करता रहा / इंतज़ार करता रहा/जनतंत्र, त्याग, स्वतंत्रता,/संस्कृति, शांति, मनुष्यता/ये सारे शब्द थे/सुनहरे वादे थे/खुशफ़हम इरादे थे।"[5]

धूमिल मानते हैं कि अपना जनतंत्र वास्तविक जनतंत्र नहीं है क्योंकि इस लोकतंत्र में असमानता व्याप्त है। विकास, सुविधाएँ समाज के सभी वर्गों तक समान रू प में नहीं पहुँची हैं। योजनाओं, सुविधाओं, विकास के साधनों का वितरण असमान है। कागज़ों पर किए जाने वाले विकास कार्यों का क्रियान्वयन नहीं हो रहा। नवस्वतंत्र देश में संविधान निर्माण व जनतान्त्रिक व्यवस्था द्वारा देश में संप्रभुता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय, समान अवसर व स्वतंत्रता की जो बात कही गई उसे व्यवहार में पूर्णतः नहीं लाया जा सका है। सत्तारूढ़ दल द्वारा समाजवाद लाने का सुनहरा ख़्वाब जो 'जनतंत्र' की सर्वेसर्वा जनता को दिखाया गया वह वास्तव में अपनी कमियों को छिपाने का एक माध्यम मात्र है। इस देश का समाजवाद बाहर-भीतर अलग है अर्थात् जैसा दिखता है वास्तव में वैसा नहीं है। जनता के भीतर पनपती असंतोष की अग्नि को शांत करने का एक उपाय है जो सत्ताधारियों ने अख्तियार कर लिया है। धूमिल इसे एक आधुनिक मुहावरा कहते हैं जिसे दोहरा कर सत्तारूढ़ या सत्तालोलुप वर्ग अपना सुरक्षा घेरा बनाता है :- 'भूख और भूख की आड़ में/चबायी गयी चीज़ों का अक्स/उनके दाँतों पर ढूँढना /बेकार है। समाजवाद/उनकी जुबान पर अपनी सुरक्षा का/एक आधुनिक मुहावरा है/मगर मैं जनता हूँ कि मेरे देश का समाजवाद/मालगोदाम में लटकती हुई /उन बाल्टियों की तरह है जिस पर 'आग' लिखा है/और उनमें बालू और पानी भरा है।

धूमिल के तेवर जनतंत्र में जनता की अनदेखी होते देख आक्रामक हो जाते हैं। वह पाते हैं कि 'समाजवाद' चंद लोगों तक सीमित हो गया है, उसके नारे जोर-शोर से अवश्य दिए जा रहे हैं लेकिन उसमें जनता की भागीदारी नगण्य है। सत्ताधारी और पूँजीपति वर्ग की साँठ-गाँठ के कारण पूँजीपति वर्ग ने देश में आज़ादी के बाद तथाकथित समाजवादी व्यवस्था के होते हुए भी दिन दूनी व रात चौगुनी तरक्की की है। इस तरक्की की पृष्ठभूमि में मजदूर, किसान, निम्न वर्ग का शोषण किया गया है। देश में भुखमरी, अकाल जैसी स्थितियों में दम तोड़ते, मजबूर होते मनुष्य को देख कर भी अपने मालगोदामों को मुनाफ़े के लिए अनाज से भर कर रखा। समाजवाद का दम भरने वाले

इस देश में दयनीय स्थितियों में विवश होकर जीते निम्न वर्ग का निरंतर शोषण हुआ फिर भी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में यह वर्ग सदैव उपेक्षित रहा :- "वहाँ बंजर मैदान/कंकालों की नुमाइश कर रहे थे/गोदाम अनाज से भरे पड़े थे और लोग/भूखों मर रहे थे/मैंने महसूस किया मैं वक्त के/एक शर्मनाक दौर से गुज़र रहा हूँ।

अपनी कविताओं में धूमिल देश की व्यवस्था का संचालन करने वाली 'संसद' से जनता की रोटी छीन कर, भूख से खेलने वाले व्यक्तिके सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं। लेकिन प्रश्न के उत्तर में संसद मौन रहती है क्योंकि वह जानती है कि सत्ता में पहुँचे लोग वही हैं जो कुर्सीलोलुप हैं। जनतंत्र में जनता के लिए इस समस्या का समाधान करने हेतु सत्ता में भेजे गए प्रतिनिधियों का ध्यान 'स्व' तक केन्द्रित है। परिणामतः जनतांत्रिक व्यवस्था होने के बावजूद न वर्ण-वर्ग भेद मिटा है न ही सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। एक ही उम्र में दो अलग वर्ग के लोगों की स्थितियाँ भिन्न हैं। "एक ही उम्र में माँ का चेहरा झुर्रियों की झोली बन गया है/ और उसी उम्र में पड़ोसी की महिला के चेहरे पर प्रेमिका के चेहरे सा लोच है।"

धूमिल भूख की विभीषिका से भली-भाँति परिचित थे। उनका मानना था कि ग़रीबी और शोषण की स्थिति देश में चारों ओर है। 'रोटी' जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसलिए राजनेता वर्ग गरीब को और उसकी रोटी को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाता है। वह जानता है कि क्रोध कितना भी हो, क्रान्ति का रूप नहीं ले पाएगा। भूखा व्यक्तियदि आवाज़ उठाएगा तो 'रोटी' के लिए ताकि अपना व अपने परिवार का पेट भर सके। रोटी की चाह में जीवन की अन्य विषमताओं और विसंगतियों पर उसका ध्यान नहीं जाएगा। सामान्यतः देखें तो लगता है कि अपने देश की जनतांत्रिक व्यवस्था में उनकी किंचित् भी आस्था नहीं रह गई है। किन्तु यदि विचार किया जाए तो धूमिल की 'आस्था' (कि क्रान्ति द्वारा, या आवाज़ उठा कर जनता की स्थितियाँ परिवर्तित हो सकती हैं) जनतंत्र की ही देन है। इसलिए वर्तमान जनतांत्रिक व्यवस्था के प्रति उनमें नकार का भाव मिलता है और अपनी कविताओं के लिए 'दूसरे प्रजातंत्र की तलाश' वह करते हैं। दूसरे प्रजातंत्र की यह तलाश, क्रान्ति का आह्वान, विरोध जताने की आज़ादी, विद्रोह करने की स्वतंत्रता भी एक जनतंत्र में ही संभव है। यही कारण है कि तमाम समस्याओं, नकारात्मकताओं के बावजूद धूमिल की उम्मीद नहीं टूटती और नई राहों की तलाश करती है :- "दुखी मत हो। यही मेरी नियति है।/मैं हिंदुस्तान हूँ। जब भी मैंने /उन्हें उजाले से जोड़ा है/उन्होंने मुझे इसी तरह अपमानित किया है/इसी तरह तोड़ा है। मगर समय गवाह है/कि मेरी बेचैनी के आगे भी राह है।"[8]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि धूमिल की कविताओं को पढ़ने पर भारतीय जनतान्त्रिक देश में आम-आदमी की तंगहाली, शोषित जीवन स्थितियों का पता चलता है। उनकी दृष्टि उसी आम-आदमी की पीड़ा पर केन्द्रित है जो बहुलता में है। जब मुट्ठी भर संपन्न और सत्ता में व्याप्त लोगों द्वारा देश की रीढ़ किसानों, मजदूरों, गरीबों, बेरोज़गारों, रोटी को तरसते लोगों पर शोषण होता वह देखते हैं तो पूर्णतः उस शोषित वर्ग के पक्ष में जा खड़े होते हैं और स्वतंत्रता के दो दशक बीत जाने पर भी उनकी अपरिवर्तित स्थितियाँ उन्हें विचलित करती हैं। देश में विकास हेतु बनी योजनाएँ या भौतिक तरक्की उनकी दृष्टि में महत्त्वहीन हो जाती है। जन सामान्य की पीड़ा को वह समझते हैं क्योंकि उनके व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने स्वयं उस कमी, पीड़ा को देखा भोगा था। उनका वही अनुभव जन सामान्य के जीवन सत्य से साझा होकर अभिव्यक्तहुआ है। धूमिल की कविताएँ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विषमताओं से जुड़े भयावह यथार्थ को उसी रूप में सामने लाती हैं। यही कारण है कि जनतंत्र उनकी कविताओं में उस स्थिति में दिखायी देता है जहाँ वह जनता के नहीं सत्ता के पक्ष में है।

सन्दर्भ

1. संसद से सड़क तक,
   सुदामा पाण्डेय धूमिल, पृष्ठ संख्या-10
2. वही, पृष्ठ संख्या - 104
3. वही, पृष्ठ संख्या - 43
4. वही, पृष्ठ संख्या - 104
5. वही, पृष्ठ संख्या - 100 -101
6. वही, पृष्ठ संख्या - 126
7. वही, पृष्ठ संख्या - 108
8. वही, पृष्ठ संख्या 120

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविध्यालय, दिल्ली 110054

भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत

डॉ अजय कुमार शर्मा

सारांश (Abstract): भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत, ये दोनों ही अपने-अपने क्षेत्रों में ज्ञान के अद्वितीय स्रोत हैं। भगवद्गीता, भारतीय दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपरा का अभिन्न हिस्सा है, जिसमें जीवन, धर्म, और आत्मा के रहस्यों पर गहराई से चर्चा की गई है। यह ग्रंथ न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि एक दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। गीता के संदेश आत्म-ज्ञान, कर्म, और मानव जीवन के मूल उद्देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

दूसरी ओर, क्वांटम सिद्धांत आधुनिक विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जो सूक्ष्मतम कणों के व्यवहार और उनके आपसी संबंधों को समझने का प्रयास करती है। यह सिद्धांत भौतिक वास्तविकता की प्रकृति, ऊर्जा और पदार्थ के बीच के संबंध, और प्रेषण की भूमिका पर प्रकाश डालता है। यह आधुनिक विज्ञान और तकनीकी प्रगति का आधार बन चुका है, और इसके सिद्धांतों ने हमारे ब्रह्मांड के प्रति दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया है।

इस शोध का उद्देश्य इन दोनों क्षेत्रों के बीच मौजूद समानताओं और अंतर्संबंधों की जांच करना है। क्या ये दोनों दृष्टिकोण एक-दूसरे के पूरक हैं? क्या आध्यात्मिक ग्रंथों में वर्णित सिद्धांत आधुनिक विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को समझने में सहायक हो सकते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का यह एक प्रयास है।

मुख्य शब्द (Keywords): भगवद्गीता, क्वांटम सिद्धांत, चेतना (Consciousness), ब्रह्मांडीय एकता (Cosmic Unity), आत्म-ज्ञान (Self-realization), अनिश्चितता सिद्धांत(Uncertainty Principle), एंटैंगलमेंट (Quantum Entanglement)

भगवद्गीताः एक संक्षिप्त परिचय

भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व का एक अंश है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच का संवाद शामिल है। यह संवाद केवल धर्मयुद्ध के संदर्भ में नहीं है, बल्कि जीवन के हर पहलू पर लागू होता है। गीता 700 श्लोकों में विभाजित है, जो 18 अध्यायों में संगठित हैं। इसमें ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग और ध्यानयोग जैसे मार्गों का वर्णन किया गया है।

भगवद्गीता का मूल संदेश 'निष्काम कर्म' का है, जो यह सिखाता है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी फल की चिंता के करना चाहिए। इसमें आत्मा की अमरता, माया का सिद्धांत, और परमात्मा के साथ आत्मा के संबंध का विवरण मिलता है। गीता यह भी बताती है कि हर व्यक्तिके भीतर दिव्यता का निवास है, और ध्यान व योग के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है।

गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। इसका ज्ञान हर युग और समाज के लिए प्रासंगिक है।

भगवद्गीता की सार्वभौमिकता का प्रमाण इस बात से मिलता है कि यह न केवल भारतीय संस्कृति में बल्कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में भी मान्यता प्राप्त है। यह ग्रंथ व्यक्तिगत आत्मा और ब्रह्मांडीय चेतना के बीच संबंध को समझने का प्रयास करता है, जो इसे क्वांटम सिद्धांत के कुछ पहलुओं के साथ जोड़ने में सहायक बनाता है।

क्वांटम सिद्धांतः एक परिचय

क्वांटम सिद्धांत भौतिकी की एक ऐसी शाखा है जो सूक्ष्म कणों की प्रकृति और उनके व्यवहार का अध्ययन करती है। इसका आरंभ 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ, जब वैज्ञानिकों ने पाया कि न्यूटन के नियम सूक्ष्म स्तर पर काम नहीं करते। इसका मुख्य आधार यह है कि पदार्थ और उर्जा अपने सूक्ष्मतम स्तर पर कण और तरंग दोनों की प्रकृति धारण करते हैं।

1.**ड्यूलिटी (कण-तरंग द्वैतता):** पदार्थ और प्रकाश दोनों में कण और तरंग के गुण पाए जाते हैं। इसका प्रमाण

'डबल-स्लिट प्रयोग' के माध्यम से हुआ, जिसने दिखाया कि इलेक्ट्रॉन जैसे कण भी तरंग की तरह व्यवहार कर सकते हैं।

2.**अनिश्चितता का सिद्धांतः** वर्नर हाइजेनबर्ग के इस सिद्धांत के अनुसार, किसी कण की स्थिति और वेग को एक साथ पूरी सटीकता से नहीं मापा जा सकता। यह अनिश्चितता ब्रह्मांड के सूक्ष्म स्तर की मौलिक प्रकृति को दर्शाती है।

3.**सुपरपोजिशनः** क्वांटम स्तर पर कण एक समय में कई अवस्थाओं में हो सकते हैं। इसका प्रमुख उदाहरण 'श्रॉडिंगर की बिल्ली' का विचार प्रयोग है, जिसमें एक कण की स्थिति प्रेक्षण से पहले अनिश्चित रहती है।

4.**संबद्धता (एंटैंगलमेंट):** जब दो कण आपस में जुड़ जाते हैं, तो उनकी अवस्थाएँ एक-दूसरे पर निर्भर हो जाती हैं, भले ही वे अंतरिक्ष में कितनी भी दूर हों। यह क्वांटम यांत्रिकी का सबसे रहस्यमय और चर्चित पहलू है।

क्वांटम सिद्धांत का प्रभावः

क्वांटम यांत्रिकी ने भौतिकी, रसायन, और प्रौद्योगिकी में क्रांति ला दी है। इसका उपयोग अर्धचालक, लेजर, क्वांटम कंप्यूटर, और संचार तकनीकों में हो रहा है। यह हमारे ब्रह्मांड की मूलभूत संरचना को समझने में मदद करता है और वास्तविकता की नई व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है।

भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत के बीच समानताएँ

1. वास्तविकता की प्रकृति : क्वांटम सिद्धांत के अनुसार, वास्तविकता संभाव्य तरंगों के रूप में विद्यमान है और प्रेक्षण के समय ही यह एक निश्चित रूप लेती है। भगवद्गीता में भी माया का सिद्धांत इसी विचार को प्रतिध्वनित करता है, जिसमें कहा गया है कि यह संसार एक भ्रम है और वास्तविकता केवल ब्रह्म है। श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि जो कुछ दिखाई देता है, वह मात्र बाहरी आवरण है; सत्य इससे परे है।

2. प्रेक्षक का महत्व : क्वांटम यांत्रिकी में प्रेक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। किसी घटना को देखने मात्र से ही उसका परिणाम बदल सकता है। यह 'वेधन का प्रभाव' (Observer Effect) कहलाता है। भगवद्गीता में भी आत्मा को 'साक्षी' के रूप में वर्णित किया गया है, जो सभी क्रियाओं का निरीक्षण करती है, परंतु उनमें लिप्त नहीं होती। यह 'द्रष्टा' और 'कर्ता' के भेद को स्पष्ट करता है, जो चेतना और ब्रह्मांड के बीच संबंध को समझने में सहायक है।

3. ऊर्जा और पदार्थ : क्वांटम सिद्धांत में उर्जा और पदार्थ को अलग नहीं माना जाता; दोनों एक ही मूलभूत वास्तविकता के विभिन्न रूप हैं। भगवद्गीता में भी यह विचार मिलता है कि हर जीव और वस्तु एक ही दिव्य ऊर्जा का हिस्सा है। श्रीकृष्ण कहते हैं, 'मैं इस सृष्टि की उत्पत्ति और इसका विनाश दोनों हूँ।' यह ब्रह्मांड की एकता और इसके अदृश्य स्रोत की ओर संकेत करता है।

4. अनिश्चितता और कर्म : क्वांटम सिद्धांत में हाइजेनबर्ग का अनिश्चितता सिद्धांत कहता है कि हम किसी कण की स्थिति और वेग को एक साथ पूर्ण रूप से नहीं जान सकते। इसी प्रकार, भगवद्गीता में भी कर्म और उसके फल की अनिश्चितता का वर्णन किया गया है। श्रीकृष्ण अर्जुन को सिखाते हैं कि मनुष्य को केवल अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, परिणाम की चिंता किए बिना। यह विचार 'निष्काम कर्म' का मूल है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अनिश्चितता के सिद्धांत के समान है।

5. अद्वैत और जुड़ाव : क्वांटम सिद्धांत में 'संबद्धता' (Entanglement) का विचार कहता है कि दो कण, चाहे कितनी भी दूरी पर हों, एक-दूसरे के साथ जुड़े रहते हैं। भगवद्गीता में भी अद्वैत (सब कुछ एक है) का सिद्धांत इसी विचार को प्रतिध्वनित करता है। यह दर्शाता है कि आत्मा और परमात्मा अलग नहीं हैं; वे एक ही ब्रह्म के विभिन्न रूप हैं।

6. सृजन और विनाश का चक्र : क्वांटम सिद्धांत यह मानता है कि ऊर्जा न तो उत्पन्न की जा सकती है और न ही नष्ट की जा सकती है, यह केवल एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती है। भगवद्गीता में भी सृजन, स्थिति, और विनाश का चक्र वर्णित है। श्रीकृष्ण कहते हैं, 'हर जीव का जन्म, जीवन और मृत्यु प्रकृति के नियमों के अनुसार होता है।' यह विचार ब्रह्मांड के संतुलन और चक्र को समझने में सहायक है।

7. ब्रह्मांडीय चेतना : क्वांटम सिद्धांत चेतना को केवल मस्तिष्क का उत्पाद नहीं मानता, बल्कि इसे ब्रह्मांडीय घटना के रूप में देखता है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'मैं हर प्राणी के हृदय में स्थित हूँ।' यह विचार चेतना के सार्वभौमिक स्वरूप और इसके ब्रह्मांड से संबंध को स्पष्ट करता है।

8. परिवर्तनशीलता और स्थिरता : क्वांटम सिद्धांत के अनुसार, हर कण लगातार परिवर्तनशील है, परंतु यह परिवर्तन एक गहरे स्तर पर स्थिरता से जुड़ा हुआ है। भगवद्गीता में भी आत्मा को 'अविनाशी' और 'नित्य' कहा गया है, जबकि शरीर को परिवर्तनशील। यह विचार भौतिक और आध्यात्मिक जगत के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

9. योग और एकाग्रता : क्वांटम सिद्धांत में उर्जा की उच्चतम स्थिति तक पहुँचने के लिए सूक्ष्मतम स्तर पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। भगवद्गीता में योग और ध्यान को भी आत्मा के परम सत्य तक पहुँचने का माध्यम बताया गया है। यह दोनों ही विधाएँ चेतना को गहरे स्तर पर समझने की दिशा में मार्गदर्शन करती हैं।

भगवद्गीता के श्लोक जो क्वांटम सिद्धांत से जुड़ते हैं

1. माया और वास्तविकता
(Real and Illusory Nature)

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

(जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीरों को छोड़कर नए शरीर धारण करती है।) भगवद्गीता 2.22

यह श्लोक ब्रह्मांड की परिवर्तनशीलता को दर्शाता है, जो क्वांटम सिद्धांत में ऊर्जा और पदार्थ के परिवर्तनशील रूपों से मेल खाता है। यह दर्शाता है कि वास्तविकता सतत परिवर्तनशील है, और स्थायित्व केवल चेतना के स्तर पर होता है।

2. संपूर्णता और अनित्य
(Unity and Impermanence)

मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।

(हे धनंजय, मुझसे परे कुछ भी नहीं है। यह सारा जगत मुझमें मोती की माला के समान गुंथा हुआ है।) भगवद्गीता 7.7

यह विचार क्वांटम सिद्धांत के 'एंटैंगलमेंट' से मेल खाता है, जहाँ सभी कण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह ब्रह्मांडीय एकता का प्रतिपादन करता है।

3. कण-तरंग द्वैतता (Particle-Wave Duality)
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।

(जो मुझे अव्यक्त मानते हैं, वे मेरी वास्तविकता को नहीं समझते।) भगवद्गीता 7.24

क्वांटम सिद्धांत में भी कण और तरंग दोनों की संभावना अव्यक्त होती है, जब तक कि उसे प्रेक्षण द्वारा निश्चित रूप नहीं दिया जाता। यह श्लोक इस अदृश्य प्रकृति को समझने में सहायक है।

4. साक्षीभाव (Observer Effect)
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति।

(जो देखता है कि सभी कर्म प्रकृति द्वारा ही किए जा रहे हैं, और आत्मा अकर्ता है, वही सच्चा द्रष्टा है।) भगवद्गीता 13.29

यह श्लोक क्वांटम सिद्धांत के प्रेक्षक की भूमिका की ओर संकेत करता है, जहाँ प्रेक्षक ही वास्तविकता को आकार देता है। यह 'साक्षीभाव' की अवधारणा को स्पष्ट करता है।

5. अनिश्चितता (Uncertainty)
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
(तेरा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल में नहीं।) भगवद्गीता 2.47

क्वांटम अनिश्चितता सिद्धांत में कहा गया है कि भविष्य के परिणाम पूरी तरह से ज्ञात नहीं हो सकते। इसी प्रकार, गीता में भी फल की चिंता छोड़कर कर्म पर ध्यान देने का संदेश दिया गया है।

6.ऊर्जा और चेतना (Energy and Consciousness)

यदादित्यगतं तेजो जगत्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।

(सूर्य, चंद्रमा और अग्नि का जो प्रकाश है, उसे मेरा ही तेज जानो।) भगवद्गीता 15.12

यह श्लोक दर्शाता है कि ऊर्जा और चेतना का स्रोत एक ही है। क्वांटम सिद्धांत में उर्जा की सार्वभौमिकता को भी इसी रूप में स्वीकारा गया है।

आधुनिक विज्ञान और आध्यात्मिकता का समागम :आधुनिक विज्ञान और आध्यात्मिकता, ये दोनों ही मानव जीवन और ब्रह्मांड को समझने के दो दृष्टिकोण हैं। विज्ञान जहां भौतिक और यथार्थवादी प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रकृति को समझने का प्रयास करता है, वहीं आध्यात्मिकता मानव चेतना, आत्मा और ब्रह्मांडीय उर्जा के बीच के संबंध को समझने पर केंद्रित है। ये दोनों क्षेत्र प्रथम दृष्टया भिन्न लग सकते हैं, लेकिन गहरे अध्ययन से इनका अंतर्संबंध स्पष्ट होता है।

1. विज्ञान और आध्यात्मिकता का उद्देश्य :आधुनिक विज्ञान का उद्देश्य ब्रह्मांड की संरचना और कार्यप्रणाली को समझना है। न्यूटन के नियमों से लेकर आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत और क्वांटम यांत्रिकी तक, विज्ञान ने भौतिक संसार के रहस्यों को उजागर करने में उल्लेखनीय प्रगति की है।

आध्यात्मिकता, दूसरी ओर, आत्मा, चेतना और ईश्वर के साथ मनुष्य के संबंध पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य आत्मज्ञान और सार्वभौमिक सत्य की खोज है। भगवद्गीता जैसे ग्रंथ इस खोज को दिशा प्रदान करते हैं।

दोनों ही दृष्टिकोण का अंतिम लक्ष्य एक ही है सत्य की खोज। विज्ञान बाहरी सत्य को समझने का प्रयास करता है, जबकि आध्यात्मिकता आंतरिक सत्य पर ध्यान केंद्रित करती है।

2. सत्य की प्रकृति : क्वांटम यांत्रिकी ने यह दिखाया है कि वास्तविकता स्थिर नहीं है; यह प्रेक्षक के आधार पर बदलती है। यह विचार भगवद्गीता के माया सिद्धांत से मेल खाता है, जिसमें संसार को एक भ्रम बताया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं, 'जो दिखता है, वह वास्तविक नहीं है, और जो वास्तविक है, वह दिखता नहीं है।'

3. चेतना का विज्ञान : विज्ञान अब चेतना को केवल जैविक प्रक्रिया नहीं मानता, बल्कि इसे ब्रह्मांड का मूलभूत तत्व समझने लगा है। क्वांटम सिद्धांत में 'प्रेक्षक प्रभाव' चेतना की भूमिका को स्वीकार करता है। भगवद्गीता में आत्मा और ब्रह्म की चर्चा इसी चेतना को समझने का मार्ग दिखाती है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'साक्षीभाव' का महत्व समझाया, जो विज्ञान के प्रेक्षक प्रभाव से मेल खाता है।

4. ऊर्जा और पदार्थ का द्वैत : आधुनिक विज्ञान और आध्यात्मिकता दोनों इस विचार को स्वीकार करते हैं कि ऊर्जा और पदार्थ अलग नहीं हैं। क्वांटम यांत्रिकी में यह स्पष्ट है कि पदार्थ उर्जा के विभिन्न रूपों में बदल सकता है। भगवद्गीता में भी यह विचार प्रकट होता है, जहाँ श्रीकृष्ण कहते हैं, 'मैं ही ऊर्जा का स्रोत हूँ, और सारा ब्रह्मांड मुझसे उत्पन्न होता है।'

5. एंटैंगलमेंट और अद्वैत : क्वांटम सिद्धांत में 'एंटैंगलमेंट' दर्शाता है कि ब्रह्मांड के सभी कण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। भगवद्गीता में अद्वैत का सिद्धांत इसी विचार को प्रकट करता है, जिसमें कहा गया है कि आत्मा और परमात्मा एक ही हैं। यह ब्रह्मांडीय एकता और समग्रता की ओर संकेत करता है।

6. कर्म और अनिश्चितता : क्वांटम अनिश्चितता सिद्धांत और भगवद्गीता का कर्म सिद्धांत एक-दूसरे के पूरक हैं। हाइजेनबर्ग का अनिश्चितता सिद्धांत कहता है कि किसी कण की स्थिति और वेग को एक साथ सटीक रूप से मापा नहीं जा सकता। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण का संदेश है कि मनुष्य को केवल कर्म पर ध्यान देना चाहिए, फल की चिंता नहीं करनी चाहिए।

7. योग और ध्यान : योग और ध्यान दोनों ही विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच पुल का कार्य करते हैं। आधुनिक न्यूरोसाइंस ने यह प्रमाणित किया है कि ध्यान और योग से मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली में सकारात्मक बदलाव आते हैं। भगवद्गीता में ध्यान और योग का वर्णन आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का माध्यम बताया गया है।

8. ब्रह्मांड की संरचना : क्वांटम सिद्धांत ब्रह्मांड को ऊर्जा और संभावनाओं का क्षेत्र मानता है। भगवद्गीता भी ब्रह्मांड को दिव्य ऊर्जा का खेल बताती है। श्रीकृष्ण कहते हैं, 'मैं इस सृष्टि की उत्पत्ति और विनाश दोनों हूँ।' यह विचार ब्रह्मांड की अनंतता और शाश्वतता को स्पष्ट करता है।

9. अनुभूति और अनुभव : आधुनिक विज्ञान वस्तुनिष्ठ (Objective) अनुभव पर आधारित है, जबकि आध्यात्मिकता आत्मनिष्ठ (Subjective) अनुभव को प्राथमिकता देती है। दोनों दृष्टिकोण एक दूसरे के पूरक हैं और सत्य की पूरी तस्वीर प्रस्तुत करने में सहायक हैं।

10. भविष्य की दिशा : आधुनिक विज्ञान और आध्यात्मिकता का समागम मानवता के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल सकता है। यह समागम ब्रह्मांड और मानव चेतना के गहन रहस्यों को उजागर करने में सहायक हो सकता है।

निष्कर्ष : भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत, दोनों ही अपने-अपने ढंग से ब्रह्मांड की गहराई और जटिलता को समझने का प्रयास करते हैं। भगवद्गीता, जो धर्म, दर्शन, और आत्म-ज्ञान का मार्गदर्शन करती है, हमें यह समझने में मदद करती है कि वास्तविकता केवल भौतिक संसार तक सीमित नहीं है। यह हमें माया (भ्रम) और सत्य के बीच के अंतर को पहचानने की दृष्टि प्रदान करती है। दूसरी ओर, क्वांटम सिद्धांत हमें यह बताता है कि वास्तविकता बहुत जटिल है और यह हमारी परंपरागत सोच से परे है।

1. भौतिक और आध्यात्मिक सत्य का समागम : क्वांटम सिद्धांत ने यह दिखाया कि ब्रह्मांड की गहराई में उर्जा और पदार्थ के बीच का संबंध स्थिर नहीं है। इसी प्रकार, भगवद्गीता में यह कहा गया है कि आत्मा न तो जन्म लेती है और न ही मरती है, बल्कि यह शाश्वत और अपरिवर्तनीय है। दोनों ही यह सिद्ध करते हैं कि वास्तविकता को समझने के लिए हमें स्थूल और सूक्ष्म दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

2. चेतना और प्रेक्षण की भूमिका : क्वांटम सिद्धांत में प्रेक्षक का महत्व है, जो यह निर्धारित करता है कि एक कण किस प्रकार व्यवहार करेगा। भगवद्गीता में भी श्रीकृष्ण अर्जुन को साक्षीभाव अपनाने की शिक्षा देते हैं, जहाँ वह कर्म करते हुए भी निर्लिप्त और शांत रहते हैं। यह दोनों दृष्टिकोण इस बात पर जोर देते हैं कि चेतना वास्तविकता को प्रभावित कर सकती है।

3. सर्वव्यापकता और एकता का सिद्धांत : क्वांटम यांत्रिकी के एंटैंगलमेंट सिद्धांत से यह सिद्ध होता है कि ब्रह्मांड के सभी कण आपस में जुड़े हुए हैं। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'संपूर्ण ब्रह्मांड मुझमें स्थित है,' जो ब्रह्मांडीय एकता के सिद्धांत को दर्शाता है। यह समानता विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच के गहरे संबंध को प्रकट करती है।

4. कर्म और अनिश्चितता का सिद्धांत : कर्म का सिद्धांत भगवद्गीता का केंद्रीय तत्त्व है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य को केवल अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए, फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। यह विचार क्वांटम यांत्रिकी के अनिश्चितता सिद्धांत से मेल खाता है, जहाँ भविष्य के परिणाम पूरी तरह से ज्ञात नहीं होते।

5. आधुनिक मानवता के लिए मार्गदर्शन : आधुनिक समाज में, जहाँ तकनीकी प्रगति और भौतिकवाद हावी है, भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत दोनों ही हमें यह याद दिलाते हैं कि जीवन केवल बाहरी उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। यह हमें आंतरिक संतुलन और आत्मज्ञान के महत्व को पहचानने में मदद करते हैं।

6. भविष्य की संभावनाएँ : भविष्य में, विज्ञान और आध्यात्मिकता का यह समागम मानवता के लिए नई खोजों और आविष्कारों के द्वार खोल सकता है। यह न केवल भौतिक संसार को बेहतर बनाने में सहायक होगा, बल्कि मानव चेतना के गूढ़ रहस्यों को उजागर करने में भी योगदान देगा।

निष्कर्ष का निचोड़ : इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों ही यह समझने में मदद करते हैं कि ब्रह्मांड केवल भौतिक तत्वों से नहीं बना है, बल्कि यह ऊर्जा, चेतना, और आत्मा का भी संयोजन है। इन दोनों दृष्टिकोणों का समन्वय मानवता को न केवल भौतिक प्रगति की ओर ले जाएगा, बल्कि आंतरिक शांति और संतुलन की ओर भी प्रेरित करेगा।

संदर्भ

ग्रंथ और पौराणिक स्रोतः

1. **भगवद्गीता (अनुवाद और व्याख्या):** महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित भगवद्गीता, जिसमें गीता के प्रत्येक श्लोक का दार्शनिक और आध्यात्मिक व्याख्यान है।

   डॉ. राधाकृष्णन और स्वामी चिद्भवानंद द्वारा किए गए गीता के अनुवाद और टीका।

2. **उपनिषदः** उपनिषदों में वर्णित आत्मा, ब्रह्म और ब्रह्मांडीय उर्जा के विचार गीता के सिद्धांतों के पूरक हैं। विशेष रूप से, मांडूक्य और ईशावास्य उपनिषद में ब्रह्मांडीय एकता का वर्णन।

3. **योग सूत्रः** पतंजलि के योग सूत्र, जो चेतना और ध्यान के माध्यम से आत्मा और ब्रह्मांडीय उर्जा को समझने की विधि बताते हैं।

क्वांटम सिद्धांत के स्रोतः

1. **विज्ञान के शास्त्रीय ग्रंथः** 'Quantum Mechanics: The Theoretical Minimum' - Leonard Susskind और Art Friedman। यह पुस्तक क्वांटम यांत्रिकी के मूलभूत सिद्धांतों को समझाने में सहायक है।

   'QED: The Strange Theory of Light and Matter" - Richard Feynman। फोटोन और इलेक्ट्रोन के क्वांटम व्यवहार पर गहन दृष्टि।

2. हाइजेनबर्ग का अनिश्चितता सिद्धांतः Werner Heisenberg द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत, जिसमें यह समझाया गया है कि किसी कण की स्थिति और वेग को एक साथ सटीकता से मापा नहीं जा सकता।

3. 'The Tao of Physics' - Fritjof Capra। इस पुस्तक में भौतिकी और अध्यात्म के अंतर्संबंध पर चर्चा की गई है।

समकालीन शोधः

1. चेतना और प्रेक्षणः

   David Chalmers के "Hard Problem of Consciousness' पर आधारित अध्ययन।

   Roger Penrose और Stuart Hameroff का 'Orchestrated Objective Reduction' (Orch-OR) मॉडल, जो चेतना को क्वांटम प्रभावों से जोड़ता है।

2. एंटैंगलमेंट और ब्रह्मांडीय एकताः

   Alain Aspect के प्रयोग, जिसने क्वांटम एंटैंगलमेंट की पुष्टि की।

   Erwin Schr dinger का जीवन और उनके ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों के शोधः

1. डॉ. टी. डी. सिंग (भक्ति वेदांत संस्थान): उनके लेख 'Bhagavad Gita and Modern Science' में गीता और विज्ञान के बीच सामंजस्य पर प्रकाश डाला गया है।

2. 'Quantum Physics and Spirituality' - Amit Goswami: डॉ. गोस्वामी ने अपने शोध में क्वांटम यांत्रिकी और भारतीय दर्शन के अंतर्संबंध को समझाया है।

3. Jagdish Chandra Bose: भारतीय वैज्ञानिक, जिन्होंने चेतना और पौधों में जीवन के बीच संबंधों का अध्ययन किया। उनका कार्य भगवद्गीता के जीव और ब्रह्मांड के बीच संबंधों के विचार के अनुरूप है।

अन्य स्रोतः

1. योग और ध्यान पर आधुनिक शोधः

   Jon Kabat-इतदद द्वारा माइंडफुलनेस और ध्यान पर आधारित अध्ययन।

   'The Science of Yoga' - William Broad, जो योग के शारीरिक और मानसिक लाभों की व्याख्या करता है।

2. विज्ञान और आध्यात्मिकता का मेलः

   Gregg Braden की 'The Divine Matrix,' जो विज्ञान और अध्यात्म के संगम पर केंद्रित है।

   Deepak Chopra के लेख और व्याख्यान, जो ध्यान और आधुनिक विज्ञान के संबंध पर आधारित हैं। इन संदर्भों के माध्यम से, भगवद्गीता और क्वांटम सिद्धांत के बीच की समानताओं और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग को और अधिक गहराई से समझा जा सकता है। ये स्रोत इस शोध को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं।

सहायक प्रोफेसर, बिधान चंद्र कॉलेज
आसनसोल, प. बंगाल

आतंकवाद का बदलता चेहरा : अश्विनीकुमार दुबे की कहानी 'आतंकवादी' के परिप्रेक्ष्य में

बिन्सी बालचंद्रन

आतंकवाद इक्कीसवीं सदी की एक ज्वलंत मुद्दा है, क्योंकि आज संपूर्ण विश्व आतंकवाद की आग में झुलस रहे हैं। एक खंडित सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था आतंकवाद के लिए उपजाउ ज़मीन प्रदान करती है। व्यक्ति या दलों द्वारा सत्ता का लालच उग्रवाद या आतंकवाद को पनपने का प्रोत्साहन देते हैं। दुनिया के कई अन्य देशों की तुलना में भारत की स्थिति अत्यंत जटिल है। क्योंकि यहाँ की जातीय, भाषाई, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता आतंकवाद और अलगाववाद को बढ़ावा देने में मदद करती है। साथ ही, जब भी आतंकवाद राजनीति से प्रेरित होता है तो इसे एक राजनीतिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जाता है और अलगाववाद व आतंकवाद का पर्याय बना जाता है। आतंकवाद और राजनीति के संबध में डॉ.आर.बी.सिंह का मत है कि "आतंकवाद और राजनीति के साये तले फलता-फूलता है। प्रायः देखा गया है कि किसी भी आतंकवादी गुट का नायक एक परिपक्व राजनीतिज्ञ होता है। वह अपनी मांगों को राजनीतिक स्तर से उठाता अवश्य है। लेकिन उसे मनवाने के लिए उग्र गतिविधियों द्वारा उसपर दबाव डालता है"[1] अर्थात् आज हमारे नेता और राजनीतिक दल आतंकवाद का खुला समर्थन करने वाले तत्त्वों से समझौता कर लेते हैं। इस तरह की राजनीति देश की अखंडता के लिए बेहद खतरनाक है।

वर्तमान समाज में अनेक समस्याएँ हैं और उनके विभिन्न परिणाम भी हम देख सकते हैं। आतंकवाद का काला जादू हर निरपराध व्यक्तिको परेशान करता है। बहुत ही कम ऐसे लेखक हैं जिन्होंने साहित्य में 'आतंकवाद' को लाने की कोशिश की है। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा प्रत्येक पाठक को उसकी वास्तविकता से अवगत कराने का प्रयास किया है। हिंदी साहित्य के सुपरिचित लेखक है अश्विनी कुमार दुबे, जो एक व्यंग्य लेखक एवं उपन्यासकार भी है। उनकी एक प्रमुख कहानी है 'आतंकवादी'। इसमें उन्होंने वर्तमान समय की विभिन्न गंभीर समस्याएँ जैसे आतंकवाद, पारिवारिक विघटन, मानवीय मूल्यों का हनन, धर्म एवं राजनीति का कटु यथार्थ आदि को उकेरने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत कहानी के प्रमुख पात्र हैं :- शकील सिद्दीकी, अनवर(उनका बेटा), सलमा (बेटी), उसकी पत्नी और प्रदीप चौबे(अनवर का दोस्त)। शकील सिद्दीकी ने कलेक्टरेट में छोटे पद पर काम करनेवाला मेहनती एवं ईमानदार कर्मचारी है। इस कहानी में अनवर और प्रदीप चौबे दोनों कंप्यूटर साईंस में डिग्री प्राप्त शिक्षित लोग हैं। डिग्री प्राप्त करने के बाद भी वे दोनों बेरोज़गार है। आजकल महंगाई इतनी बढ़ गई है कि आम आदमी का जीना मुहाल हो गया है। इसके साथ ही युवाओं का शिक्षित होने के बावजूद बेरोज़गार रहना बेहद दुखद है। इस कहानी के अनवर और प्रदीप चौबे भी चार सालों से बेरोज़गार रहे थे। फिर वे दोनों अपने-अपने रास्ते पर चले गये।

बेरोज़गारी, लोगों के जीवन को बदलने की ताकत रखती है। आज इंसान जानवर बनता जा रहा है। अर्थात् वे किसी के साथ हिंसा करने से नहीं हिचकिचायेंगे। वे गलत लोगों के बहकावे में आकर हिंसा करते हैं। वे लोगों को गुमराह कर अपने हितों को साधने के लिए धर्म और राजनीति का इस्तेमाल करते हैं। भ्रष्ट व्यवस्था में रहे शिक्षित लोग भी उस वक्त सही-गलत में फर्क नहीं कर पाते थे और हिंसक गतिविधियों में शामिल हो जाते थे। इस तरह आम नागरिक भी आतंकवादी तक बन जाते हैं। इस नज़र से देखें तो अनवर और प्रदीप चौबे ने गलत लोगों के चंगुल में फँस कर हिंसा की घटना को अंजाम दिया। यानी कि अनवर ने कट्टरपंथियों के साथ मिलकर आतंकवाद को अंजाम दिया, जबकि प्रदीप चौबे ने आपराधिक राजनीतिज्ञों से मिलकर बड़ा घोटाला की साजिश रची और उनके खिलाफ गवाही देने वालों को मार डाला।

अनवर ने धार्मिक लोगों में दिलचस्पी दिखानी

शुरू कर दी। किन्तु सिद्दीकी साहब ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उनका मानना था कि यह अनवर की धार्मिक रुझान है और इसमें हस्तक्षेप करना ठीक नहीं है। आजकल अनवर देर रात तक अपने लैपटॉप पर काम करता रहता था। अनवर के घरवालों को नहीं मालूम था कि आखिर उनका काम क्या है? जब पुलिस घर आई तो सबको अनवर की करतूत के बारे में पता चला। पुलिस का कहना है कि अब वह आतंकवादी बन चुका है! पिछ्ले कुछ दिनों से अनवर उनके निगरानी में थे। उन्हें अनवर के खिलाफ कुछ सबूत मिले हैं। यह जानकर पूरा परिवार हैरान रह गया। पुलिस अधिकारी ने घटना की गंभीरता बताते हुए सिद्दीकी साहब को बताया "आप का बेटा अब बड़ा आतंकवादी हो चुका है। कई खतरनाक संगठनों से उसके गहरे संबंध हैं। पिछ्ले दिनों कश्मीर में जो बड़ी आतंकी गतिविधियाँ हईं। उनका मास्टर माइंड अनवर को ही बताया जाता है। कहा जाता है, वह कंप्यूटर साइंस में डिग्री होल्डर है।"[2] पुलिस के पहुँचने से पहले अनवर अपने दोस्त के पास जाने की बात कहकर घर से निकल गया। अब पुलिस रोज़ सिद्दीकी साहब के घर आकर पूछ-ताछ करती है। एक तरफ़ अनवर की सच्चाई जानने और दूसरी तरफ़ वह अपने घर आ रही पुलिस से तंग आ चुका है। क्योंकि किसी को नहीं पता था कि अब अनवर कहाँ है!

उस वक्त इधर प्रदीप चौबे ने राजनीतिक गलियारों में अपनी जन-पहचान बढ़ा ली। इसी वजह से उसकी जान-पहचान कई छोटे-मोटे आपराधिक नेताओं से हो गयी थी। इनके ज़रिये प्रदीप की मुलाकात बड़े नेता से हुई। इसके साथ प्रदीप चौबे ने राजनीति में अपनी जड़ें जमानी शुरू कर दीं। मंत्री जी ने उन्हें अस्थाई रूप में अपने ऑफिस में रखा है। लोग कह रहे हैं कि हाल के दिनों में 'ई-टेंडर घोटाला' हुआ है, जिसमें करोड़ों रूपयों के बारे- न्यारे हुआ है। बड़े-बड़े टेंडर करीबी लोगों में बाँट गये। इसमें मंत्री जी की भी भागीदारी बताई गई थी। आए दिन ई-टेंडर घोटाले से जुडी कई खबरें छ्पती रहती हैं। लकिन लोग इसे गंभीरता से नहीं लेते। लोगों का मानना है कि प्रदीप चौबे ही इस घोटाले का मास्टर माइंड है। सिद्दीकी साहब को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन एक दिन उन्होंने अपने ऑफिस के कुछ साथियों को ई-टेंडर घोटाले के बारे में आपस बात करते हुए सुना। तभी उसके एक दोस्त ने कहा "अपने ही शहर के प्रदीप चौबे इस पूरे मामले का मास्टर माइंड है। वह कंप्यूटर साइंस में डिग्री होल्डर है, मंत्रीजी ने उसे अपने विभाग में अस्थाई रूप से रख लिया था, परंतु वह तो बहुत कमाल का आदमी साबित हुआ। ई-टेंडर घोटाले में सारा खेल कंप्यूटर का है। करोड़ों के टेंडर अपने-अपने लोगों में बाँट दिए गये। इसमें भारी कमीशन खाया गया। अब इन्क्वारी चल रही है। कई लोग जो इस प्रकरण में गवाह देनेवाले थे, उनमें कुछ संदिग्ध अवस्था में मृत पाए गये। देखिये आगे क्या होता है"[3] राजनीति में नेतागण उन लोगों को ख़त्म करने की कोशिश कर रहे हैं जो उनके राजनीतिक हितों के खिलाफ हैं। वह नहीं चाहती कि कोई उनके काम में दखलंदाज़ी करे।

अनवर के आतंकवादी बन जाने के खबर सुनते ही सिद्दीकी साहब से अपने परिचित एवं रिश्तेदर उन्हें फोन करके सवाल-जवाब करने लेगे। बेटे के आतंकवादी होने के कारण धीरे-धीरे लोगों ने उनसे संबंध रखना भी बंद कर दिया है। वे अपनी बेटी सलमा की शादी को लेकर काफ़ी चिंतित हैं। जहाँ कहीं रिश्ता लेकर जाता है तो उनसे पहले अनवर के किस्से का खबर पहुँच जाता है या पहुँचा दिए जाते हैं। इससे रिश्ता टूट जाता है। इन कारणों से अनवर के परिवार का सामाजिक जीवन पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका है। लेकिन प्रदीप चौबे और उनके परिवार की प्रतिष्ठा दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। उसकी पहुँच राजनीति तक है। उसके आपराधियों से अवैध संबंध है। घोटाला के मामलों में गवाही देने वालों की लगातार हत्या की जा रही है। हालांकि जाँच पूरी हो चुकी है, पर अभी तक आरोपियों का पता नहीं चल सका है।

'आतंकवादी' कहानी में अनवर और प्रदीप चौबे को सामाजिक एवं राजनीतिक तौर पर देखें तो दोनों ने एक जैसा आतंक भरा काम किया है। अतः कानून के नज़र में वे दोनों अपराधी होते हैं। लेकिन सज़ा तो केवल एक को मिलती है अनवर और उनके परिवार को। वही प्रदीप चौबे खुले आसमान के नीचे स्वंत्रता से रहते हैं। क्योंकि सत्ता उन्हीं के साथ में है। इसलिए भ्रष्टाचार एवं हिंसक कार्य करने पर भी प्रदीप अपराधी घोषित नहीं किया गया है। उसे दोषी ठहराने के लिए कोई ठोस सबूत नहीं है। अंत में सिद्दीकी साहब ने मन बना लिया कि अगली बार जब

पुलिस अनवर का पता-ठिकाना पूछने आएगी तो वह प्रदीप चौबे का पूरा पता, फोन नंबर और ई-मेल एड्रेस बता देंगे। वास्तव में शकील सिद्दीकी के ज़रिये लेखकीय अपना विचार प्रकट किया गया है। कानून के सामने हर कोई बराबर है। लेकिन कुछ काले दिमाग वालों ने कानून को कठपुतली की तरह नचाते हैं। इसमें लेखक ने आतंकवाद के विभिन्न रूपों का महत्वपूर्ण उल्लेख किया है- जैसे धर्म, राजनीति, साईबर आदि।

स्वार्थी राजनीतिक नेताओं के शरण में आतंकवाद को पनपने का मौका मिलता है। इससे वर्णवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद तथा धर्मोन्माद आदि का आविर्भाव होता है। अपने स्वार्थ हितों की पूर्ति के लिए लोग आपस में लड-पड़े हैं। आज मनुष्य से 'मानवता' लुप्त होती जा रही है। यानि मनुष्य अमानवीय होता जा रहा है। इसका दर्दनाक नमूना है दुनिया भर में हो रही आतंकवादी घटनाएँ। इस संदर्भ में डॉ.राम उजागर तिवारी का मत है कि "आज व्यक्ति से व्यक्तित्व का जुटाव नहीं है- जुटाव के विपरीत टूटन गहरी है। वर्तमान आतंकवाद इसी टूटन का राजनीतिक, क्षेत्रीय, सांप्रदायिक, जातिवादी नस्ल और लिंगभेदवादी, जेहादी और राज्य प्रायोजित रूपों का परिणाम है"[4] आतंकवाद मानव को मानव से अलगाने का कार्य करवाता है। युद्ध एवं बम्बारी से विनाश ही संभव होता है। यह संपूर्ण विश्व को क्षति पहूँचाती है। इससे किसी का भी भलाई नहीं होती। भलाई तो इसमें होती है कि आपस में प्रेम, करुणा और सौहार्द बाँटने से। इसमें है हमारी भलाई!

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. आतंकवाद के साये में सुरक्षा समस्याएँ-भारतीय उपमहाद्वीप के विशेष सन्दर्भ में:- डॉ.आर.बी.सिंह; अंकित पब्लिकेशंस-दिल्ली; प्र.सं.-2013;पृ.-20
2. आतंकवादी :- अश्विनी कुमार दुबे; साहित्य अमृत; सितंबर-2021; पृ.-18
3. वही पृ.
4. आतंकवाद :- वर्तमान सन्दर्भ और रामचरित मानस - डॉ राम उजागर तिवारी; ज्ञान प्रकाशन- कानपूर; द्वि.सं-2012; पृ.-5, प्राक्कथन में

शोध छात्रा, हिंदी विभाग , केरल विश्वविद्यालय
कार्यवट्टम कैंपस, तिरुवनंतपुरम

डॉ (प्रोफ) आरसु सम्मानित

डॉ (प्रोफ) आरसु सम्मानित आट्टिंगल (तिरुवनंतपुरम जिला) के प्रमुख हिंदी संगठन 'निराला हिंदी अकादमी' की ओर से प्रायोजित 'गुरुपूजा पुरस्कार - 2025' (नकद रुपए 25000/- से डॉ आरसु (नामी हिंदी लेखक, अनुभवी अनुवादक तथा पूर्व आचार्य, कालिकट विश्वविद्यालय) सम्मानित हुए। 11-04-2026 को महाकवि कुमारन आशान स्मारक सभागार (तोन्नक्कल) में डॉ एस तंकमणि अम्मा की अध्यक्षता में संपन्न समारोह का उद्घाटन नगर सभा अध्यक्ष श्री एम प्रदीप ने किया। मलयालम के लोकप्रिय कवि श्री कुरीप्पुष़ा श्रीकुमार, डॉ ओ वासवन, डॉ रतीष निराला, राधाकृष्णन कुन्नुंपुरम, वर्कला गोपालकृष्णन, श्रीमती ए के सुप्रिया आदि द्वारा आशीर्वचन भी दिए गए।

- मुख्य संपादक

'हिड़िंब' में अभिव्यक्त पर्यावरण और दलित चेतना

डॉ तेरेसा टिनसी टी जी

एस.आर हरनोट का समकालीन उपन्यास है हिंडिम्ब। इसमें लेखक ने हिमाचली पर्वतीय अंचल के जीवन को ही उकेरा है। लेखक ने इसमें पर्वतीय संस्कृति, वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य और साथ ही दलित जीवन का भी जीवंत चित्रण किया है। इसमें एक नड परिवार का जीवन है। इसका मुख्य पात्र है शावणू सुरमा देई 'उनकी बेटी' सूमा और बेटा कासीराम। इन चारों के इर्द गिर्द इस उपन्यास की कहानी घूमती है। शावणू एक अछूत जाति का आदमी है वह अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी रह रहा था। उसके पास अपने खुद की जमीन है जो उसे उसके पिता की मृत्यु के बाद मिला था। काहिका महोत्सव में शावणू के पिता की मृत्यु हो जाती है और उसे मुआवजे के रूप में यह जमीन मिली थी।

वह बहुत ही सुंदर जमीन थी। खेती बाड़ी जानवरों का पालन पोषण इसी से वह परिवार आगे बढ़ रहा था। लेकिन उनकी जिंदगी में समस्याएँ तब पैदा होती है जब उनके गांव में मंत्री जी दौरे पर आता है। मंत्री जी की नजर उस जमीन पर पड़ती है और मंत्री जी चाहता है कि वह उस जमीन को किसी न किसी तरह हड़प ले और वहाँ पर कोई फाइव स्टार होटल बनवाए ।क्योंकि पर्यटन व्यवसाय तो पर्वतीय अंचलों में बहुत ही लाभदायक व्यवसाय है और मंत्री जी चाहता था कि वह इस जमीन के पास फाइव स्टार होटल या आलीशान बंगला और कोठियाँ बनाये और पैसा कमाये। जैसा कि हमें मालूम है जहाँ पर भी पर्यटन व्यवसाय बढ़ता जाता है वहाँ पर लोग किसी न किसी तरह होमस्टे या होटल बनाकर पैसा कमाने की कोशिश करते है। एक फाइव स्टार होटल बन जाए तो बहुत सारा पैसा कमा सकता है यहाँ पर मंत्री जी कम पैसों में जमीन हड़प कर 5 स्टार होटल बनाकर बिजनेस को आगे बढ़ना चाहता है और राजनैतिक नेता लोग यही कहते हैं कि वह यह सब लोगों की भलाई के लिए या विकास के लिए कर रहे हैं। लेकिन उनके स्वार्थ ही इसके पीछे काम करता है पर्वतीय अंचलों पर इस तरह मकान बनाने से उसके दूरगामी परिणामों के बारे में कोई नहीं सोचता है। पर्वतीय चट्टानों को तोड़कर ही इस तरह के बंगले या फाइव स्टार होटल बनाए जाते हैं और यह प्रकृति के लिए हानिकारक है और किसी भी समय प्रकृति के प्रकोप से यह होटल या बांगला सब नीचे गिर जाने की संभावना है। फिर भी लोग अपने क्षणिक स्वार्थ के लिए प्रकृति के बारे में नहीं सोचते हैं। जंगल को काटा जाता है।

लेखक ने इस उपन्यास में जंगल माफिया के बारे में भी बताया है। जंगल माफिया जो है तेजाब डालकर पेड़ों को सुखाकर उसे नष्ट कर देते हैं। देवदारू के पेड़ों की तस्करी के बारे में भी लेखक ने इसमें बताया है। पर्वतीय अंचलों में जो प्राकृतिक सौंदर्य है जो वन विहार है उनका संरक्षण करने के बजाय उन्हें नष्ट कर दिया जाता है ।यहाँ पर लेखक ने लोगों की स्वार्थ मानसिकता को ही दिखाया है। इस उपन्यास में सिर्फ मंत्री ही नहीं बल्कि कई जो व्यवसायी लोग हैं जो शावणू और उसके आसपास के जमीनों को हड़पने की कोशिश कर रहा है क्योंकि पर्यटन व्यवसाय के बारे में यह लोग चिंतित है। शावणू की जमीन खरीदने के लिए हर कोई कोशिश करता है लेकिन शावणू अपनी धरती को माँ के रूप में देखता है और इसीलिए मंत्री के डराने धमकाने पर भी वह जमीन देने से मना कर देता है। फलस्वरूप शावणू के बेटे को जहर देकर मार दिया जाता है। इस घटना के बाद शावणू की बीवी जो है वह विक्षिप्त हो जाती है और वह नदी में डूब कर मर जाती है। अकेला पड़ जाता है शावणू और उसकी बेटी। और शावणू जो है उसकी बेटी को लेकर बहुत चिंतित भी है। प्रकृति के दोहन पर लेखक ने इस उपन्यास में इशारा किया है। लोग अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का नाश कर रहा है और इसका फल भी हमें ही भुगतना पड़ता है।

पर्वतीय घाटी में जो प्राकृतिक दोहन हो रहा है उसे लेखक ने एरी नामक पत्र के जरिए इसको व्यक्तकिया है। विदेशी कंपनियों का पर्वतीय अंचलों पर कब्जा भी यहाँ पर द्रष्टव्य है। एरी जो है ऑस्ट्रेलियन सिटीजन है और यह एरी शावणू की दर्द भरी जिंदगी देखकर उसकी बेटी से शादी करता है और उसे वहाँ से ऑस्ट्रेलिया ले जाता है ।यहाँ पर एरी जो है पर्वतीय अंचल में सड़क बनाने के लिए ही आया है और डायनामाइट से चट्टानों को गिराकर ही सड़क बनाने

की योजना बनाई गई है। साथ ही नदी में बांध बनाने की भी तैयारी वे लोग कर रहे हैं। चट्टानों को डायनामाइट से फोड़ने पर कई प्राकृतिक प्रकोप हो सकते हैं। एक बार सुरंग में धमाका सुनने पर यह जो शावणू है वह तो पलंग से नीचे गिर जाता है मतलब इतनी जोर से यह हो रहा है कि आसपास के घर तक हिल जाते हैं। नदी में बांध बनाने से नदी का जो स्वाभाविक बहाव है वह रोक दिया जाता है। नदी को बहने की जगह तक नहीं मिलती है और धीरे-धीरे नदी जो है गायब हो जाती है इसमें लेखक ने एक रहस्यमयी पात्र का चित्रण भी किया है । हिमाचल प्रदेश में जो व्यास नदी है उसे लोग बिपाशा बोलते हैं और इस उपन्यास में लेखक ने उसे वापू नमक छोटी बच्ची के रूप में प्रस्तुत किया है ।यह जो विपू है वह स्वयं नदी है सिर्फ शावणू और उसकी बेटी ही विपु को देखते हैं और विपू शावणू को आगाह करती है कि सर्वनाश होगा क्योंकि लोग अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ गंदा कर रहा है। विपु कहती है "मेरा दम घुटता है। मैं जाऊँ तो जाऊँ कहाँ। रहूँ कहाँ। विचरूँ कहाँ। न मैं जाग सकती हूँ और न सो सकती हूँ। पर मैं अपनी जगह ले लूँगी। देखना तुम .. किसीको नहीं दूँगी में इसे। जिस किसीने ऐसा किया उसका सर्वनाश कर दूँगी। देखना तुम। सर्वनाश .. सर्वनाश।"[1] मनुष्य प्रकृति को नष्ट कर रहा है। वह कहती है मनुष्य पागल हो गया है नदी आगे बह नहीं पा रही है। लोगों ने नदियों में मिट्टी डालकर वहाँ कोठियाँ बना रही है। मनुष्य का सर्वनाश होगा और यही तो हो रहा है। हम प्रकृति के साथ जो खिलवाड़ करते हैं इसका बदला प्रकृति भी हमसे लेती है।आँधी के रूप में तूफान के रूप में प्रलय के रूप में आदि विभिन्न रूपों में प्रकृति हमसे बदला ले रही है। वह हमारी हरकतों का ही नतीजा है जैसे इस उपन्यास में भी अंत में प्रलय है। प्रलय में सब डूब जाते हैं ।जमीनों के लिए लोगों को जीवन बहाल करने वाले मंत्री से लेकर सभी का सब कुछ नष्ट हो जाता है। प्रकृति के साथ हो रहे शोषण का नतीजा है यह प्रलय भी। हम भी जानते हैं हमारे यहाँ जो प्रलय हुआ उसकी वजह क्या थी। पिछले साल हिमाचल में प्रलय में हमने देखा कि देखते ही देखते मकानें नीचे गिर रहे थे और जो हम प्रकृति के साथ करते हैं वही हमें भी वापस मिलता है। सोशियल मीडिया में एक बार चित्र आया था प्लास्टिक से भरा पुल। प्रलय के बाद जब पुल वगैरह पानी में डूब गया था और जब पानी उतर गया तो उसी पुल में तो सारा का सारा प्लास्टिक भरा हुआ था। यानि कि हम जो प्लास्टिक नदी में फेंकते हैं वह नदी हमें वापस करके चली गई। लोग जो है विकास के नाम पर जो करते हैं उसका जो दूरगामी परिणाम है।ै उसपर भी हमें सोचना चाहिए। इस उपन्यास में नदी का हमें आगाह करना हमारे लिए सोचने की बात है। इस उपन्यास में लेखक ने एक और जगह पर प्रकृति के सर्वनाश के बारे में बताया है। जैसे हिडिंबा देवी जो हिमाचल की माँ के रूप में है और एक उत्सव में माँ हिडिंबा सबसे नाराज होकर बोलती है कि सर्वनाश होगा जो इस धरती में हो रहा है उसका सर्वनाश जरूर होगा। जब भी हम इस सर्वनाश के बारे में सोचते हैं हमें पता है हम विकास के नाम पर प्रकृति का शोषण कर रहा हैं। प्रकृति का नाश करते हैं तो हमें पता है कि हम जो कर रहे हैं सही नहीं कर रहे हैं। लेकिन कोई इसके खिलाफ कुछ भी नहीं करता है। रोकटोक लगाने का समय तो बीत चुका है। इस उपन्यास में लेखक ने विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं को जैसे जंगलों का काटे जाना, नदी में बांध बनाना, चट्टानों को डायनामाइट से गिरवाना, धरती की उर्वरता नष्ट करना, आदि की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

इस उपन्यास में लेखक ने पर्यावरण के साथ-साथ दलित जीवन की विडंबना को भी हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का नायक शावणू एक दलित व्यक्तिहै, वह एक नट परिवार का आदमी है और नट जाति जो है वहाँ की दलित जाति है और नट जाति की यही विशेषता है कि काहिका नामक प्रसिद्ध महोत्सव में नट जाति के व्यक्ति को एक दिन के लिए देवता का दर्जा दिया जाता है। जिस व्यक्ति को अछूत मानकर मंदिर से दूर रखा जाता है उसे भगवान बनाया जाता है। शावणू के पिता को भी इससे पहले वह मौका मिला था। उसे उत्सव में शावणू के पिता की मृत्यु हो गई। नड परिवार में जो गृहस्थ है उसको उस दिन के महोत्सव में देवता बनाया जाता है और उसे बहुत अच्छा खाना पीना कपड़ा सब कुछ दिया जाता है। लेकिन उस हादसे में शावणू के पिता की मृत्यु हो जाती है और शावणू अनाथ हो जाता है। उस मंदिरवालों ने मंदिर की भूमि जो देवता की भूमि जानी जाती है उसी भूमि को शावणू को दान में दिया मुआवाज़े के रूप में और शावणू की माँ और शावणू वहाँ पर रहने लगे। वहाँ पर खेती करते हुए ,धरती का पालन पोषण और फसल उगाते हुए शावणू एक बहुत

अच्छी सुंदर भूमि में जी रहा था और वही भूमि उसके जीवन के नाश का कारण भी बन जाता है। बदलते समय के साथ-साथ लोगों का नजरिया भी बदल जाता है। शावणू के पिता को काहिका महोत्सव में देवता बनाया जाता था वही अवसर शावणू को भी मिलता है। लेकिन जब शावणू को वह अवसर मिलता है तो उसे न ही अच्छा खाना मिलता है न ही कपड़ा मिलता है न रहने के लिए कमरा मिलता है। उसे गोशाला में सोना पड़ता है। उनके साथ बहुत बदतमीजी से पेश किया जाता है। शावणू के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाता है ।उसे इन लोगों ने देवता बनने के लिए वहाँ पर बुलाया था लेकिन उसके साथ बहुत ही नाइनसाफी होता है और वह वहाँ से भाग निकल जाता है। स्कूल में दलित बच्चों के साथ किस प्रकार पेश किया जाता है उसका भी चित्रण इसमें है। शावणू का बेटा जो कासीराम है उसके साथ भी बहुत बुरा बर्ताव किया जाता है सिर्फ एक ही दिन पैसे देकर प्रसाद दिया जाता था ।वहाँ पर बच्चों से जो नशीली पौधे है उसकी खेती भी करवाते थे। जो मासूम बच्चे होते हैं उन्हें नशेड़ी बनाने की कोशिश की जाती है। वहाँ के राजनीतिक खोखलेपन को भी लेखक ने दिखाया है। इसमें जो मंत्री है वह तो एक हरिजन की भूमि हड़पता है और उसकी जो भूमि है उसकी झूठी कागज़ात बनवाता और जब उसने उसके खिलाफ कुछ करने की कोशिश की तो उस पर आसिड फेंका जाता है। हरिजन के नाम पर जो गाय के लिए सब्सिडी दी जाती थी उस सब्सिडी से जो गाय आते थे उसे भी मंत्री जी के फार्म हाउस पर ही ले जाते थे और इनका जो कर्ज है वह तो उन हरिजन पर ही आ जाता था। जब शावणू के साथ ऐसा व्यवहार करने की कोशिश की तो उसने उसके खिलाफ आवाज उठायी तभी से वह मंत्री जी के नजरों का कांटा बन जाता है। तभी उसकी जमीन जो है मंत्री जी की नजर में पड़ जाता हैं और मंत्री जी उसे भी हड़पने की कोशिश करता है।

उपन्यासकार ने इसमें स्त्री के साथ होने वाले शोषण के बारे में भी बताया है। जब हिमाचल में बाढ़ आ जाती है तो उस बाढ़ में कई लाशें भी बहकर आयी थी और कुछ दरिंदों ने उन लाशों के साथ भी बलात्कार किया। लाश को रस्ट हाउस ले जाता है और उसमें जो सोना है उसकी चोरी भी करता है। बाढ़ में रेस्ट हाउस डूब जाता है लेकिन वे दरिंदे बच जाते हैं। प्रधीन और ठेकेदार ने शावणू की बीवी के साथ भी घर में घुसकर बलात्कार करने की कोशिश की लेकिन वह प्रतिरोध करती है। शावणू अपनी बेटी को लेकर भी बहुत चिंतित हो जाता है। इसलिए एरी जब शादी की बात करता है तो शावणू मना नहीं कर पाता है। उपन्यास के अंत में शावणू जो है अपना प्रतिरोध इस प्रकार व्यक्त करता है कि जिस जमीन के लिए मंत्री ने उसके परिवार का सर्वनाश किया था उसकी बीवी मर गई ,बेटा मर गया उस जमीन को शावणू ने एक मेडिकल कंपनी को दान दे दिया अस्पताल बनाने के लिए। इससे वह मंत्री चौंक जाता है। अपनी जमीन को बचाने के लिए शावणू ने बहुत कोशिश की। वह पटवारखाने गया अपने जमीन को बचाने के लिए लेकिन हर कहीं पर मंत्री के लोग बैठे हुए थे। उसे मारने की कोशिश की जाती है और चोरी के इल्जाम में उसे बंद कर दिया जाता है। मंदिर में जो चोरी होती है उसे शावणू के सिर मढ़ने की कोशिश की जाती है। थाने में भी उसके साथ अन्याय होता है। सच्चाई की तो कोई माँग ही नहीं है आजकल। और शावणू ने अपना बदला इस प्रकार लिया कि उसने अपनी जमीन को एक मेडिकल कंपनी को दान दे दिया ताकि वहां पर अस्पताल बन सके और मंत्री जी ने तो कुछ नहीं कर पाया।

इस उपन्यास का जो शीर्षक है वह है हिडिंब जो हमारे पौराणिक एक राक्षस कथा पात्र है और यह राक्षस तो हमारे यहाँ के स्वार्थी मानव का प्रतीक है जो अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का शोषण करते हैं, प्रकृति का विनाश करते हैं और सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं। इसलिए इसका शीर्षक भी बहुत ही सार्थक है। इस उपन्यास में लेखक ने पर्यावरणीय चेतना के साथ-साथ दलित जीवन को भी दिखाने की कोशिश की है। लेखक ने राजनैतिक शोषण पर भी प्रकाश डाला है। हमारे समकालीन समय की विड़ंबनाओं को खुलकर प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास एक प्रासंगिक रचना है। प्रकृति और मनुष्य का जो रिश्ता है उसे सही ढ़ंग से कायम रखना हमारा कर्तव्य है। इसी सोच की ओर यह उपन्यास हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

संदर्भ

हिडिंब -एस .आर.हरनोट, पृ. सं 85, आधार प्रकाशन, हरियाणा, प्र.पैपर्बैक. सं 2023

सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, एरणाकुलम, केरल

हिंदी की स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता का संघर्ष

शिल्पा सुरेश पुल्लाट्टू

अस्मिता स्वयं की पहचान है।इसका अर्थ गर्व, स्वाभिमान, स्वभाव आदि लिया जा सकता है। मानक हिन्दी कोश में अस्मिता शब्द का अर्थ है "मन का यह भाव या मनोवृत्ति की मेरी एक पृथक और विशिष्ट सत्ता है ,अर्थात् मैं हूँ।"[1] अस्मिता अपनी निजता की तलाश है। नयी सदी में भारतीय समाज में शिक्षा और संचार माध्यमों में आई क्रांति से नारी जीवन में परिवर्तन आया है, नारी में उस पर होनेवाले अन्याय के प्रति प्रतिरोध करने की शक्ति आयी है। वह अपने अस्तित्व को स्थापित कर रही है । नारी अपनी अस्मिता को तलाश रही है। स्त्रियों की अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी पितृसत्तात्मक व्यवस्था है। पितृसत्ता अगर स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रखने के लिए उन तमाम तरह के बंधनों में जकड़ देने का नाम है तो स्त्री अस्मिता उन बंधनों से मुक्त होने के लिए विद्रोह करने और स्त्री - पुरुष की समानता के लिए संघर्ष करने का नाम है। "नारी अस्मिता का प्रश्न एक फैशन नहीं - परंपरा और आधुनिक बोध का सतत् चलनेवाला द्वंद है। आज की स्त्री का संघर्ष उसके स्वत्व, चुनौतीपूर्ण निर्णयों और कर्मठता की कथा कहता है।"[2]

स्त्री- अस्मिता किसी और के अधीन न होकर, स्त्री का स्व- अधीन रहना है। भारतीय समाज में स्त्री अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई देती है। हर प्राणी का अपना स्वतंत्र अस्तित्व और अस्मिता है। लेकिन हम पुरुष वर्चस्व समाज में जी रहे हैं, इसीलिए इस समाज द्वारा गठित ढांचे में स्त्री को अपनी अस्मिता के लिये संघर्ष करना पड़ता है। हिंदी की स्त्री आत्मकथाओं में लेखिकाओं ने इस विषय को विस्तृत रूप से उजागर करने का प्रयास किया है।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा का पहला भाग 'कस्तूरी कुंडल बसै' में स्त्री अस्मिता का स्वर अत्यंत तीक्ष्णता से मुखरित हुआ है। लेखिका जानती है कि विवाह के पहले और विवाह के पश्चात स्त्री की स्वतंत्रता और अस्मिता पुरुष के हाथों में ही निहित है। स्त्री पुरुष की सत्ता के अधीन आती है। स्त्री के जीवन से संबंधित सारा निर्णायक पुरुषों द्वारा लिए जाते हैं। स्त्री से उनकी राय भी नहीं पूछी जाती। इससे स्त्री को कई बार अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है। 'कस्तूरी कुंडल बसै' में लेखिका की सहेली निशी खरे इस का उत्तम उदाहरण है। वह कीटनाशक पीकर आत्महत्या करती है। उसके पिता ने उसका विवाह मोटे पेट वाले दुहाजू वर से तय किया था। निशी समझाने पर भी मानती नहीं तो उसे मारपीट के जरिये समझाने की कोशिश की जाती है। फलस्वरूप वह आत्महत्या करती हैं। इस घटना को लेकर मैत्रेयी पुष्पा अपनी माँ से जो सवाल पूछती है, वही स्त्री अस्मिता और अस्तित्व के संदर्भ में सोचने को मजबूर कर देता है। पुष्पा जी कहती हैं- "माताजी देश आजाद हो गया , हम जैसी लड़कियों पर हुकूमत कौन कर रहा है? अंग्रेज कब के चले गए, हमारे घरों में हत्यारा कहाँ छिपा है?"[3]

लेखिका की माँ कस्तूरी, नारी अस्मिता को लेकर पहले से ही सतर्क थी। वे अपनी बेटी मैत्रेयी पुष्पा को शादी की बेड़ियों में अटकाना नहीं चाहती थी। वे हमेशा नारी स्वावलंबन की बात करती थी। मैत्रेयी को भी नौकरी करने की सलाह देती है। यह आत्मकथा आरंभ से लेकर अंत तक कस्तूरी के अस्तित्व और अस्मिता को लेकर ही बुनी गयी है। जब कस्तूरी के पति स्वर्ग सिधारते है तब कस्तूरी ने जो निर्णय लिए सचमुच सराहने लायक है। वे सती होने से इनकार करती है। "अपनी छोटी बच्ची तथा बूढ़े ससुर के पालन- पोषण हेतु जीना स्वीकार करती है और जीवन जीने का आधार सिद्ध करती है, वे अपने गांव की औरतों के लिए नजीर बनती है, कस्तूरी गांव के लिए अब औरत नहीं देवी है।"[4]

कस्तूरी तत्कालीन मुख्यमंत्री के खिलाफ़ भी आवाज उठाती है। मैत्रेयी जब अस्पताल में उसे देखने जाती है तो औरत की अस्मिता का बारूद उछल पड़ता है, वे मैत्रेयी पुष्पा से कहते हैं- "लाली, न जमीन, न जल, न हवा, न इज्जत, न आबरू ! सब हमारे आसपास घिरे मर्दों का है, जब चाहे बख्श दें , जब चाहे उतार लें, पर हम फिर भी लड़ेंगे अपनी जान के लिए, अपनी इन्द्रियों के लिए, अपने इंसान होने के लिए।"[5] मुख्यमंत्री उनके संगठन को दबाने की कोशिश करते हैं पर कस्तूरी पीछे नहीं हटती। बीमार

होने के बावजूद भी वह अस्पताल के बाहर निकलना चाहती है। अखबार में बढ़ा -चढ़ाकर खबरें छपती हैं। ऐसी स्थिति में भी कस्तूरी लडखड़ाती हुई अस्पताल से बाहर निकलकर सीधी कैंप पहुँच जाती हैं। जहाँ पहले से ही बेहाल औरतें पड़ी थीं, वह सभी का हौसला बढ़ा देती है, और अपना मोर्चा आगे बढ़ाती है।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा का दूसरा भाग 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में उनकी अपनी अस्मिता को टटोलने का प्रयास किया गया है। इस आत्मकथा में भी अस्मिता के लिए स्त्री का संघर्ष देखने को मिलता है। स्त्री- पुरुष समानता कहने भर के लिए है, लेकिन वास्तविकता कुछ और है। मैत्रेयी पुष्पा के पति डॉक्टर होने के बावजूद अपना व्यवहार मालिकाना बनाता जाता है। लेखिका की तीन बेटियां हैं, तीनों शिक्षित और आधुनिक विचारों वाली है। वे इन सामाजिक बंधनों को स्वीकार नहीं करती, उनका मुकाबला करती हैं। वे अपनी माँ को भी स्वयं के प्रेरणा बनने के लिए कहती है। लेखिका के परिवार में शादी और उत्सवों में कार्ड छापते थे, उन पर चाचा, ताउ, डॉक्टर शर्मा तथा छोटे बच्चों के नाम होते हैं पर लेखिका और उनकी तीनों बेटियों के नाम नहीं छपते थे। परिवार में उनका कोई अस्तित्व और अस्मिता दिखाई नहीं देती थी। इस संदर्भ में लेखिका बेटी नम्रता से कहती है- "मैं मिसेज शर्मा के सिवा क्या हूँ, बेटा? तेरे पिता की पत्नी... न औरत हूँ, न मनुष्य, केवल पत्नी। इसी रूप में तेरे पिता के परिवार में शामिल हूँ।"[6] मैत्रेयी पुष्पा अपनी बेटियों को हिम्मत देती है, लेकिन अपनी बात आने पर वह पीछे मुड़ती है। विवाह के बाद वे कहीं खो सी जाती है। उनकी अस्मिता पर मिसेज़ आर सी शर्मा का वजूद भारी पड़ने लगता है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी पहचान एवं अस्मिता की खोज करने के लिए साहित्य के क्षेत्र में कदम रखा है। उनके कथा साहित्य के नारी पात्रो में मैत्रेयी पुष्पा कहीं न कहीं स्वयं को ही चित्रित किया है। जो बातें वे आज तक पति से खुलकर बता पाई, उन्हें अपने कलम के माध्यम से लिपिबद्ध करके पति एवं पुरुष प्रधान समाज को प्रिय बता देना चाहती है। "प्रियतम तुम्हारी दुनिया में सुख तो है, मगर घुटन उससे ज्यादा। सुविधा भी है, लेकिन सिकुड़े- संकरे दायरों के बंधन सच मेरे वास्तव में परिवर्तन की बुरी लगन है, मैं तुम्हारे 'विवाह लगन' की योग्य नहीं थी और न शायद माँ बनने योग्य अभी तो शुरुआत है, मोहिता का जीवन प्रभावित हुआ, आगे क्या होगा, जब शीलो, आभा और आल्मा आएगी? मुझसे वे छोड़ी न जाएँगी, पात्रों से बुरी तरह जुड़ी रहती हूँ मैं।"[7]

'अन्या से अनन्या' में प्रभा खेतान स्त्री- अस्मिता का अद्भुत उदाहरण समाज के सामने रखती है। इस आत्मकथा में स्त्री- अस्मिता के कई स्वर मुखरित हुए हैं। मासिक धर्म के न आने से प्रभा खेतान डरती है, अविवाहित मातृत्व से सारा शरीर काँप उठता है। भयंकर मानसिक पीड़ा से गुजरते हुए प्रभा खेतान सोचती है अपनी अस्मिता की रक्षा अब मैं कैसे करूँ। वह अपनी पहचान बनाने की सोचती है, अपना अस्तित्व और अस्मिता बनाना उसका उद्देश्य बन जाता है। वे लिखती हैं- "इन कुंठाओं से निकलने का मुझे एक ही रास्ता नजर आया कि मैं अपना व्यापार खड़ा कर लूँ और वह भी निर्यात का , कम से कम देश- विदेश घूम तो सकूंगी, लोगों की नजर में इज्जत मिलेगी वह अलग।[8] प्रभा खेतान की आत्मकथा स्त्री के अस्तित्व और अस्मिता के संघर्ष का दस्तावेज है। वह धीरे- धीरे अपने ऊपर लगे आरोपों को हीनता भाव से उभारती है, अपनी शक्ति तथा ठोस जमीनी यथार्थ को पहचानते हुए अस्मिता के लिए संघर्ष करने के लिए कटिबद्ध होती है।

कुसुम अंसल की आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' में लेखिका बचपन में डरी- सहमी में अपने ही ख्यालों के घेरे में रहती है परंतु उनके सादे रहन- सहन को देखकर बड़े भाई द्वारा मिली नसीहत को कुसुम पल्ले बांधकर रखती है। कहती है, "जाहि से किसी ने झकझोर कर मेरे भीतर के स्व को उठाकर खड़ा कर दिया है।"[9] अपने अस्तित्व की तलाश में निकले कुसुम से हमेशा यह प्रश्न आकर टकराता है, "मैं कौन हूँ? मेरी वास्तविकता क्या है? धड़कन- धड़कन पूँछती मैं कौन हूँ ?"[10] इस खोज में उन्होंने कई औपन्यासिक रचनाएँ और कहानियाँ लिखीं। उनके स्वतंत्र अस्तित्व को संकुचित दायरे में कैद करने के अनेकों प्रयास होते रहे परन्तु कुसुम के पास एक रचनाकार का मस्तिष्क होने के कारण वे अपने अस्तित्व और अस्मिता को बनाए रखने में सफल होते हैं।

मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में लेखिका का अस्तित्व और अस्मिता के लिये स्त्री का संघर्ष दिखाई देता है। वास्तव में मन्नुजी स्त्री को सम्माननीय

नजरों से देखने के पक्षधर हैं। वह उसका अस्तित्व समाज के सामने रखना चाहती है और वे खुद अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए संघर्ष करती है। वे जानती थी कि स्त्री की स्वतंत्र पहचान नहीं है,। न ही उसकी कोई प्रतिष्ठा है। उसकी पहचान केवल रिश्तों को लेकर बनायी गयी है। स्त्री के अस्तित्वहीन व्यक्तित्त्व के बारे में वे लिखती हैं "हमसे पहले वाली पीढ़ी की स्त्री का न तो कोई स्वतंत्र अस्तित्व होता था, न ही कोई स्वतंत्र पहचान, वह तो मात्र रिश्तों से ही पहचानी जाती थी। वह किसी की बेटी, पत्नी , माँ, बहिन, चाची, ताई, बुआ, भाभी ही होती थी। इन रिश्तों से परे भी उसका अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्त्व है। उसका अपना कोई नाम (अस्मिता) भी है, इस बात का उसे कोई बोध तक नहीं था न उसे, न उसके परिवार के लोगों को बल्कि कहूँ कि समाज को।"[11] लेकिन समय के साथ-साथ शिक्षा, जागरूकता, आर्थिक स्वतंत्रता और बाहरी दुनिया से बढ़ते रिश्तों ने उसके भीतर इस बोध को जगाया कि उसकी अपनी एक स्वतंत्र सत्ता है अपनी अस्मिता है किवह भी समाज की एक स्वतंत्र जीवंत इकाई है।

समाज में स्त्री की स्थिति बहुत दयनीय है।स्त्री के नाम पर किसी भी पुरुष की पहचान नहीं होती है। लेखिका ने अपने घर में माँ के अस्तित्वहीन व्यक्ति को देखा था जो उसे कभी अच्छा नहीं लगा था। मन्नुजी अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाना चाहती थी।स्वावलम्बी बनना चाहती थी।अपने स्वतंत्र निर्णय के लिए वे अपने पिताजी से भी टक्कर लेती है।शादी के बाद पति की आंखो से आंख मिला कर बात करती है। खुद नौकरी कर अपना परिवार भी चलाती हैं।वे लिखती हैं- "अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिताजी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था,राजेन्द्र से शादी की,तब तक वह चलता ही रहा।"[12]

मन्नू भंडारी शुरुआत में कलकत्ता के बालीगंज शिक्षा सदन में नौकरी करती है।राजेन्द्र यादव के साथ शादी कर दिल्ली जाती है। दिल्ली में वे कॉलेज में अध्यापन कार्य करती थी।टीवी के प्रोग्राम के लिए लिखती है। अपनी कमाई से एक फ़्लॉट खरीदती है। अपना अस्तित्व और अस्मिता बनाए रखने के लिये जीवनभर संघर्ष करती है।

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा का दूसरा भाग 'और-और ...औरत' में स्त्री की अस्मिता और अस्तित्व का संघर्ष देखने को मिलता है। समाज में अकेली स्त्री को अपनी अस्मिता के लिए कई पुरुषों से टकराना पड़ता है। समाज उस पर कई प्रकार के आरोप लगाते हैं। अकेलापन का लाभ उठाना चाहते हैं। कृष्णा अग्निहोत्री पति से अलग रहती है, अकेली होने के कारण उसे कई कटुतापूर्ण अनुभवों से गुजरना पड़ता है। पर वे पीछे नहीं हटती। अपने इस अनुभव के बारे में भी लिखती हैं - "आज भी ऊँची उड़ान के बावजूद स्त्री अस्मिता को समाज ने अपनी मुट्ठी में कैद रखा है। अपने को बहुत झुलसे, समझदार एवं आधुनिक कहने वाले पुरुषों ने भी बिना चढ़ावे के किसी स्त्री की सहायता शायद ही की हो।"[13]

कृष्णा अग्निहोत्री जी स्त्रियों को स्वयं अपना रास्ता बनाने का संदेश देती है। अपनी अस्मिता और अस्तित्व की लड़ाई लड़ने को कहती है। लेखिका को ऐसे अनेक पुरुष मिले जो उनके अकेलापन का लाभ उठाना चाहते थे। पर वे अपने अस्तित्व की रक्षा करती है। क्योंकि स्त्री का अपना अस्तित्व होता है, अस्मिता होती है,मान मर्यादा होती है, वह छोटी हो या बूढ़ी हर उम्र में उसका अपना अस्तित्व और अस्मिता होती है। नारी अस्तित्व और अस्मिता को लेकर कृष्णा जी का यह चिंतन बहुत महत्त्व रखता है - "आज भी स्वतंत्र अकेली जीने वाली नारी की अस्मिता की प्रशंसा करना अतिशयोक्ति ही है। पहले तो यहाँ की संस्थाएँ ऐसी नहीं ,जो अकेली रहने वाली स्त्री के दैनंदिन कार्यों में सहयोग करें ।उसे कानूनी एवं सामाजिक परेशानियों से बचाएं। नारी अस्तित्व वर्तमान में भी उलझा है एवं शोषण का शिकार ही है। रिश्ते बनाने में यदि सौदा एवं गणित रहेगा तो अस्मिता बचाना कभी सुखदायक न होगा।"[14] स्पष्ट है स्त्री को हर दिन हर समय अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाने के लिये संघर्ष करना पड़ता है। इन अनुभवों से लेखिका को भी गुजरना पड़ता है। यह अनुभव स्त्री के लिए बेहद दर्दनाक है। फिर भी अपनी पहचान बनाने के लिए स्त्री संघर्ष करती है जिसपर लेखिका प्रकाश डालती है।

व्यवस्था ने हमेशा यही समझा है कि कमजोरी का नाम 'औरत' है । पुरुष प्रधान समाज में पुरुष का ही मान सम्मान और अस्तित्व मायने रखता है स्त्री का नहीं। आधुनिक शिक्षा के परिणाम स्वरूप धीरे -धीरे नारी की स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। नारी जो पूर्णतः पुरुष पर आश्रित थी, आत्मनिर्भर होकर अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए कोशिश कर रही है।

ये आत्मकथा लेखिकाएँ परंपरा को पूर्ण रूप से तोड़ना चाहती है ,वे स्त्री को अपने अस्तित्व और अस्मिता की भावना को आदर देना सिखाती है। ये आत्मकथा लेखिकाएं न केवल अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए दिखाई देती है अपितु समाज की अन्य महिलाओं की अस्मिता को बनाए रखने के लिए भी संघर्षरत है। समाज में बहनापे की भावना को बढ़ाकर स्त्री समाज को सुदृढ़ और पुख्ता करना चाहती है।

स्त्री अस्मिता को इस प्रकार परिभाषित किया गया है "आखिर स्त्री अस्मिता है क्या? दरअसल यह पुरुष के समान स्त्री का समान अधिकार, स्त्री के प्रति विवेक मूलक दृष्टिकोण तथा स्त्री द्वारा पुरुष के वर्चस्व का प्रतिरोध है। औरत का केवल स्वतंत्र होकर निर्णय ले जाना या आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाना ही उसकी अस्मिता नहीं है। कई मायनों में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामिल है।"[15] वास्तव में स्त्री अस्मिता हो गया था पुरुष को सत्ताच्युत कर खुद सत्ताहीन होना नहीं है। उसका लक्ष्य एक ऐसी दुनिया का निर्माण करना है ,जो दमन के कुचक्रों से मुक्त होगी, जहाँ स्त्री व पुरुष एक दूसरे के विरुद्ध नहीं ,एक दूसरे के पूरक बनकर साथ-साथ चलेंगे, जहाँ दोनों के मानवाधिकारों की रक्षा होगी, जब हम विभिन्नताओं और बहुलताओं को घृणा की दृष्टि से नहीं बल्कि सृष्टि के आनंददायी उत्सव के रूप में स्वीकार किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मानक हिंदी कोश सं रामचन्द्र वर्मा, पृष्ठ 286
2. प्रतिरोध के स्वर - सुदेश बत्रा, पृष्ठ 54
3. कस्तूरी कुंडल बसै - मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ 188
4. वही - मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ 44
5. वही - मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ 188
6. गुड़िया भीतर गुड़िया - मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ 130
7. वही - मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ 248
8. अन्या से अनन्या प्रभा खेतान पृष्ठ 199
9. जो कहा नहीं गया - कुसुम अंसल पृष्ठ 10
10. वही - कुसुम अंसल पृष्ठ 11
11. एक कहानी यह भी - मन्नू भण्डारी पृष्ठ 118
12. वही - मन्नू भण्डारी पृष्ठ 23
13. और ... और औरत - कृष्णा अग्निहोत्री पृष्ठ 21
14. वही - कृष्णा अग्निहोत्री पृष्ठ 104
15. स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधा कुमार

मिनि कविता

प्यार

मूल : शशी माविनमूड

समुंदर को देखकर
तू ने कहा कि
तुझमें सागर-सा प्यार है।
तेरे प्यार में थोड़ी-सी
कमी न हो,
इसीलिए
मैंने
तुझे नदी या झील
नहीं दिखाया
फ़िर भी,
आखिर
तेरा प्यार
अहाते के
कुए की गहराई में
विलुप्त हो गया।

(मलयालम से भाषांतरण :
डॉ एम एस विनयचंद्रन)

शोध छात्रा
महाराजास कॉलेज , एर्नाकुलम

समकालीन मलयालम कहानियों में पर्यावरण चिंतन

डॉ सुगता ए आर

शोध सार - पर्यावरण चिंतन समकालीन समय की माँग है क्योंकि वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ती जा रही हैं। इसका प्रमुख कारण प्रकृति पर मानव के बढ़ते हुए हस्तक्षेप हैं। समकालीन रचनाकार इस समस्या को संबोधित करते हुए पाठकों को सचेत करना चाहते हैं। मानव के हस्तक्षेप के चलते प्रकृति पर होनेवाले बदलाव, पर्यावरण शोषण आदि को दर्शाने में समकालीन मलयालम कहानियाँ सफल हुई हैं। अंबिकासुतन माड्डाड, पी. वत्सला, पी. सुरेंद्रन, पी.एन. विजयन और सुसमेष चंद्रोत्त आदि ने अपनी कहानियों के माध्यम से पर्यावरण विनाश के खिलाफ आवाज़ उठाई हैं। क्योंकि यह आज की ज्वलंत समस्या है और यह हमारे अस्तित्व के लिए भी खतरा है। इसलिए इसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया वे अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

बीज शब्द - प्रकृति- समकालीन मलयालम कहानी- पर्यावरण संतुलन-संस्कृति- विकास योजना- शोषण- अंबिकासुतन माड्डाड- वायिल्ला कुन्निलप्पन- पी.वत्सला- पंगुरु पुष्पत्तिन्टे तेन- पी.सुरेंद्रन- स्मार्ट सिटी- पी.एन. विजयन- इरकल- सुसमेष चंद्रोत्त- हरितमोहनम

मूल आलेख : प्रकृति को देवता के रूप में देखने की परंपरा हमारी संस्कृति में पहले से ही रही है। पुराने ज़माने में हम प्रकृति की पूजा करते थे लेकिन आधुनिक सभ्यता के चलते मनुष्य और प्रकृति के बीच मौजूद जैविक संबंध खतम होते जा रहे हैं। औद्योगिक प्रगति और बाजारीकरण के कारण मानव प्रकृति के नियमों को चुनौती देकर मुनाफा कमाने की ओर बढ़ रहे हैं। इससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ते जा रहे है। मानव ने प्रकृति का बहुत कुछ बर्बाद कर दिया है, अगर हम अब भी सचेत नहीं हुए तो पूरे मानव राशि का अस्तित्व मिट जाएँगे। वास्तव में हमें पर्यावरण को आगामी पीढ़ी के लिए भी सुरक्षित रखना है लेकिन हम अपनी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए उसका अंधाधुंध शोषण करते रहते हैं। उपभोग संस्कृति के पीछे भागने वाले मनुष्यों के लिए संवेदनशीलता,सहनशीलता, पर्यावरण के अनुकूल मूल्य आदि अब अर्थ हीन बन गए हैं। उनके लिए प्रकृति की पूजा करने और अपनी संस्कृति के तहत पर्यावरण संरक्षण करने वाले लोग अपरिष्कृत हैं। बदलते समय के साथ मानव आधुनिक बनने के नाम पर प्रकृति से दूर चला गया। केरल के सर्पकाव हमारी संस्कृति और पर्यावरण बोध का प्रतीक है। आज मनुष्य और प्रकृति के बीच के आपसी संबंध के लय और ताल बिगड़ चुका है क्योंकि लोग प्रकृति को अपने अधीन रखने की वस्तु मात्र मानने लगे हैं। परिणामस्वरूप पर्यावरण नाश और प्राकृतिक आपदाओं की संख्या आज के दौर में बढ़ रही हैं।यह आशंका की बात है। विकास योजनाएँ इस विनाश के प्रमुख कारणों में से एक हैं। क्योंकि इन योजनाओं के नाम पर खेत मिट्टी से भर दिये जाते हैं और जल स्रोतों की गति अवरुद्ध करके उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं। यह मानव की बदली हुई मानसिकता का भी परिणाम हैं। पुराने ज़माने में मानव प्राकृतिक शक्तियों को ईश्वर के समान पूजते थे और वे प्रकृति के अन्य जीव जंतुओं को भी प्रकृति के हकदार मानते थे लेकिन आज स्थिति बदल गयी है। आबादी के बढ़ने से उत्पन्न प्रदूषण, प्राकृतिक संपदाओं का शोषण, नई विकास योजनाओं के चलते खेत,जंगल और नदी आदि का विनाश, जीव-जंतुओं की तस्करी एवं उपभोक्तावाद से उत्पन्न यूस एंड थ्रो संस्कृति आदि ने प्रकृति को मृदु भाव छोड़कर संहार रूप लेने के लिए मजबूर कर दिया है। मानव के स्वार्थ के कारण प्रकृति का दोहन शोषण हो रहा है। वे केवल अपने फायदे के बारे में सोचते है। इसका बुरा असर पर्यावरण और जीव-जंतुओं पर भी पड़ते हैं। प्रकृती के साथ होनेवाले विध्वंस के पर्दाफाश समकालीन मलयालम कहानियों में हम देख सकते हैं।

अंबिकासुतन माड्डाड की कहानी 'वायिल्ला कुन्निलप्पन' में मानव के एक पक्षीय विकास नीति के दुष्परिणाम को दर्शाया गया है। इसमें वाषनगोडन औसेफ मालिक के माध्यम से यह दिखाया गया है कि सत्ताधारी

और धनवान लोग अपने फायदे के लिए किस प्रकार जल, जंगल और ज़मीन का शोषण करते रहते हैं। कहानी की शुरुआत में घने जंगल, गिरे हुए फूल और फलों से भरे रास्ते, पक्षियों की ऑर्केस्ट्रा और जंगल के गर्भपात्र जैसे दिखनेवाले तालाब में पानी पीने के लिए आए जीव-जन्तुएँ आदि का दृश्य हैं तो कहानी के अंत में हरियाली की जगह सूखी मिट्टी, उखड़े हुए जड़ें, टूटी हुई जड़ें और पत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। यह विनाश कोई प्राकृतिक आपदा के कारण नहीं हुई थी बल्कि लोभी मनुष्य का प्रकृति पर किए गए हस्तक्षेप का परिणाम है। ये दोनों दृश्य मनुष्य की क्रूरता को दर्शाने में सक्षम हैं। लोगों के बढ़ते हस्तक्षेप के कारण नेत्रावती नदी सूख गयी है। वाषनगोडन उस सूखी नदी को सरकार से खरीदकर वहाँ पर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की तैयारी कर रहा है। इसका चित्रण कहानी में इस प्रकार है -

"वह एक धनी व्यक्तिहै जिसने सूख चुकी नेत्रावती नदी को सरकार से नकद पैसे देकर खरीदा है। वह राजनीति में भी एक बड़ा देवता है। मैंने सुना था कि वह नदी की जगह पर मिट्टी डालकर एक हाउसिंग कॉम्प्लेक्स,एक सुपरमार्केट और एक सुपर स्पेशियालिटी अस्पताल बनवा रहा है। शायद इसलिए यह पहाड़ी तोड़ी जा रही है।"[1] वास्तव में राजनीतिज्ञ और बड़े लोगों के द्वारा पर्यावरण पर किए जानेवाले कब्जे को कानून की भी सहमति मिल जाती है। यह चिंताजनक बात है क्योंकि कोई भी नेता या धनी व्यक्ति पैसा देकर प्राकृतिक संपदाओं को अपनी मनमानी के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। वास्तव में पर्यावरण सब के लिए है और वह आगामी पीढ़ी के लिए भी है लेकिन स्वार्थी मनुष्य प्रकृति को निर्ममता से लूट रहे हैं। सूखी नेत्रावती नदी को पुनर्जीवित करने के बजाय वह उस पर मिट्टी भर रहे हैं और इसके लिए हमारी संस्कृति की एक हिस्सा रहे परयियम्मा और आदिपिता वररुचि के मंडप स्थित पहाड़ी को गिराते हैं। उस चोटी को गिराने का मतलब है हमारी संस्कृति को मिटाना।वास्तव में तिरुवेशन पहाड़ी के मंडप को तोड़कर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की प्रक्रिया हमारी संस्कृति को नष्ट करके उपभोग संस्कृति को अपनाने जैसा ही है। क्योंकि शॉपिंग कॉम्प्लेक्स उपभोग संस्कृति का प्रतीक है।

कहानी के अंत में नायक इस शोषणकारी तत्वों के खिलाफ आवाज उठाना चाहता है लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाता क्योंकि तब तक वह एक छोटा सा बच्चा बन चुका था, जिसका मुँह नहीं था। यहाँ पर रचनाकार ने 'वायिल्ला कुन्नीलप्पन' के प्रतीक को इस्तेमाल किया है,जो केरल की परंपरा और संस्कृति का अभिन्न अंग है। वे वररुचि और परयियम्मा के पुत्र है जिसका जन्म बिना मुँह से ही हुआ था इसलिए उनका नाम ऐसा पड़ा। उस मिथक को कहानी में इस्तेमाल करने के साथ-साथ कहानी का शीर्षक भी वही रखा गया। मुँह न होने के कारण नायक पर्यावरण शोषण और जंगल पर किए गए विनाश के खिलाफ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्तही नहीं कर पाते है। इससे कहानीकार यह दिखाना चाहता है कि किस प्रकार राजनीति और धनवान लोग अपने पैसे और सत्ता से आम जनता के मुँह बंद करा देते हैं। आधुनिक उपभोग संस्कृति में पर्यावरण के लिए कोई जगह नहीं है। उनके लिए वह मात्र प्राकृतिक संपदा है जिसे वह अपनी मनमानी के अनुसार इस्तेमाल कर सकता हैं। और इस उपभोग संस्कृति हमारी प्रतिक्रिया को भी धीरे-धीरे खत्म कर रहे हैं।

पी.वत्सला की कहानी 'पंगुरु पुष्पत्तिन्टे तेन' में प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर जीवन बिताने वाले बसवन और उनकी नव वधू चल्ली की कथा को प्रस्तुत किया है। बसवन का जन्म गाँव में हुआ था फिर भी वह हमेशा जंगली ही था। गाँव वाले बसवन को आवारा मानते हैं क्योंकि वे बंजारे की तरह कहीं भी चले जाते हैं और फिर कभी शहद की एक मटके के साथ मेले में दिख जाते हैं। जिसे बेचकर उस पैसे से वह दारू पीकर फिर कहीं चला जाता है। भौतिक सुख सुविधाओं में उनका विश्वास नहीं था इसलिए उन्होंने पक्का घर नहीं बनाया था और चल्ली के लिए कोई कपड़े भी नहीं खरीदे थे। इसलिए अपने पिता के द्वारा दिए गए नीले रंग की साड़ी पहनकर वह बसवन के घर आयी थी। एक दिन भ्रमर उनके घर आता है और उसे देखकर बसवन समझ जाता है कि इसे पंगुरु फूल की लता ने भेजा है। पंगुरु फूल को देखने की इच्छा के कारण दोनों जंगल की ओर चले जाते हैं। एक विशाल पेड़ में उन्हें पंगुरू की लता दिखाई पड़ती हैं और उसमें पत्तियों के बीच चाँदिनी की तरह पंगुरू के फूल लटका हुआ है। बसवन के अनुसार यह लता स्वर्ग की ओर जाती है। पंगुरु पुष्प

की परिमल से युक्तउस जगह में पत्तों से बनी झोपड़ी में वे लोग रहने लगते हैं। बच्चे का जन्म भी वहाँ हुआ और जंगल ने उसी आवाज़ को कोई भावभेद के बिना अपनाया। वर्षा और सर्दी को भूलकर वे वहाँ रहने लगते हैं।उस जंगल में बच्चा धीरे-धीरे बढ़ने लगा। तब तक उनके बर्तनें मिट्टी के ढेर बन चुके थे और एल्युमिनियम के बर्तनों में चींटी ने अपना अड्डा बनाया था। अचानक चल्ली का गाँव वापस जाने की बात से बसवन को झटका लगते है। पढ़ाई के नाम पर उस कॉक्रीट के जंगल में बच्चे को भेजने की बात से वे सहमत नहीं थे। वह हमेशा प्रकृति से जुड़कर ही जीना चाहता था इसलिए गाँव के कॉक्रीट मकानों और उस कृत्रिमता को वे पसंद नहीं करते थे। कॉक्रीट से निर्मित उस मकान में बच्चे को न भेजने के निर्णय के पीछे भी यही कारण है। लेकिन चल्ली के जिद्ध के आगे वह मान जाता है और वे लोग गाँव चले जाते हैं। तब तक गाँव की परिस्थिति बदल चुकी थी। पर्यटकों ने गाँव पर कब्जा कर लिया था। दूकानों के सामने उन लोगों के भीड़ दिखायी पड़ने लगे। दूकानदार पर्यटकों के सामने झुककर खड़े थे। इसका उल्लेख कहानी में इस प्रकार है- "गाँव पर्यटकों की भीड़ से भरा है। चौराहे की दूकानों के सामने वे झुंड बनाकर खड़े हैं। चारों दूकानें उनके सामने विनम्रता से खड़ी हैं। क्या चाहिए? क्या चाहिए? आपको क्या चाहिए? उन्हें सब कुछ चाहिए। शराब, औरतें, मंदिर दर्शन, प्रकृति, सौदर्य का आनंद,शीतल स्नान,गर्म बिस्तर,जंगल का शहद।"[2] बसवन शहद लेकर आए थे उसे लेने के लिए कई लोग आते हैं लेकिन वह किसी को न देकर गाँव से मुड़कर चला जाता है। कहानी में एक ओर पर्यावरण के साथ जुड़कर जीनेवाले बसवन के द्वारा यह दिखाया गया है कि प्रकृति को बिना नष्ट करके कैसे जिया जाता है। दूसरी ओर बसवन के वापस आने पर गाँव की बदली हुई स्थिति को दिखाकर यह बताना चाहता है कि किस प्रकार प्रकृति पर बढ़ते मानवीय हस्तक्षेप और पर्यटन पर्यावरण को प्रभावित करता है।

पी.सुरेद्रन की कहानी 'स्मार्ट सिटी' में एक पक्षीय विकास नीति के दुष्परिणाम को दर्शाया गया है। बड़े लोग कोलनी के मैदान में आकार वहाँ पर बनानेवाले मकानों और उसकी विशेषताओं के संबंध में ऐलान करते हैं। उन लोगों के कहने पर कोलनिवाले अपने घर छोड़कर पीछे की दलदली भूमि में जाकर बसने लगते हैं। शहर बनने के बाद बारिश में पानी टपकने वाले घर में सौभाग्य की बरसात होने की आशा में वे लोग जिंदगी गुजारने लगते हैं। झोंपड़ियों से भी उँचाई तक मिट्टी डालकर उन लोगों ने नए शहर की भूमि तैयार की। ट्रैकों की आने जाने की आवाज से उन लोगों के कान पक गए। जेसीबी के प्रति लोगों की दिलचस्पी जल्दी ही खत्म हो गयी थी। निर्माण के बाद शहर की सीमा पर ऊँचे दीवार खड़ी कर दी गयी। दीवार के बीच-बीच में बड़े छेद थे जिसे वे लोग भाग्य का प्रतीक मानते थे। एक दिन सुबह कुछ गिरने की आवाज आयी तो लोगों ने देखा कि उस छेद से आने वाले पाइप से दुर्गंध से भरा जल उनके छत पर गिर रहा है। कहानी में इसका उल्लेख इस प्रकार है- "वह दीवारों में बने छेदों से हमारी छतों पर फैली पाईपों के ज़रिए आया और गिरा।जैसे ही उन्होंने पहचाना कि यह क्या है,हमारी महिलाएँ छाती पीटकर रोते हुए छतों पर चढ़ गईं। दुर्गंध असहनीय थी। गाढ़े पानी का बहाव तेज़ हो गया। छतें टूटकर झुक गईं। हमारी झोपड़ियों के सामने मल और ठोस कचरे का ढ़ेर बन रहा था। उस ढ़ेर के पीछे विलाप कम होते-होते खत्म हो गए।"[3] कहानी में यह दिखाया गया है कि विकास के नाम पर बड़े लोग किस प्रकार पर्यावरण और गरीबों का शोषण करते रहते हैं। बड़े लोग उनकी गंदगी को दूर करने के लिए कोलनी वालों के उपर फेक देते हैं इससे उन लोगों के साथ-साथ पर्यावरण पर भी बुरा असर पड़ता है।आधुनिक मानव ने हमेशा प्रकृति को कूड़ेदान के रूप में ही इस्तेमाल किया है। कूड़ा-कचरा पर्यावरण और जीव-जंतुओं के सामने एक भीषण समस्या बन गयी हैं।

पी. एन. विजयन की कहानी 'इरकल' में पालक्काड जिले के चिट्टूर में स्थित भाग्यलक्ष्मी नेत्यारम स्मारक सहायता प्राप्त प्राथमिक विद्यालय के स्थायी छात्रों का अचानक बड़ी संख्या में गायब होने से लेकर पर्यावरण विनाश तक की कथा को प्रस्तुत किया गया है। एक सप्ताह के भीतर, नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, जिले के एक सौ अट्ठाईस विद्यालयों से दो हजार से अधिक भविष्य के नागरिक इस अज्ञात महामारी के शिकार हो गए। विज्ञान शिक्षक आर.के. वर्गीस मास्टर ने सच जानने के लिए बच्चों का पीछा किया। आनंदकुमार वर्गीस मास्टर के चौथी कक्षा का प्रिय

शिष्य था। मास्टर ने उन लोगों से उस रहस्य के बारे में जानने की कोशिश की। मास्टर से उसकी गोपनीयता बरकरार रखने का वादा कराने के बाद बताया गया कि वे केंचुए को पकड़ने के लिए जा रहे हैं। दस केंचुए को पकड़ने के लिए एक रुपया मिलेगा इसलिए वे एक दिन में दो सौ से ज्यादा पकड़ते हैं। वे आँगन और खेत से उन्हें पकड़कर प्लास्टिक कवर में डालकर देते हैं। लेकिन इसके पीछे कौन हैं उसके बारे में उन लोगों ने कुछ नहीं बताया। वे दोनों पोलित्तीन कवर लेकर आगे बढ़े। मास्टर उन्हें रोक नहीं पाया इसलिए वे निस्सहाय महसूस करने लगे। मास्टर को सामने केंचुए दिखायी देने लगे।पोलित्तिन कवर का ढ़ेर सामने बनता गया। वह पहले डब्बे में और बाद में ट्रकों में भरे जा रहे हैं। इस कहानी में जीव-जंतुओं के शोषण को दर्शाया गया है- "वर्गीस मास्टर ज़मीन की ओर देखकर कराहने लगे। मास्टर के सामने केंचुए तड़प रहे थे। पॉलिथीन के ढेर लग रहे थे। उन्हें बक्सों में और फिर ट्रकों में लादा जा रहा था। देखो,वे हमारी धरती की हलचल और जीवन शक्तिको ले जा रहे हैं। उन ट्रकों को रोको। उन बक्सों और पैकटों को तोड़ो। बच्चों को आज़ाद करो।"[4] मास्टर चिल्लाते हुए दौड़ने लगे। इसमें जीव-जंतुओं और प्राणियों की तस्करी के बारे में बताया गया है। यहाँ पर केंचुए को गाँव से पकड़कर पैक करके भेजा जा रहा है। वास्तव में केंचुए को किसान के मित्र कहा जाता हैं क्योंकि मिट्टी के स्वास्थ्य एवं उर्वरता बनाए रखने में और जैविक खेती में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। यह कृषि के लिए भी फायदेमंद होते हैं क्योंकि यह जैविक खाद्य का निर्माण करते हैं। मिट्टी की जल निकासी में मदद करने के साथ-साथ मिट्टी की संरचना सुधारने में और मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने में मदद करते हैं।लोग प्रयोगशाला में देने के लिए इन्हें पकड़ते हैं। बड़ी मात्रा में इसे पकड़ने से मिट्टी की स्वास्थ्य और उर्वरता नष्ट हो जयेंगे और साथ ही इससे हमारी पारिस्थितिक तंत्र और कृषि पर भी बुरा असर पड़ेगा। क्योंकि हमारे खाद्य श्रृंखला में प्रत्येक जीव का अपना योगदान है। केंचुए के नाश से उसे खाकर जीने वाले जंतुओं का भी नाश होगा।

सुस्में चंद्रोत्त की कहानी 'हरितमोहनम' में आधुनिक मानव की बदलते तेवर और अपनी संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने की मानसिकता को दर्शाया गया है। कहानी के नायक एक फ्लैट में अपनी बीवी और दो बच्चियों के साथ रहते हैं। सार्वजनिक लिफ्ट में मिट्टी मिलने पर शिकायत करने के लिए फ्लैट के देखभाल करने वाले राजन पिल्लै उनके घर में आते हैं। उनके गुस्से के सामने नायक एक अपराधी की तरह गलती कुबूलते हुए कहते है कि मिट्टी लाते समय कवर फटकर नीचे गिर गए थे। वे गुस्से से ऊँची आवाज में बोलने लगे कि "थोड़ी सी? लिफ्ट में घुसे बच्चों के हाथ दिखाते हुए श्रीमती पूर्णिमा और श्रीमती चंद्रतारा मेरे पास आई थी अगर उन्हें कुछ हो जाता तो क्या तुम जवाब दोगे या नहीं?"[5] इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि मुझे एक फूल का पौधा मिला और मैंने सोचा कि मिनरल वाटर की बोतल काटकर उसमें मिट्टी भरकर छत पर रख देंगे। पिल्लै ने गुस्से में कहा कि "क्या उसके लिए कोई मनी प्लांट पर्याप्त नहीं है उसमें सिर्फ पानी की जरूरत होती है या फिर तुम्हें असली को मात देने वाले प्लास्टिक के पौधे मिल जाएँगे।"[6] इन दोनों बातचीत से मिट्टी को गंदगी की तरह देखने के नजरिए का पता चलता है। यह पाश्चात्य संस्कृति की देन है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति का अपना महत्व है। असल में मिट्टी से जुड़कर रहना हमारी संस्कृति का ही अंक है। राजन पिल्लै ने कहा कि "जब सभी मिट्टी और धूल चटककर बाहर फेंक रहे हैं तो तुम मिट्टी को अंदर क्यों खींच रहे हो?"[7] यह सुनकर उनका सीना दुख से फटने लगते हैं क्योंकि उन्होंने एक बार लिफ्ट में खून की बूँदें देखी थी। जमीन और दीवार पर खून के धब्बे थे जिससे किसी जीव की चीख उठ रही थी उनके मन में यह सवाल आया कि "क्या मांस के लिए मारे गए जानवर के खून से भी ज्यादा घृणित और नीच है मिट्टी?"[8] कहानी में लोगों की बदली हुई मानसिकता को दर्शाने की कोशिश की गयी है। नई पीढ़ी हमारी संस्कृति और मिट्टी को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यह उनकी बेटी की बातों से पता चलता है "पापा ने हाथ से मिट्टी ली थी? तो माँ भी डाटेंगे,मिट्टी गंदी है।"[9] उस छोटी बच्ची की सोच समाज की अधिकांश लोगों की सोच हैं। असल में बड़ों की बातों से ही बच्चों के विचार रूपायित होते हैं। मिट्टी और प्रकृति से दूरी बनाए रखनेवाले लोगों के बीच में मिट्टी से जुड़कर जीने की इच्छा रखने वाले नायक के द्वारा आज की बदली हुई मानसिकता को व्यक्तकिया हैं।

मनुष्य और प्रकृति के आपसी अंतर्संबंधों की झलक और प्रकृति पर कब्जा करने की आधुनिक मानसिकता समकालीन मलयालम कहानियों में हम देख सकते हैं। आधुनिक मानव की अतृप्त लालसा और सीमित प्राकृतिक संपदाओं के चलते प्रकृति का दोहन शोषण हो रहा है। प्रकृति पर आक्रमण करके उसे अपने अधीन रखने की इच्छा भी इनमें है। यह प्रवृत्ति मानव को विनाश की ओर ले जाएगा इसलिए लोगों को सचेत करने की कोशिश रचनाकारों ने की हैं। विकास के नाम पर जंगल और जलस्त्रोतों का नाश हो रहे हैं। विकास ज़रूरी है लेकिन वह पर्यावरण विनाश के बिना होना चाहिए। प्रकृति को प्रतियोगी मानकर उस पर आक्रमण करके उसे अपने अधीन रखने की मानसिकता में भी बदलाव होना चाहिए क्योंकि एक अच्छे भविष्य के लिए प्रकृति का संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अंबिकासुतन माड्डाड- प्राणवायु- डी सी बुक्स, कोट्टयम- 686001,केरल- 2022- पृ.संख्या- 71
2. पी. वत्सला- पंगुरु पुष्पत्तिन्टे तेन- श्रेष्टा पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटड,तिरुवनंतपुरम 14, 2017, पृ.सं. -16
3. पी. सुरेंद्रन - पच्चञरंब- आपिल बुक्स, तचमपारा. पी.ओ, पालक्काड- 2021- पृ.सं. -71
4. अंबिकासुतन माड्डाड (संपादक)- मलयालत्तिले परिस्थिति कथकल- मातृभूमि बुक्स,कोषिक्कोड- 673001- 2016- पृ.सं.- 103
5. वही- पृ.सं.-105
6. वही- पृ.सं.-106
7. वही
8. वही
9. वही- पृ.सं.-107

पोस्ट डॉक्टरल फेलो,हिन्दी विभाग
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविध्यालय
कोच्चि- 682022

कविता

नीले गगन के राही

वैष्णवी ए

एक मज़बूत सीने में अंगारे लिए...
सदा चलने वाले यात्री है।
ऊँचे पहाड़ों को लांघकर
रेगिस्तान को पार करके
लंबी दूरियाँ तय करके...
एक मज़बूत सीने में अंगारे लिए....
सदा चलनेवाले यात्री है।
बहते-बढ़ते हुए राहों पर
बस एक ही लक्ष्य को आँखों में लिए..
एक मज़बूत सीने में अंगारे लिए....
सदा चलनेवाले यात्री है।
उड़ान भरते हुए हम यात्री...
इस पूरी दुनिया को घूमकर
देख रहे हैं...
एक मज़बूत सीने में अंगारे लिए....
सदा चलनेवाले यात्री है।
पवित्र पंखों का उपयोग करके, हम...
फड़फड़ाहट का गीत सुनाते हैं...
हवा हमारी लोरी हैं.....
एक मज़बूत सीने में अंगारे लिए....
सदा चलनेवाले यात्री है।

विद्यार्थी, कक्षा - 6
सरकारी हाई स्कूल, प्लावूर

याखानविवरण

मानस कैलास

अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर

मूल : मंजु वेल्लायणि

अनुवाद : डॉ.रंजीत रविशैलम

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

डोलमा

देवी भागवतम की मान्यता है कि महामेरु के ऊपर है ब्रह्मा का निवास स्थान। वहाँ नौ नगर हैं। ब्रह्मा का नगर मनोवती। उसकी पूरब दिशा में इंद्र की अमरावती। दक्षिण पूर्व कोने में अग्नि भगवान की तोजोवती नगरी। ब्रह्मपुरी की दक्षिण दिशा में यम की संयमनी। पश्चिम में है वरुण की श्रद्धानती। उत्तर दिशा में कुबेर नगरी महोदय। डोलमा एवं पत्थरीले इलाके शायद यम की संयमनी है।

कैलास की चार दिशाओं में चार गुम्माएँ हैं। लामा के आश्रम को गुम्मा कहते है। लामा लोग यहाँ पर तपस्या करते है। हाथों में प्रार्थनाचक्र साधे हुए होते हैं। लामा एवं लामिनियाँ की नमस्कार परिक्रमा करते हैं। नीचे गिरकर दण्डवत नमस्कार करते है। फिर वहाँ से उठकर उस नमस्कार स्थान के आगे पुनः दण्डवत् प्रणाम। फिर दण्डवत् प्रणाम। सोलह हज़ार से लेकर उन्नीस हज़ार फीट तक ऊँचे अतिशैत्य कैलास के पार्श्वों के पत्थर मिट्टी एवं हिम को प्रणाम करते हुए परिक्रमा। घोडे एवं पैदल परिक्रमा करना ही बहुत कठिन है तब नमस्कार परिक्रमा कितनी कठिन होगी इसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

हरिद्वार इलाहाबाद एव प्रयाग की कुंभमेला की तरह बारह साल में एक बार मेलनोत्सव मनाया जाता है। पहले के वर्षों में यह उत्सव बहुत विपुल रूप में मनाया जाता था। दलैलामा के मंत्रीगण, लामा बौद्ध धर्मानुयायी आदि सभी ने इसमें भाग लिए थे।

कैलास की परिक्रमा करते कितने ही सहस्राब्दियाँ, संस्कृतियाँ, राजवंश, आचार, धर्मानुष्ठान हैं। हिंदू धर्म पर आस्था रखनेवाले शिवपंचाक्षरी मंत्र का जाप करते हुए परिक्रमा करते हैं। बौद्ध लोग लामा-लामिनीगण - मामेपेमेहुम मामेपेमेहुम नामक का जाप कर दण्डवत् प्रणाम करते हैं। बोन धर्मानुयायी विपरीत दिशा में कैलास की परिक्रमा करते है। गणेश तृप्ति एवं विघ्न निवारण के लिए ही हम जैसे नमन करते हैं। उसी तरह है- दण्डवत् प्रणाम। गणेश वंदना के आचार का आरंभ भी हिमालय से है।

सुब्रह्मण्य और गणपति माता-पिता के साथ कैलास में सानंद से रहने का समय था। एक दिन महाविष्णु कैलास में उमा महेश्वर के दर्शनार्थ आ पधारे। हाथ में जो सुदर्शन चक्र था उसे गणेश ने मुँह में रख लिया। विष्णु जानते है कि सुदर्शन चक्र कहाँ पर है। लेकिन बहुत परिश्रम करने के बाद भी विघ्नेश्वर ने मुँह नहीं खोला। बाद में दोनों हाथ एक दूसरे कानों पकड कर कोहनी नीचे रखकर महाविष्णु नमन करने लगे। इसे देख प्रसन्न होकर गणेश जी ठहाका लगाने लगे। तब सुदर्शनचक्र नीचे गिरा। सुदर्शनचक्र वापस पाते महाविष्णु गणपति को देख एक बार हँसे।

वैकुण्ठदर्शन एवं कैलास दर्शन भक्त मन को प्राप्त पंचामृत है। पंचभूतों से युक्त पंचामृत। हज़ार दिव्य वर्ष तपस्या करने के बाद ही ब्रह्मा को वैकुण्ठ दर्शन प्राप्त हुए थे। संकल्पना है कि वैकुण्ठ सारे लोकों के ऊपर प्रशोभित है। वह परम ज्योति का प्रकाशमान रूप है। वहाँ माया या

भाव नहीं होता। दु:ख, क्रोध, मूढता, भय आदि पास भी नहीं आते। परिपूर्ण नित्यानंद सदा प्रवाहमान है। वैकुण्ठ में गुण एवं काल का प्रवर्तन नहीं है।

श्रीमहादेव का श्रीमूलस्थान है कैलास। हालास्य माहात्म्य के अनुसार कैलास आसमान को छूकर खडा है। सारे आलयों की सेवा करनेवालों को सर्व इच्छाएँ प्रदान की जाती है। सारे पवित्र तीर्थों का उत्पत्तिस्थान श्री कैलास है। भूतगणों से वहाँ संरक्षित है। वह विष्णु महेन्द्रादि को भी अगम्य स्थान है। दूध सागर की उजाले को भी कैलास हतप्रभ कर देता है। विद्वज्जनों के मन एवं ईशानदिशा में कैलास एक समान प्रशोभित है। जीवन को शिवालय दौड करनेवालों एवं निसिवासर कैलास परिक्रमा करनेवालों के मन में ही है कैलास।

डोलमा की ओर की चढाई के समान ही है उतार भी। संतुलन नष्ट होने पर कहाँ निपात होता है यह बता नहीं सकते। उतरने पर गुठने पकड लेते है। दर्द असहनीय हो जाता है। ओषधियाँ पंचाक्षरी एवं ललिता सहस्रनाम ही है। संघ के सदस्य तितर-बितर हो चुके हैं। वह उचित हुआ। स्वयं अनुभूत दर्दों एवं परेशानियों को सहने हेतु वह सहायक है। सब का अकेले ही सामना करना है या ईश्वर ही एकमात्र सहारा है जैसी सोच जो कुछ भी है उसका सामना करने में ताकत प्रदान करती है। परिक्रमा पूरी नहीं कर सकती, एक कदम भी आगे लग नहीं सकता। अगले क्षण में कुछ भी हो सकता है जैसी चिंताओं में बहुत तो नज़र नहीं आया। सहन के लंबे अंतरालों में, औरों ने जो देखा था वे सब नष्ट हो चुके होंगे, अनेक दृश्य, अत्यपूर्व दृश्य, आवाज़ें ऐसे क्या क्या नहीं। उनमें दुख नहीं। नष्टबोध नहीं। चुल्लू भर तीर्थ के होने पर ऊँगलियों के बीच से रिसनेवालों के बारे में क्यों सोचना है - प्रथम अगस्त्यकूट यात्रा में पोंकालापारा और उसके ऊपर की खडी चढाईयों को पारकर रस्से पकड़कर अगस्त्य सन्निधि के निकट पहुँचने पर भयभीत थे। संघ के अनेक दोस्त बाद में उन्हें पकडकर ऊपर कर रहे थे। बाद की यात्राओं में ऐसी परेशानियाँ नहीं हुईं। वास्तव में ईश्वर को देखने के क्षण। यहाँ भी उसी तरह है। एक भेद है। यहाँ स्वयं को स्वयं ही आसर है या सबकी रक्षा करने के लिए अदृश्य ईश्वर ही है।

डोलमा के अंतिम पटाव को सरकते हुए या रेंगते हुए ही बहुत से लोग उतर रहे हैं। उतरकर पहचने के स्थान पर सौ मीटरों तक का हिमाच्छादन। हिम भरे ऊपरी हिस्से पर जहाँ वहाँ दरार पड चुके हैं। उसके नीचे का जल दरारों के बीच से दिखाई दे रहा है। यह सबसे नाज़ुक भाग है। दरारों के स्थान व गहराई का पता करने की क्षमता याकों को है। इसलिए ही कम गहरेवाले स्थानों का पता करने के लिए याकों को चलाता हैं। दुर्घटनाग्रस्त स्थानों का वे सूँघकर पता करते हैं और सुरक्षित मार्गों से चलते भी हैं। यात्री एवं षेरपा लोग याकों का अनुगम करते हैं। सोचने लगा कि हिमानी पार करने की ताकत याकों को नहीं होती तो, ऐसे रास्तों से ईश्वर शायद याकों के रूप में भी चलते होंगे। हिमानी पार करते वक्त झडी एवं ट्रेकिंगशूज़ देते आत्मविश्वास कम नहीं है।

डारजी ने सात बार कैलास यात्रा की। यात्रा करके वापस आते दम तक पत्नी एवं बच्चे काङ्- रिनपोच्चा नामक कैलास को श्रद्धा करके बैठते है। यात्रा करके वापस आने में कम से कम दो सप्ताह लगते हैं। काठ्मण्डु एवं कोदारी के ट्रेवल एजेंट से डारजी का अच्छा संबंध है। दुर्घटनाग्रस्त पेशा होने पर भी सेह्त अच्छे रहने तक यात्रियों को लेकर जाना है। मानसरोवर और कैलास दिखाना है। कैलास कभी भी धोखा नहीं देता। क्योंकि वह सत्य एवं विशुद्धि का मकुट है। डारजी के शब्दों में आत्मविश्वास कूट कर भरा है। गहरे जंगल में घासफूस के छत वाली कुटियों में रहते आदिवासियों को जंगल पर भरोसा है। कभी भी क्रुद्ध होने, आक्रमण करते समंदर को, तटवासी अपनी माता के समान मानते है। विश्व के छत पर साहस कर रहते तिबतवालों के ईश्वर पहाड ही नज़र आते है। मनुष्यों से ऊपर वे लोग पहाडों पर विश्वास करते हैं, प्यार करते हैं। (क्रमशः)

आत्मकथा

देवयानम्

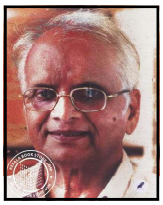

अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना

मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा

उन्नीसवीं देवपद - राजमहल की उदारता

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरं आकर यहाँ के पुराने राजपरिवार के साथ अपना घनिष्ठ रिश्ता हो गया था। इसपर मुझे बड़ा गर्व महसूस हुआ था क्योंकि इस राजकुल के साथ हमारे पूर्वजों का अर्थात् अपने घर के तथा मायके के - अच्छा खासा संबंध था जिसे मैं और दृढ़ कर सका था। यह तो भगवान श्री पद्मनाभ की मुझपर बड़ी कृपा हुई थी - ऐसा मेरा विश्वास है। हर साल भगवान के मंदिर में दो प्रमुख उत्सव मनाए जाते हैं - एक तो 'अल्पशि' उत्सव था और दूसरा था 'पैंकुनी' उत्सव। 2017 तक इन उत्सवों से संबंधित सभी अनुष्ठानों में मैं भाग लेता था। अश्विन के महीने में वाणीदेवी सरस्वति की पूजा बड़े गंभीर एवं धूमधाम से होती है जिसे 'नवरात्रि पूजा' नाम से जाना जाता है। मंदिर के भीतर विशेष रूप से अलंकृत 'नवरात्रि मंडप' के रंगमंच पर बड़े-बड़े विद्वान संगीतज्ञों का गायन (recital) होता है। मैं भी संगीत का रसास्वादन करने के लिए अवश्य वहाँ पहुँचता था। यही नहीं; नवरात्रि मंडप में बैठ कर पूजा के इन दिनों में मैं 'देवी माहात्म्यं', 'ललिता सहस्रनामं', 'ललिता त्रिशति' आदि ग्रंथों का पारायण करता था। पूजा के अंतिम दिन याने 'विजयदशमि' के दिन अनगिनत बच्चों का 'विद्यारंभ' भी मैंने किया था। (विजयदशमि के दिन देवी-पूजा के अवसर पर दूसरे नैवेद्यों के साथ कुछ चावल भी देवी को समर्पित किया जाता है। उसके बाद कोई आचार्य बच्चों को (तीन साल से कम उम्र के) अपनी गोद में बिठा कर उसकी उँगली से थाली में रखे इस 'प्रसाद' (चावल) में 'हरि श्री....' लिखवाते हैं और उसकी जीभ पर वे सोने की मुँदरी से अक्षर लिख देते है। 'विद्यारंभ' नामक इस अनुष्ठान के बाद ही बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का श्रीगणेश होता है। यह केरल की धार्मिक प्रथा है।)

महाराजा श्री चित्तिरा तिरुनाळ् के शासन काल में तिरुवितांकूर राजवंश के साथ मेरा परिचय शुरू हुआ था 'तिरुवितांकूर राजवंश' शीर्षक ऐतिहासिक ग्रंथ जो मैंने लिखा है; उसका प्रकाशन महाराजा श्री श्रीमूलं तिरुनाळ् ने किया था। उसी प्रकार "श्री स्वाति तिरुनाळ्: जीवनी और कृतियाँ' नामक मेरे ग्रंथ का प्रकाशन श्रीमती महारानी कार्तिका तिरुनाळ् ने किया था। यही नहीं; मेरे तीसरे ग्रंथ 'बालरामभरतं सरस्वति का प्रकाशन अत्यंत आदरणीय महाराजा श्री उत्राटं तिरुनाळ् मार्तांड वर्मा ने किया था। उन्होंने श्री स्वाति तिरुनाळ् संगीत सभा के किसी समारोह में मुझे 'साहित्यरत्नं' बिरुद से अलंकृत किया था। उनकी इतनी बडी कृपा एवं उदारता के लिए मैं सदा-सर्वदा उनका आभारी हूँ। अपना बहुत बडा सौभाग्य है कि उन्होंने मुझे बाद में और भी अमूल्य उपहारों से पुरस्कृत किया था। कभी कभी वे मुझे अपने राजमहल बुलाया करते थे और हम दोनों किसी दार्शनिक तत्त्व पर चर्चा करते थे। उन दिनों 'श्रीमद् भगवद् गीता' पर जो चर्चा हमने की थी वह आज भी मेरे स्मृति-पद पर सजग है। हमारे पिता जी के जन्म-शती के समारोह में श्रीमती अश्वति तिरुनाळ् लक्ष्मीबाई ने भाग लेकर मुझे राजकीय पुरस्कार से सम्मानित किया था।

तिरुवितांकूर राजवंश के महान व्यक्तित्वों का मेरे प्रति ममता, प्रेम, आदर और उदारता की कोई सीमा नहीं है। महाराजा श्री उत्राटं तिरुनाळ् ने 'विष्णु सहस्रनामं' की टीका लिखी थी। उसके प्रकाशन के अवसर पर सभा तो संबंधित कर स्वागत-भाषण देने का दायित्व मुझपर सौंपा गया था। श्रीमती अश्वति तिरुनाळ् गौरी लक्ष्मीबाई की कृतियों की प्रतियाँ मुझे समर्पित की गई थीं। यही नहीं, 'दी मइटी एक्स्पीरियन्स' (The Mighty Experience) नामक उनके ग्रंथ की भूमिका लिख कर मैं स्वयं आदृत हो गया था। उसी प्रकार अपनी जीवनी इस 'देवयानं' और 'गीतगोविंद की टीका' दोनों का प्राक्कथन लिख कर उन्होंने मुझे धन्य कर दिया है। 'श्री पद्मनाभ स्वामी टेंपिल' नामक अपने ग्रंथ में उन्होंने मेरे बारे में कुछ प्रशंसात्मक शब्द लिखे हैं। आट्टुकाल भगवति मंदिर के मासिक

'अंबाप्रसादं' का औपचारिक प्रकाशन भी उन्होंने किया था जिसका मैं मुख्य संपादक था। श्री पद्मनाभ स्वामि मंदिर के बारे में श्रीमती अश्वती तिरुनाळ् लक्ष्मीबाई की दूसरी रचना है 'सरंडर' (Surrender)। उस बृहद् ग्रंथ की रचना के लिए आवश्यक बहुत सी सामग्रियाँ मैंने उन्हें दी थीं और मेरा कोई लेख भी उसमें संगृहीत है। इस प्रकार तिरुवितांकूर राजवंश के प्रतिभा-संपन्न महान व्यक्तित्वों के साथ अपना हार्दिक रिश्ता एवं लगाव हमेशा से रहता था और आज भी है। राजमहल के साथ अपना यह संबंध महाराजा श्री चित्तिरा तिरुनाल के साथ शुरू हुआ था। वे मुझे 'ओणम' के विशेष त्योहार पर 'ओणक्कोटि' (ओणम के समय दिए जानेवाला नया कपडा) और 'विषुकैनीट्टं' (विषु के दिन दिए जानेवाले पैसे) के साथ अपना आशीर्वाद देते थे। राज-परिवार के हर व्यक्ति ने मुझसे जो प्रेम-वात्सल्य प्रकट किया है उसके लिए मैं अत्यंत विनम्र हो आभार प्रकट करता हूँ। उनके साथ मेरा अपनों जैसा हार्दिक संबंध है।

आधुनिक काल में केरल के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञों में श्री अश्वती तिरुनाळ् रामवर्मा का नाम प्रातःस्मरणीय है। श्रीमती पूयं तिरुनाळ् गौरी पार्वती बाई का यह सुपुत्र अपने पूर्वज महाराजा श्री स्वाती तिरुनाळ् की उदात्त संगीत परंपरा का उत्तम उत्तराधिकारी हैं। श्री स्वाति तिरुनाळ् के नाम पर हर साल संगीतोत्सव और सरस्वती पूजा के मौके पर नवरात्री मंडप में महान संगीतज्ञों का गायन (recital) अतीव भक्ति एवं आत्म समर्पण से आडंबरपूर्ण ढंग से वे मनाते हैं कि उसकी कोई तुलना शायद और कहीं नहीं है।

तिरुवितांकूर राजवंश के अंतिम महाराजा श्री चित्तिरा तिरुनाळ् रामवर्मा बिलकुल छोटे थे। तभी उन्हें राज-सिंहासन पर बिठाया गया था। इसलिए उनकी माँ महारानी श्रीमती सेतु लक्ष्मी बाई को राजा के प्रतिनिधि के रूप में प्रांत के शासन का बागडोर अपने हाथों लेना पड़ा। उन्होंने छः वर्ष तक अपने प्रजा-पालन का दायित्व प्रशंसनीय ढंग से निभाया था। डॉ लक्ष्मी रघुनंदन ने राजमहल के बारे में पुस्तक रची थी - नाम था उस पुस्तक का - All the turn of the tide - The life and tunes of Maharani Sethu Lakshmi Bai, the last Queen of Travancore - बंगलुरू के महारानी सेतु लक्ष्मी बाई मेम्मोरियल चारिट्टबिल ट्रस्ट ने इस पुस्तक का प्रकाशन किया था। (क्रमशः)

लघुकथा

साप्ताहिक अवकाश

राजेंद्र परदेशी

एक ओर गंतव्य तक पहुँचने की जल्दी दूसरी ओर गरमी के कारण पैदल चलना मुश्किल हो रहा था, पर मंजिल तक जाना ही था, पास ही सड़क के किनारे एक रिक्शावाला अपने रिक्शे का पर्दा उठाकर उसी पर आराम कर रहा था, आशा की किरण जगी, पास जाकर उससे पूछा

- रिक्शा खाली है,
- नहीं साहब
- अपना स्वार्थ था, इसीलिए सलाह दी, लेटे ही तो हो, चल के घंटा भर तक पहुँचा दो
- नहीं साहब, गरमी बहुत है
- कुछ ज्यादा पैसा ले लेना
- नहीं साहब, हम नहीं जायेंगे.... आप कोई और सवारी ढूँढ लीजिए,

रिक्शे वाले की नकारात्मक उत्तर से मन खीझ गया, मुख से निकला - तुम लोगों के साथ यही है, दो पैसे हाथ में आया नहीं कि दिमाग खराब हो जाता है और मेहनत करना बंद कर देते हो

- इस कथन ने उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाया, उठकर बैठ गया, बोला - साहब नाराज़ न हो - तो एक बात पूछूँ।
- बोलो
- आप कहीं काम करते है,
- हैं।
- तो क्या सप्ताह में सातों दिन काम करने जाते हैं।
- नहीं, रविवार को छुट्टी रहती है, उस दिन आराम करता हूँ।
- हमें तो सप्ताह में सातों दिन रिक्शा चलाना पड़ता है
- अभी तो चला नहीं रहे हो
- है, साहब, लेकिन सुबह से चला रहा हूँ, हाथ में कुछ मज़दूरी आ गई तो अब आराम कर रहा हूँ, हमारी तो किसी दिन छुट्टी नहीं रहती, इसी तरह प्रत्येक दिन बीच-बीच में कुछ देर आराम कर लेता हूँ, इस तरह साप्ताहिक छुट्टी की कमी पूरी कर लेता हूँ
- अब मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था।

136- मयूर रेज़ीडेंसी, फरीदी नगर
लखनऊ - 226015

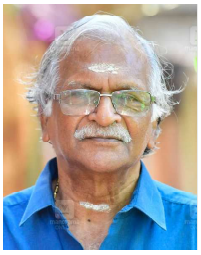

आत्मकथा

ज़िंदगी : एक लोलक

मूल : श्रीकुमारन तंपी

अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

फिर भी माँ बेटे को सूचनाएँ देती रहीं। डॉक्टर पद्मनाभन तंपी तो टूटन से ऊपर उठने के श्रम में हमेशा व्यस्त थे। अंबा समुद्र में पहुँचाने के श्रम में मग्न उनको हरिप्पाट्टु तक आने की फुर्सत भी नहीं मिली। प्यारे भाई के प्रति निरंतर लिखी शिकायतें कहने के लिए छोटी बहन भवानी को भी अवसर नहीं मिला। अपनी प्रथम संतान को देखने को बड़े चाचा और भतीजी के हरिप्पाट्टु न आने से पिताजी दुखी थे। भतीजी हमेशा निर्विकार भाव में थी।

सुस्त भतीजी राजम्मा को भी चाचाजी की पहली संतान को देखने में तत्परता नहीं थी। सिर्फ अपने को मिलनेवाली चाचाजी की जायदाद हडपने के लिए आई स्त्री के रूप में ही हमेशा वे मेरी माँ को देखती थी। इस विषम स्थिति में पिताजी की जेष्ठ बहन के बेटे ने ही पिताजी की सहायता की थी। बेटे की पत्नी एवं पुत्तूर खानदान के पुरुषाधिपत्य के खिलाफ पहली बार आवाज़ उठानेवाली स्त्री के रूप में परिवार में कुप्रसिद्धि प्राप्त चेल्लम्मा पिल्लैजी ने ही पिताजी की सहायता की थी। रोगी बने पिताजी के जेष्ट भाई अच्युतन पिल्लै भी उनके साथ आए। शादी के बाद माँ से मिलने को पति के खानदान के हरिप्पाट्टु आनेवाली एकमात्र स्त्री अट्टाश्शेरी पेरम्मा कहकर मेरे पुकारनेवाली वह सुमनवाली मात्र थी। एक सहेली के साथ किसी भी स्थान की यात्रा करने के लिए भयरहित धीरा थी, यौवन न छूटनेवाली पेरम्मा। धोती और उसका अंगवस्त्र और हाथ में एक छतरी के साथ चाहे कितनी ही दूर चलने को वे तैयार थीं। अच्छी लंबी, सुडौल शरीर से युक्त रंग की थी वे। माँ से मिलने आते समय कुछ न कुछ इनाम ले आती थीं। कभी तो घर में पहनने की नई धोती, या नहीं तो एक टोकरी भर पोहा या फिर नारियल पत्तों से बनी टोकरी में वेट्टुचेंबु, काच्चिल (आलुकी), नन किष़ंग (रतालू) (केरल के विभिन्न ज़मीन कंद) या नहीं तो कसाता। मज़दूरों के साथ खेत में उतरकर काम करने में न हिचकने वाली थी वह स्त्री। ऐसा माँ ने कहा था। उनके पति वासुपिल्लै तो अनेकएकड अहाते के ज़मींदार थे, यह भी याद रखें।

पुन्नूर परिवार के रिश्तेदारों में से माँ से निकट का संबंध समवयस्क भार्गवी तंकच्ची ने दिखाया। रिश्ते के हिसाब से छोटी माँ और बोटी होने पर भी बचपन से एक घर में एक साथ जीनेवाले दोनों जिगरी दोस्त थे। घरवालों से तय वैवाहिक जीवन को सुहाग रात में ही तोड़नेवाली भार्गवी तंकच्ची को रिश्तेदारों ने पूर्णतः बाहर कर दिया पर माँ ने उससे कमी भी दूरी नहीं रखी।

पोते के जन्म के साथ कुंञ्जुक्कुट्टी तंकच्ची के जीवन में फिर से प्रकाश फैला। यौवन की देहली पर खड़ी होने पर भी विदा होने वाले अपने बेटे को उसने इस छोटे बच्चे के नन्हे मुख में देखा। इस तरह करिंबालेत्तु में फिर से प्रतीक्षा के प्रकाश आए। तभी विषहारी कुमारन तंपी अपनी छोटी माँ रूपी कुंजुकुट्टी तंकच्ची से एक सुखद

सवाल उठाया था। छोटी माँ ने क्यों अल्प उम्र में ही मरे बेटे का नाम भवानी के बच्चे का नाम रखा? यह तो एक शुभ लक्षण नहीं है। कम से कम मुझसे पूछ सकते तो थे... न? यह सुनकर दादी माँ ही नहीं, मेरी माँ को भी भय हुआ। पोते को एक घर में बुलाने का नाम देकर ही कुंञ्जुक्कुट्टी तंकच्ची ने उस समस्या का हल निकाला।

वासुदेवन तंपी नामकरण करनेवाले बच्चे को घर में चेल्लप्पन रूपी प्यारा नाम दिया गया। आज सोचने पर कम तहजीब का लगने पर भी उस शब्द का अर्थ लाडला ही है।

देरी से ही सही अंबासमुद्र से कुंञ्जुक्कुट्टी तंकच्ची को बेटा अंबू का खत आया। अपने को एक छोटे दामाद का जन्म होने में बहुत आनंद का अनुभव करता है और अपने को और पत्नी शंकरी एवं चार संतानों को बच्चा और माँ को देखने की अत्यंत चाह है, लेकिन फिलहाल अंबासमुद्रं से दूर नहीं रह पाने की स्थिति है, अतः भवानी एवं पति को बच्चे के साथ अंबासमुद्रं की ओर आना है, यही उन्होंने खत में लिखा था। बिना देरी के माँ-बाप छोटे बच्चे के साथ अंबासमुद्रं के लिए रवाना हुए। सिर्फ हरिप्पाट्टु गाँव के कुछ प्रदेश एवं पति के गाँव रूपी तोनय्क्काट्टु मात्र देखनेवाली भवानिक्कुट्टी तंकच्ची की प्रथम दीर्घ यात्रा थी यह। अपनी बेटी मात्र बनने की उम्रवाली ननद से शंकरियम्मा को भी बहुत स्नेह और वात्सल्य था।

बहन और साला को और बच्चे को पद्मनाभन तंपी ने अत्यंत आनंद के साथ स्वागत किया। हठ करके कहा कि कम से कम दो हफ्ते तक रहकर ही जायें। अंबासमुद्रं के पास ही प्रसिद्ध पापनाशं नामक मंदिर है। मंदिर के सामने से बहनेवाली पुण्य नदी में स्नान करने से मोक्ष मिलेगा, यही भक्तों का विश्वास है। केरल के मंदिरों में अष्टपदी गानेवाले सोपान गायकों के समान तमिल नाडु के बड़े पुराने मंदिरों में 'तेवारा गान' गानेवाले गायक है। बहन, पति और छोटे दामाद को पद्मनाभन तंपी मंदिर लाए। बच्चे को चाचा जी ने ही नदी में स्नान कराके उसके लिए प्रार्थना की। पापनाशं शिव मंदिर के सामने से बहनेवाली नदी औषधीय गुणों से युक्त है, ऐसा विश्वास किया जाता है। विश्वास है कि अगस्त्य महर्षी को शिव और पार्वती के द्वारा दर्शन देनेवाला स्थान है यह। डॉक्टर पद्मनाभन तंपी रोज़ इस नदीतट में नहाकर शिव के दर्शन करके लौटेंगे। इस नदी को चाचाजी ने एक नाम दिया 'पापनाशिनी' पिताजी का पसंदीदा वेश म्यूजी सिल्क जूबा और धोती था। सबको अपने अपने पसंदीदा वेश खरीद दिया। बच्चे को सोने की करधनी, सोने की माला, अनेक छोटे वस्त्र खरीदे। मीटर गेज ट्रेन में बहन और परिवार की बिदाई देते समय बड़े प्रतापशाली फूट फूट कर रोए। (क्रमशः)

हाइकु

डॉ.रंजीत रविशैलम

चितारोहण
आज भी चलता है
चिता है मन।

❋

नाव चलाना
नहीं आसान काम
गला नावना।

❋

निस्तब्ध बातें
कुछ तो बोलती हैं
आजकल भी।

प्रश्नोत्तरी

डॉ. रंजीत रविशैलम

1. 'जैसा काम वैसा परिणाम' किसका नाटक है?
2. 'वीर सिंह का वृत्तांत' किसकी रचना है?
3. "छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है" - छायावाद के संबंध मे उक्त पंक्ति किसकी है?
4. हिंदी का पहला दुखांत नाटक कौन-सा माना जाता है?
5. कविता को भावयोग की संज्ञा किसने दी?
6. 'बिहारी सतसई की भूमिका' किसकी आलोचनात्मक कृति है?
7. 'गुलकी बन्नो' किसकी कहानी है?
8. "पुरुष कहानी हौ कहौ जसु पत्थावै पुन्नु" किसकी पंक्ति है?
9. 'अंतपुर का आरंभ' कहानी के रचनाकार कौन है?
10. 'क्या लिखूं' निबंध के निबंधकार कौन है?
11. कल्पना के दो प्रकार 'प्राथमिक कल्पना' और 'विशिष्ट कल्पना' किसने माने?
12. 'परंपरा का सिद्धांत' तथा कला और निर्वेयक्तिकता का सिद्धांत किस आलोचक ने दिया?
13. 'छायावाद का पतन' किसकी रचना है?
14. विजयानंद दुबे किस लेखक का उपनाम है?
15. "अपने ही सुख-दुख के रंग में रँगकर प्रकृति को देखा तो क्या देखा? मनुष्य ही सबकुछ नहीं है। प्रकृति का अपना रूप भी है।" - किसकी पंक्तियाँ हैं?
16. "होगा फिर से दुर्घर्ष समर/ जड़ से चेतना का निशिवासर" - किस काव्य-रचना की पंक्तियाँ हैं?
17. 'लाल चूनर' किसकी रचना है?
18. हरिऔध जी का प्रथम उपन्यास कौन-सा है?
19. 'कालिदास की निरंकुशता' किसकी गद्य रचना है?
20. साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" किसका कथन है?

उत्तर

1. बालकृष्ण भट्ट
2. शिवप्रसाद सितारे हिंद
3. जयशंकर प्रसाद
4. रणधीर प्रेममोहिनी
5. रामचंद्र शुक्ल
6. पद्मसिंह शर्मा
7. धर्मवीर भारती
8. विद्यापति
9. रायकृष्णदास
10. पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी
11. कॉलरिज
12. इलियट
13. डॉ देवराज उपाध्याय
14. विश्वंभरनाथ कौशिक
15. रामकुमार वर्मा
16. तुलसीदास
17. रामेश्वर शुक्ल
18. प्रेमकांता
19. महावीरप्रसाद द्विवेदी
20. बालकृष्ण भट्ट

सेवा निवृत्त कर्मचारी श्रीमती सुजाता जे (डी.टी.पी. ऑपरेटर) को स्मृति चिह्न भेंट करते हैं, सभा के अध्यक्ष श्री गोपकुमार एस, मंत्री अधिवक्ता डॉ.मधु बी एवं साथी गण।

विभिन्न दृश्य

RNI No. 7942/1966
Date of Publication :15-05-2026
Date of posting : 20th of Every month

KERAL JYOTI

MAY 2026

Vol. No. 63, Issue No.02
Regn. No. KL/TV(S) 381/2025-2027
Price Rs. 40/-

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha approved for School Libraries by the Education Dept., Govt. of Kerala as per notification No. B-3 / 4036/83 SIE dated 20-9-1985
Approved by University of Kerala as per order No. Ac. A II / 1 / 31965 / Std. Journals/2013 / dtd : 27-6-2013

सभा के पूर्वमंत्री स्वर्गीय एम.के.वेलायुधन नायर जी की पुण्य-तिथि का अनुस्मरण सम्मेलन का उद्घाटन प्रमुख राजनेता श्री.सी.पी. जोण कर रहे हैं।

अनुस्मरण सम्मेलन के विविध दृश्य

केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 के लिए मंत्री अ.व.डॉ.मधु बी द्वारा प्रकाशित, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 में मुद्रित डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन व डॉ.रंजीत रविशैलम द्वारा संपादित

Published by the Secretary, Adv. Dr. B. Madhu for Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014
Printed at Rashtravani Mudranalaya, Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014 & edited by Dr.M.S.Vinayachandran and Dr.Renjith Ravisailam